ifo=rk

1- ifo=rk dh ifjHkk"kk rFkk mldk egRo
2- ifo=rk esa vk[kksa dk egRo vkSj uke&:i dh xqgpkjh
3- dfy;qxh ifrr nqfu;k dh ifjfLFkfr
4- ifo=rk& dqekfj;ksa ds lanHkZ esa
5- ifo=rk&dqekjksa ds lanHkZ esa
6- ifo=rk& ekrkvksa ds lanHkZ esa
7- ifo=rk&x`gfLFk;ksa ds lanHkZ Eksa
8- ifo=rk& v/kj dqekjksa (ik.Moksa) ds lanHkZ esa
9- ifo=rk& lU;kfl;ksa ds lUnHkZ esa
10- ifo=rk& oS';kvksa ds lanHkZ esa
11- ifo=rk& cPPkksa ds lanHkZ esa
12- ifo=rk& vkfn ls var
13- ifo=rk vkSj cPPks iSnk djuk
14- ifo=rk& dSls \
15- ifo=rk ls lEcf/kr QqVdj lokbZUVl

ifo=rk dh ifjHkk"kk rFkk mldk egRo%&

पवित्रता संगमयुगी ब्राहमणों के महान जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राहमण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वास चलना आवश्यक है। श्वास नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राहमण जीवन का श्वास है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात फाउन्डेशन पवित्रता है। आत्मा अर्थात बच्चे और बाप से मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। सर्ब संगमयुगी प्राप्तियों का आधार पवित्रता है। पवित्रता पूज्य पद पाने का आधार है। .....जहां सर्बशक्तिवान बाप है वहां अपवित्रता स्वप्न में भी नही आ सकती। ....ब्राहमणों की लाइफ ही पवित्रता है। ब्राहमण जीवन का जीयदान ही पवित्रता है। आदि–अनादि स्वरुप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं आदि–अनादि पवित्र आत्मा हूॅ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी आना। तो स्मृति स्वरुप, समर्थ स्वरुप आत्माएं तो निजी पवित्र संस्कार वाली, निजी संस्कार पवित्र हैं।....ब्राहमण जीवन अर्थात् सहज योगी और सदा के लिए पावन। पवित्रता ब्राहमण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राहमणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राहमणों के आंखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राहमण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राहमण जीवन की मर्यादा है। –अ.वा. 6.1.82

संगमयुगी ब्राहमण जीवन की विशेषता है– पवित्रता की निशनी यह लाइट का ताज जो हर ब्राहमण आत्मा को बाप द्वारा प्राप्त होता है। पवित्रता की लाइट का ताज उस रत्न.जड़ित ताज से अति श्रेष्ठ है। महान आत्मा, परमात्म.भाग्यवान आत्मा, उंचे ते उंची आत्मा की यह ताज निशानी है।....... ...पवित्रता की प्राप्ति आप ब्राहमण आत्माओं को उड़ती कला की तरफ ले जाने का आधार है।...जैसे

कर्मों की गति गहन गाई हुई है, तो पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख शान्ति की जननी कहा जाता है। किसी भी प्रकार की अपवित्रता दुःख वा अशन्ति का अनुभव कराती है।.....चाहे मुख्य विकारों के कारण हो वा विकारों के सूक्ष्म रुप के कारण हो। ....पवित्र जीवन अर्थात बापदादा द्वारा प्राप्त हुई वरदानी जीवन है। ब्राहमणों के संकल्प में वा मुख में यह शब्द कभी नहीं होने चाहिए कि इस बात के कारण वा इस व्यक्ति के व्यवहार के कारण मुझे दुःख होता है। कभी साधारण रीति में ऐसे बोल, बोल भी देते या अनुभव भी करते हैं। यह पवित्र ब्राहमण जीवन के बोल नही हैं। ब्राहमण जीवन अर्थात् हर सेकण्ड सुखमय जीवन। चाहे दुःख का नजारा भी हो लेकिन जहां पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दुःख के नजारे में दुख का अनुभव नहीं करेंगे लेकिन दुःखहर्ता सुखकर्ता बापसमान दुख के वायुमण्डल में दुःखमय व्यक्तियों को सुखशान्ति की अंचली देंगे, मास्टर सुखकर्ता बन दुःख को रूहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन करेंगे। इसी को कहा जाता है दुखहर्ता सुखकर्ता।...........समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे अकारणे तंग होंगे, बीमारियां अति में जाएंगी तो उस समय पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दुःख अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि. वृत्ति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति करानेवाली है। –अ.वा.14.11.87

ब्राहमण बनना अर्थात पूज्य बनना क्योंकि ब्राहमण सो देवता होते हैं और देवतायें अर्थात् पूजनीय। सभी देवतायें पूजनीय तो हैं,फिर भी नम्बरवार जरुर हैं। किन देवताओं की पूजा विधिपूर्वक और नियमित रुप से होती है और किन्ही की पूजा विधिपूर्वक नियमित रुप से नहीं होती। किन्हों के हर कर्म की पूजा होती है और किन्हों के हर कर्म की पूजा नहीं होती है। कोई का विधिपूर्वक हर रोज श्रृंगार होता है और कोई का श्रृंगार रोज नहीं होता है, उपर उपर से थोड़ा बहुत सजा लेते है लेकिन विधिपूर्वक नहीं। कोई के आगे सारा समय कीर्तन होता है और कोई के आगे कभी कभी कीर्तन होता है। इन सभी का कारण क्या है?....पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के उपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते है, उतना ही सर्व प्रकार के पूजनीय बनते हैं और जो निरन्तर विधिपूर्वक आदि, अनादि विशेष गुण के रुप से पवित्रता को सहज अपनाते हैं, वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं। सर्व प्रकार की पवित्रता क्या है? जो आत्मायें सहज, स्वतः, हर संकल्प में, बोल में, कर्म में सर्ब अर्थात ज्ञानी और अज्ञानी आत्माएं, सर्ब के सम्पर्क में सदा पवित्र दृष्टि, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क.सम्बन्ध निभाते हैं..इसको ही सर्व प्रकार की पवित्रता कहते हैं। स्वप्न में भी स्वयं के प्रति या अन्य कोई आत्मा के प्रति सर्व प्रकार की पवित्रता में से कोई कमी न हो। मानो स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है वा किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, आवेशता के वश कर्म होता है या बोल निकलता है, क्रोध के अंश के रुप में भी व्यवहार होता है तो इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जाएगा। सोचो जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा। इसलिए खण्डित मूर्ति कभी पूजनीय नहीं होती। खण्डित मूर्तियां मन्दिरों में नहीं रहती, आजकल के म्यूजियम में रहती हैं। वहां भक्त नहीं आते। सिर्फ यही गायन होता है कि बहुत पुरानी मूर्तियां हैं,बस। उन्होने स्थूल अंग के खण्डित को खण्डित कह दिया है लेकिन वास्तव में किसी भी प्रकार की पवित्रता में खण्डन होता है तो वह पूज्य पद से खण्डित हो जाते हैं। ऐसे चारों प्रकार की पवित्रता विधिपूर्वक है तो पूजा भी विधिपूर्वक होती है।.......पूज्य, पवित्र आत्माओं की निशानी यही है– उन्हों की चारों प्रकार की पवित्रता स्वाभाविक, सहज और सदा होगी। उनको सोचना नहीं पड़ेगा लेकिन पवित्रता की धारणा स्वतः ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है। यथार्थ अर्थात् युक्तियुक्त, दूसरा यथार्थ अर्थात् हर संकल्प में अर्थ होगा, बिना अर्थ नहीं होगा। ऐसे नहीं कि ऐसे ही में बोल दिया, निकल गया, कर लिया, हो गया। ऐसी पवित्र आत्मा सदा हर कर्म में अर्थात् दिनचर्या के हर कर्म में यथार्थ युक्तियुक्त रहती है। इसलिए पूजा भी उनके हर कर्म की होती है अर्थात् पूरे दिनचर्या की होती है। उठने से लेकर सोने तक भिन्न भिन्न कर्म के दर्शन होते हैं।........

पवित्रता की धारणा बहुत महीन बात है। पवित्रता के आधार पर ही कर्म की विधि और गति का आधार है। पवित्रता सिर्फ मोटी बात नहीं है। ब्रहमचारी रहे या निर्मोही हो गये– सिर्फ हसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राहमण जीवन का श्रृंगार है। तो हर समय पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से ओरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पावों में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो। कोई भी चेहरे तरफ देखे तो फीचर्स से उन्हें पवित्रता का अनुभव हो। जैसे और प्रकार के फीचर्स वर्णन करते हैं, वैसे यह वर्णन करें कि इनके फीचर्स से पवित्रता दिखाई देती है, नयनों में पवित्रता की झलक है, मुख पर पवित्रता की मुस्कुराइट है। –अ. वा. 17.10.87

वास्तव में याद वा सेवा की सफलता का आधार है– पवित्रता। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना– यह पवित्रता नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रुप है– ब्रह्मचारी के साथ साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलनेवाले, जिसको फालो फादर कहा जाता है क्योंकि फालो ब्रह्मा बाप को करना है। शिव बाप के समान स्थिति में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करना है। हर कदम में ब्रह्मचारी। ब्रह्मचर्य व्रत सदा संकल्प और स्वप्न तक हो। पवित्रता का अर्थ है– सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पनी में सदा रहना। कम्पैनियन बना दिया, ''मेरा बाबा''– यह भी आवश्यक है लेकिन हर समय कम्पनी भी बाप की रहे। इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्रता।.......परिवार का प्यार, परिवार का संगठन बहुत अच्छा है लेकिन परिवार का बीज भूल न जाए। बाप को भूल परिवार को ही कम्पनी बना देते हैं। बीच बीच में बाप को छोड़ा तो खाली जगह हो गई। वहां माया आ जायेगी। इसलिए स्नेह में रहते, स्नेह देते–लेते समूह को नहीं भूलें। इसको कहते है पवित्रता।.........कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढ़ने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच बीच में कोई को कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है और कम्पनी भी आवश्यक है– यह भी संकल्प आता है। सन्यासी तो नहीं बनना है लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी और बाप भूल जायेगा। तो समय पर धोखा मिलना सम्भव है क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकारी बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी याद आयेगा। अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नम्बरवन वह हो गया और दूसरा नम्बर बाप हो गया। जो बाप को दूसरे नम्बर में रखेंगे तो उसको पद क्या मिलेगा– नम्बरवन या टू? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना वह अलग चीज है, लेकिन सहारा बनाना अलग चीज है। वह बहुत गुहय बात हैं। इसको यथार्थ रीति से जानना पड़े। कोई कोई संगठन में स्नेही बनने के बजाय न्यारे भी बन जाते है। डरते हैं– न मालूम फंस जाएं, इससे तो दूर रहना ठीक है। लेकिन नहीं–21जन्म भी प्रवृत्ति में, परिवार में रहना है ना। तो अगर डर के कारण किनारा कर लेते, न्यारे बन जाते तो वह कर्म सन्यासी के संस्कार हो जाते हैं। कर्मयोगी बनना है, कर्म–सन्यासी नहीं। संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ व गुण व कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते है पवित्रता।.......जीवन में दो ही चीजें आवश्यक हैं। एक– कम्पैनियन, दूसरी– कम्पनी। इसलिए त्रिकालदर्शी बाप सभी की आवश्यकताओं को जान कम्पैनियन भी बढ़िया, कम्पनी भी बढ़िया देते हैं।......तो पवित्रता निजी संस्कार के रुप में अनुभव करना, इसको कहते हैं श्रेष्ठ लकीर अथवा श्रेष्ठ रेखा वाले। –अ. वा. 20.2.87

होली हंस अर्थात् स्वच्छता और विशेषता वाली आत्माएं। स्वच्छता अर्थात मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध– सर्व में पवित्रता। पवित्रता की निशानी सफेद रंग दिखाते है। आप होली हंस भी सफेद वस्त्रधारी, साफ दिल अर्थात् स्वच्छता स्वरूप हो। तन, मन और दिल से सदा बेदाग अर्थात् स्वच्छ हो। अगर कोई तन से अर्थात् बाहर से कितना भी स्वच्छ हो, साफ हो लेकिन मन से साफ न हो, स्वच्छ न हो तो कहते हैं कि पहले मन को साफ रखो। साफ मन व साफ दिल पर साहेब राजी होता है। साथ साथ साफ दिलवाले की सर्व मुराद अर्थात् कामनाएं पूरी होती हैं। हंस की विशेषता स्वच्छता अर्थात्

साफ है, इसलिए आप ब्राह्मण आत्माओं को होली हंस कहा जाता है। ......सम्पूर्ण स्वच्छता वा पवित्रता यही इस संगमयुग में सबका लक्ष्य है। इसलिए ही आप ब्राह्मण सो देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र गाया जाता है। ....गायन आपका देवता रुप का है लेकिन बने कब? ब्राह्मण जीवन में व देवता जीवन में? बनने का समय अब– संगमयुग है।......तन की स्वच्छता अर्थात् सदा इस तन को आत्मा का मन्दिर समझ उस स्मृति से स्वच्छ रखना। जितनी मूर्ति श्रेष्ठ होती है उतना ही मन्दिर भी श्रेष्ठ होता है।..... ब्राह्मण आत्माएं सारे कल्प में नम्बरवन श्रेष्ट आत्माएं है। ब्राह्मणों के आगे देवताएं भी सोने तुल्य हैं और ब्राह्मण हीरे तुल्य हैं। तो आप सब हीरे की मूर्तियां हो। कितनी उंची हो गई। इतना अपना स्वमान जान इस शरीर रुपी मन्दिर को स्वच्छ रखो। सादा हो लेकिन स्वच्छ हो। इस विधि से तन की पवित्रता सदा रूहानी खुशबू का अनुभव करायेगी। –अ. वा. 6.1.90

जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेउ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादाएं हैं। जन्म की व जीवन की निशानी वह तो कायम रखनी होती है।.....आत्मा तो सभी कहते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मा सदा यही कहेंगे कि मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूं। पूज्य आत्मा हूं।....वह स्वयं को और सर्व को किस दृष्टि से देखेंगे? चाहे अलौकिक परिवार में, चाहे लौकिक परिवार कहो व लौकिक स्मृति में रहनेवाली आत्मायें कहो, सभी के प्रति परमपूज्य आत्माएं हैं व पूज्य बनाना है यही दृष्टि में रहे। पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमजोर है और यह महा, महा, महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात दैहिक दृष्टि जाती है कि– यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है उंची स्मृति और उंची दृष्टि की। अगर वह उंचाई नहीं तो अच्छाई कौनसी है। यह भी सुनहरी मृगमाया का रुप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है, लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार बार अटेन्शन में रखो। बाप द्वारा निमित्त बने हुए शिक्षक व सेवा के सहयोगी बनी हूई आत्मायें चाहे बहन हो या भाई हो, लेकिन सेवाधारी आत्माओं के सेवा के मुख्य लक्षण त्याग और तपस्या हैं, इसी लक्षण के आधार पर सदा त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो क्योंकि यह महापाप कभी प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करा नहीं सकता।.......इसी एक विकार से और विकार स्वतः पैदा हो ही जाते हैं। कामना पूरी न हुई तो कोध साथी पहले आएगा। इसलिए इस बाप को हलका नहीं समझो। इसमें अलबेले मत बनो। बाहर से शुभ सम्बन्ध है, सेवा का सम्बन्ध है इस रायल रुप के पाप को बढ़ाओ मत। चाहे कोई भी दोषी हो इस पाप के, लेकिन दूसरे को दोषी बनाए स्वयं को अलबेले मत बनाओ। मैं दोषी हूं जब तक यह सावधानी नहीं रखेंगे तब तक इस महापाप से मुक्त नहीं हो सकेंगे। .....और जब कोई भी इशारा मिलता है तो इशारे को इशारे से खत्म कर देना चाहिए। अगर जिद्द करते हो और सिद्ध करते हो, स्पष्टीकरण देने की कोशिश करते हो इससे समझो स्पष्टीकरण अपने पाप की करते हो।......इसलिए जब है ही विश्व परिवर्तन के कार्य में तो स्व परिवर्तन कर लेना यही समझदारी का काम है। –अ.वा. 9.5.83

हद की कामनाएं भी सूक्ष्म रुप से चैक करो– मुख्य काम विकार के अंश व वंश है। इसलिए कामनावश सामना नहीं कर सकते। बेहद के मनोकामना पूर्ण करनेवाले नहीं बन सकते। कामजीत अर्थात् हद की कामनाओंजीत। –अ.वा. 5.12.84 पृ.48

अगर प्यूरिटी की कमी है तो युनिटी में भी कमी है। –अ.वा. 31.10.75

धर्मसत्ता को धर्मसत्ता हीन बनाने का विशेष तरीका है– पवित्रता को सिद्ध करना और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता को सिद्ध करना। इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध किया तो ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहरायेगा। –अ.वा.21.2.85 पृ.186

द्वापर से लेकर किसी भी धर्मात्मा या महात्मा ने सर्व को होलीएस्ट नहीं बनाया है। स्वयं बनते हैं लेकिन अपने फालोअर्स को, साथियों को होलीएस्ट, पवित्र नहीं बनाते और यहां पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। ....कभी कभी बच्चे अनुभव करते हैं कि अगर चलते चलते मन्सा में भी अपवित्रता अर्थात् वेस्ट व निगेटिव परचिंतन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि जरा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता का अंश है वहां पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती। जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं होता। इसलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के उपर बार बार अटेन्शन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है, इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा।.....मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। —अ.वा. 1.3.99 पृ.62

प्योरिटी सिर्फ ब्रहमचर्य व्रत को नहीं कहा जाता— संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्योरिटी। मानों एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या या घृणा का संकल्प है तो प्योरिटी नहीं इम्प्युरिटी कहेंगे। प्योरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश—मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इम्प्युरिटी न हो। —अ. वा. 31.10.75

सफल तपस्वी की निशानी उनके सूरत और सीरत में प्योरिटी की पर्सनलिटी और प्योरिटी की रायल्टी सदा स्पष्ट अनुभव होगी। तपस्वा का अर्थ ही है मन. वचन. कर्म और सम्बन्ध. सम्पर्क में अपवित्रता का अंश भी विनाश होना। नाम निशान समाप्त होना। जब अपवित्रता समाप्त हो जाती है तो इस समाप्ति को ही सम्पन्न स्थिति कहा जाता है। सफल तपस्वी अर्थात् सदा स्वतः पवित्रता की पर्सनलिटी और रायल्टी, हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से अनुभव हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई भी विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारिरिक आकर्षण व शारिरिक टचिंग अपवित्रता मानते हो, ऐसे मन बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जायेगा। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रायल्टीवाले मन. बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते, क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी भी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं।.....तो उन्हों का है स्थूल, आप ब्राहमण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। —अ. वा. 4.12.91

प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं, ब्रह्मचर्य व्रत में तो आजकल के सरकम्स्टांस अनुसार कई अज्ञानी भी रहते हैं। ज्ञान से नहीं लेकिन हालातों को देखकर। कई भक्त भी रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन प्योरिटी को सारे दिन में चैक करो— पवित्रता की निशानी है स्वच्छता, सत्यता।.....
.तो अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। —अ.वा. 6.4.95.पृ.205

पर्सनैलिटी कभी छुप नहीं सकती, प्रत्यक्ष दिखाई जरुर देती है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा कि प्योरिटी की पर्सनैलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे। ये तपस्वा के अनुभव की निशानी अब आप द्वारा औरों को अनुभव हो। सूरत और सीरत दोनों द्वारा अनुभव करा सकते हो। अभी भी कई लोग अनुभव करते भी हैं। लेकिन इस अनुभव को स्वयं द्वारा औरों में फैलाओ। —अ. वा. 4.12.91

पवित्रता के कारण ही परमपूज्य और गायनयोग्य बनते हैं। पवित्रता की श्रेष्ठ धर्म अर्थात् धारणा है इस ईश्वरीय सेवा का बड़े से बड़ा पूज्य आत्मा बनाना है। क्योंकि किसी आत्मा को आत्मघात महापाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्मघात है। पवित्रता जीय.दान है। पवित्र बनाना अर्थात् पुण्य

आत्मा बनाना। गीता के ज्ञान का वह वर्तमान परमात्म ज्ञान का जो सार रुप में स्लोगन बताते हो, उसमें भी पवित्रता का महत्व बताते हो। ''पवित्र बनो योगी बनो''–यही स्लोगन महान आत्मा बनने का आधार है। भक्तिमार्ग में यादगार पवित्रता के आधार पर है। कोई भी भक्त आपके यादगार चित्र को पवित्रता के बिना टच नहीं कर सकते। जिस दिन विशेष देवी व देवताओं का दिवस मनाते हैं, उस दिन का महत्व भी पवित्रता रखते हैं। भक्ति का अर्थ ही है– अल्पकाल। ज्ञान का अर्थ है– सदाकाल। तो भक्त अल्पकाल के नियम पालन करते हैं। जैसे नवरात्रि मनाते हैं, जन्माष्टमी अथवा दीपमाला या कोई विशेष उत्सव मनाते हैं तो पवित्रता का नियम अल्पकाल के लिए जरुर पालन करते हैं। चाहे शरीर की पवित्रता व आत्मा के नियम, दोनों प्रकार की शुद्धि जरुर रखते हैं। आपकी यादगार विजय माला उनको भी सुमिरण करेंगे तो पवित्रता की विधिपूर्वक करेंगे। –अ. वा. 23.1.80

संकल्प में इतनी समर्थी है जो विश्व की आत्माओं तक शक्तिशाली संकल्प द्वारा सेवा कर सको– वृत्ति की शुद्धि अनुसार वायुमण्डल को शुद्ध कर सको। वृत्ति की शक्ति है। शुद्ध अर्थात् प्यूरिटी। प्यूरिटी का आधार है भाई–भाई की स्मृति की वृत्ति। –अ. वा. 4.1.79

डबल अहिंसक अर्थात् अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई–भाई की स्मृति सहज और स्वतः अर्थात् स्मृति स्वरुप में हो। ऐसे डबल अहिंसक आत्मघात का महापाप नहीं करते। आत्मघात अर्थात् अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिरना ही घात है।–अ. वा. 15.10.75

जितने भी ब्राह्मण हैं, हर एक ब्राह्मण चैतन्य सालिग्रामों का मन्दिर है, चैतन्य शक्ति की मन्दिर है.....अभी के पुरुषार्थ के समयप्रमाण व विश्व के सम्पन्न परिवर्तन के समय प्रमाण इस समय कोई भी कर्म इन्द्रिय द्वारा प्रकृति व विकारों के वशीभूत नहीं होना चाहिए जैसे मन्दिर में भूत प्रवेश नहीं होते हैं।......जहां अशुद्धि होती है वहां ही अशुद्ध विकार अथवा भूत प्रवेश होता है। चैतन्य सालिग्राम के मन्दिर में व चैतन्य शक्तिस्वरुप के मन्दिर में, असुर संहारनी के मन्दिर में आसुरी संकल्प व आसुरी संस्कार कभी प्रवेश नहीं कर सकते।....जब इसी अपनी पवित्र प्रवृत्ति बनाओ तब ही विश्व परिवर्तन होगा। –अ. वा. 24.10.75

कोई भी देहधारी में संकल्प से व कर्म से फंसना, इस विकारी देह रुपी सांप को टच करना अर्थात् अपनी की हुई अब तक की कमाई को खत्म करना है। चाहे कितना भी ज्ञान का अनुभव हो या याद द्वारा शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव किया हो या तन, मन, धन से सेवा की हो लेकिन सर्व प्राप्तियां इस देह रुपी सांप को टच करने से इस सांप के विष के कारण जैसे विष मनुष्य को खत्म कर देता है वैसे ही यह सांप भी अर्थात् देह में फंसने का विष सारी कमाई को खत्म कर देता है। पहले की हुई कमाई के रजिस्टर पर काला दाग पड़ जाता है जिसको मिटाना बहुत मुश्किल है। जैसे योग अग्नि पिछले पापों को भस्म कर देती है। इसको साधारण बात नहीं समझना। यह पांचवीं मंजिल से गिरने की बात है। कई बच्चे अब तक अलबेलेपन के संस्कारवश इस बात को कभी भूल व पाप कर्म नहीं समझते हैं। वर्णन भी ऐसा साधारण रुप में करते हें कि मेरे से चार पांच बार यह हो गया। आगे नहीं करूंगा। वर्णन करते समय भी पश्चाताप का रुप नहीं होता, जैसे साधारण समाचार सुना रहे हैं। अन्दर में लक्ष्य रखते हैं कि यह तो होता ही है, मंजिल तो बहुत उंची है, अभी यह कैसे होगा?..... लेकिन फिर भी आज ऐसे पाप–आत्मा ज्ञान की ग्लानी करानेवालों को बापदादा वार्निंग देते हैं कि आज से भी इस गलती को कड़ी भूल समझकर यदि मिटाया नहीं तो बहुत कड़ी सजा के अधिकारी बनेंगे। बार–बार अवज्ञा के बोझ से उँची स्थिति तक पहुंच नहीं सकेंगे। प्राप्ति करनेवालों की लाइन के बजाय पश्चाताप करनेवालों की लाइन में खड़े होंगे। प्राप्ति करनेवालों की जयजयकार होंगी और अवज्ञा करनेवालों के नैन और मुख हाय हाय का आवाज निकालेंगे और सर्व प्राप्ति करनेवाले ब्राहमण ऐसी आत्माओं को कुलकलंकित की लाइन में देखेंगे। अपने किये विकर्मों का कालापन चेहरे से स्पष्ट

दिखाई देगा। इसलिए अब से यह विकराल भूल अर्थात् बड़ी से बड़ी भूल समझ करके अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ। अपने को कड़ी सजा दो ताकि आगे की सजाओं से भी छूट जाएं।.....अगर अब भी छुपावेंगे व अपने को सच्चा सिद्ध करके चलाने की कोशिश करेंगे तो यह चलाना अर्थात् अन्त में और अब भी अपने मन में चिल्लाते रहेंगे– क्या करूं, खुशी नहीं होती, सफलता नहीं होती। सर्व प्राप्तियों की अनुभूति नहीं होती–ऐसे अब भी चिल्लावेंगे और अन्त में हाय मेरा भाग्य कह चिल्लावेंगे। तो अब तक का चलाना अर्थात् बार–बार चिल्लाना। अगर अभी बात को चलाते हो तो अपने जन्म–जन्मान्तर के श्रेष्ठ तकदीर को जलाते हो। इसलिए इस विशेष बात पर विशेष अटेन्शन रखो। संकल्प में भी इस विष भरे सांप को टच नहीं करना। संकल्प में भी टच करना अर्थात् अपने को मूर्छित करना है। –अ. वा. 24.10.75

अगर आपकी मंसा द्वारा अन्य आत्माओं को सुख और शान्ति की अनुभूति नहीं होती अर्थात् पवित्र संकल्प का प्रभाव अन्य आत्मा तक नहीं पहुंचता तो उसका भी कारण चैक करो। किसी भी आत्मा की जरा भी कमजोरी अर्थात् अशुद्धि अपने संकल्प में धारण हुई तो वह अशुद्धि अन्य आत्मा को सुख शान्ति की अनुभूति करा नहीं सकेगी, या तो उस आत्मा के प्रति व्यर्थ वा अशुद्ध भाव है व अपनी मंसा पवित्रता की शक्ति में परसेन्टेज की कमी है। जिस कारण औरों तक वह पवित्रता की प्राप्ति का प्रभाव नहीं पड़ सकता। स्वयं तक है लेकिन दूसरों तक नहीं हो सकता। लाइट है लेकिन सर्चलाइट नहीं है, तो पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है सदा स्वयं में भी सुख शान्ति स्वरुप और दूसरों को भी सुख शान्ति की प्राप्ति का अनुभव करानेवाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर औरों को भी सदा सुख और शान्ति, शीतलता की किरणें फैलानेवाली होगी। तो समझा सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? –अ. वा. 24.3.82

कहते हो सुख शान्ति की जननी पवित्रता है। जब भी अतिन्द्रिय सुख वा स्वीट साइलेन्स का अनुभव कम होता है, इसका कारण पवित्रता का फाउन्डेशन कमजोर है। –अ. वा. 23.12.93

पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है– प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन– इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का। .....अगर पवित्रता की परसेन्टेज में 16 कला से 14 कला की पवित्रता अर्थात् सम्पूर्ण नहीं तो सम्पूर्ण सुख शान्ति के साधनों की भी प्राप्ति कैसे होगी? –अ. वा. 24.3.82

ऐसे काम विकार नहीं है, सदा ब्रह्मचारी हैं लेकिन किसी आत्मा के प्रति विशेष झुकाव है जिसका रॉयल रूप स्नेह है। लेकिन एक्स्ट्रा स्नेह अर्थात् काम का अंश। स्नेह राइट है लेकिन एक्स्ट्रा.... अंश है। –अ.वा. 22.1.82

तो मंसा परिवर्तन हो इसमें डबल अटेन्शन दो। यह नहीं सोचो सम्पन्न बनने तक संकल्प तो जावेंगे ही, लेकिन नहीं। संकल्प अर्थात् बीज को ही योगाग्नि में जला दो जो आधाकल्प तक बीज फल दे न सके। वाचा के मुख्य दो पत्ते भी निकल न सकें। कर्मणा का तना और टाल टालियां भी निकल न सके। बहुत काल का भस्मीभूत बीज जन्म जन्मान्तर के लिए फल नहीं देगा। अन्त में इस सब्जेक्ट में सम्पूर्ण नहीं होना है, लेकिन बहुत काल का अभ्यास ही अन्त में पास करायेगा। अन्त में सम्पूर्ण होंगे इसी संकल्प को पहले खत्म करो। अभी बने तो अन्त में भी बनेंगे। अब नहीं तो अन्त में भी नहीं। इसलिए इस अलबेलेपन की नींद से भी जग जाओ। –अ. वा. 23.1.80

संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता की जितनी–जितनी धारणा है उसी प्रमाण रूहानियत की झलक सूरत में दिखाई देती है। ब्राह्मण जीवन की चमक पवित्रता है। निरन्तर अतिन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स का विशेष आधार है पवित्रता। तो पवित्रता नम्बरवार है तो अनुभूतियों की प्राप्ति भी नम्बरवार है। अगर पवित्रता नम्बरवन है तो बाप द्वारा प्राप्तियां भी नम्बरवन है। पवित्रता की चमक स्वतः ही निरन्तर चेहरे पर दिखाई देती है। पवित्रता की रूहानियत के नयन सदा ही निर्मल दिखाई देंगे। सदा नयनों में रूहानी आत्मा और रूहानी बाप की झलक अनुभव होगी। .....पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता। लेकिन सदा ब्रह्मचारी और सदा ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर हर कदम में चलनेवाले। उसका संकल्प, बोल और कर्म रुपी कदम नैचुरल ब्रह्मा बाप के कदम उपर कदम होगा, जिसको आप फुटस्टेप कहते हो। और जो ब्रह्माचारी हैं उनका चेहरा और चलन सदा ही अन्तर्मुखी और अतिन्द्रिय सुखी अनुभव होगा। – अ. वा. 25.3.90

तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। ब्रह्मा कुमारियां भाई–बहन का सम्बन्ध भी गिरा देता है। सम्बन्ध एक से ही होता है, यह है नई बात। पवित्र होकर वापिस भी जाना है।–मुरली 30.4.74 पृ.2

सदगति वाले पवित्र होते हैं उनको अपवित्र कोई छू न सके। लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में बाउन्डरी लगी रहती है, कोई छू न सके। परन्तु अपने को मूत पलीती कोई समझते नहीं हैं। सारी दुनिया की मूत पलीती को बाप आकर स्वच्छ बनाते हैं। परन्तु मलेच्छों को भी पता नहीं है हम मलेच्छ पत्थरबुद्धि हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं तूम मूत पलीती हो,अब फिर पावन बनना है।–मु.20.11.74.पृ.1

बाबा समझाते हैं पहली बात है पवित्रता की। काम कटारी न चलानी है। यह विकार ही बड़ा दुश्मन है। जब से वाममार्ग में जाते हैं तब से भारत गिरता आता है। पहले नम्बर की हिंसा यह है। तुम हो डबल अहिंसक। काम की हिंसा को कोई भी जानते नहीं। दूसरी नम्बर की वायलैन्स है कोध। –मुरली 24.5.72 पृ.2

यह भाई बहन का सम्बन्ध है नम्बरवन। विकार की दृष्टि ला न सके। बाप देखेंगे बच्चा बन प्रतिज्ञा कर फिर विकार में गिरे तो धर्मराज डण्डा भी बहुत मारेंगे। पवित्रता की प्रतिज्ञा पक्की रखनी है। बाप से हम विश्व का मालिक बनते हैं। एक जन्म विकार में न गए तो बड़ी बात है। कई कहते हैं पीछे क्या होगा देखा जायेगा। साहूकार लोग तो अभी ही अपन को स्वर्ग में समझते हैं। इसलिए गरीबों के लिए सरेन्डर होना सहज है। –मुरली 2.5.72 पृ.3

जो पवित्र बनते है वही पवित्र दुनिया के मालिक बन सकते हैं। पवित्रता की प्रतिज्ञा से ही इस आश्रम में आकर रह सकते हैं। ब्राह्मणों के उपर बहुत रेसपान्सिबिलिटी है। भूले चूके किसको ले आते तो उन पर सजा पड़ जाती है। बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बाप कहते हैं काम चिता पर बैठकर तुम काले बन पड़े हो। अब ज्ञान चिता पर बैठ गोरा बनो। बहुत कहते हैं अभी तो काम चिता अच्छी लगती है। पवित्र कैसे बनेंगे? बाबा कह देते हैं– अच्छा गटर में पड़े रहो। बाप तो कहते हैं पवित्र बनो। जिसके बुद्धि में विकार होगा वह वर्सा पा न सके। –24.5.72 रात्रि क्लास

आगे तुमको पता नहीं था कि यह धंधा न करना चाहिए। कोई अच्छे अच्छे बच्चे होते हैं, कहते हैं हम ब्रह्मचर्य में रहेंगे। सन्यासियों को देख समझते हैं पवित्रता बहुत अच्छी है। पवित्र और फिर अपवित्र। दुनिया में अपवित्र तो बहुत रहते हैं। पाखाना में जाना भी अपवित्र बनना है। इसलिए फौरन स्नान करते हैं। अपवित्रता अनेक की होती है। किसको दुःख देना भी अपवित्र कर्तव्य है। –मुरली 14.7.74 पृ.1

ऐसे ही विकारी मनुष्यों की आयु कितनी छोटी हो जाती है। कहां निर्विकारी देवताओं की आयु एवरेज 125–150 होती है। एवर हेल्दी बनेंगे तो आयु बढ़ेगी। –मुरली 8.8.75 पृ.2

मनसा में तूफान भल आए, कर्मेन्द्रियों से नहीं करना है। –मु. 22.4.69 पृ.3

संकल्प वा स्वप्न में भी बाप से किनारा नहीं। ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं है। स्वप्न का भी आधार अपनी जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंशमात्र भी नहीं आ सकती। तो मायाप्रूफ हो जो स्वप्न में भी माया आ नहीं सकती? स्वप्न को भी हल्का नहीं समझो क्योंकि स्वप्न में कमजोर होता है तो उठने के बाद भी वह संकल्प जरुर चलेंगे और योग साधारण हो जाएगा। इसीलिए इतने विजयी बनो जो संकल्प से तो क्या लेकिन स्वप्न मात्र भी माया वार नहीं कर सके। –अ. वा. 13.10.92

अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में लाती है तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। –अ. वा. 4.12.95

सिर्फ याद के समय याद में रहना–इसको तपस्या नहीं कहा जाता। तपस्या अर्थात प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रायल्टी का स्वयं भी अनुभव करना और औरों को भी अनुभव कराना। सफल तपस्वी का अर्थ ही है विशेष महान आत्मा बनना। विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात हर कर्म में महानता और विशेषता।–अ.वा.4. 12.91

संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार की–पाप के खाते में जमा होती ही है। लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। –अ. वा. 3.12.78

सदा ब्रह्मचारी अर्थात संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल नहीं बनाए। पहली हार वृत्ति की चंचलता फिर दृष्टि और कृति की चंचलता होती है। वृत्ति की चंचलता रजिस्टर को दागी बना देती है। इसलिए वृत्ति से भी सदा ब्रह्मचारी।.....बाल ब्रह्मचारी का महत्व होता है। बाल ब्रह्मचारी वर्तमान समय भी पूज्य अर्थात श्रेष्ठ है। बापदादा भी ऐसे बच्चों को पूज्य बच्चों के रुप में देखते हैं। विश्व के आगे भी अभी अंत में पूज्य के रुप में प्रत्यक्ष होंगे। बाप के आगे पूज्य प्रसिद्ध होनेवाले सदा समीप सम्बन्ध में रहते हैं। ये तो नहीं सोचते–थोडा तो चलता ही है, चला लो, किसको क्या पता पडता है, कोई मनसा से देखता ही नहीं है, कर्म में तो आते ही नहीं है लेकिन मनसा के वायब्रेशन्स भी छिप नहीं सकते। चलाने वाले को बापदादा अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसे आउट नहीं करते, नहीं तो नाम भी आउट कर सकते हैं लेकिन अभी नहीं करते। चलानेवाले स्वयं ही चलाते चलाते त्रेता तक पहुंच जायेंगे।सारे चक्र में देखो सिर्फ देव आत्माएं हैं जिनका शरीर भी पवित्र है और आत्मा भी पवित्र है। और जो भी आए हैं–आत्मा पवित्र बन भी जाए लेकिन शरीर पवित्र नहीं होगा। आप आत्माएं ब्राहमण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर भी, प्रकृति भी पवित्र बना देते हो। इसलिए शरीर भी पवित्र है तो आत्मा भी पवित्र है। –अ.वा .7.3.93

ब्रह्मा कुमार कुमारी बन अगर कोई भी साधारण चलन वा पुरानी चाल चलते हैं तो सिर्फ अकेला अपने को नुकसान नहीं पहुंचाते क्योंकि अकेले ब्रह्मा कुमार कुमारी नहीं हो लेकिन ब्राह्मण कुल के

भाती हो। स्वयं को नुकसान तो करते ही हैं लेकिन कुल को बदनाम करने का बोझ भी उसी आत्मा के उपर चढता है। ब्राह्मण लोक की लाज रखना–यह भी हर ब्राह्मण का फर्ज है।......जो लोक–लाज अनेक जन्मों की प्राप्ति से वंचित करनेवाली है, वर्तमान हीरे जैसा जन्म कौडी समान व्यर्थ बनाने वाली है, यह अच्छी तरह जानते भी हो, फिर भी उस लोकलाज को निभाने में अच्छी तरह ध्यान देते हो, समय देते हो, एनर्जी लगाते हो।.....कभी वृत्ति के परहेज की धारणा अर्थात धर्म को छोड देते हो, कभी शुद्ध दृष्टि के घर्म को छोड देते हो, कभी शुद्ध अन्न के धर्म को छोड देते हो फिर अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बातें बहुत बनाते हो।......ब्राहमण कुल उंचे ते उंची चोटीवाला कुल है। तो किस लोक वा किस कुल की लाज रखनी है।......अल्पज्ञ आत्माओं को खुश कर लिया लेकिन सर्वज्ञ बाप की आज्ञा का तो उल्लंघन किया ना। तो पाया क्या और गंवाया क्या?– अ.वा. 18.4.82

अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर जरा सा अंतर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात पवित्रता नहीं। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है, क्यों? आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दुःख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज की डिग्री में फर्क पड जाएगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढे पन्द्रह कला.......नम्बरवार हो जाऐगा।......तो इसलिए मोटे मोटे रुप न पुरुषार्थ का रखो, न चेकिंग का रखो। अभी महीन बुद्धि बनो क्योंकि समय समाप्त अचानक होना है, बताकर नहीं होता है। –अ. वा. 6.4.95 पृ.205

ऐसे अलबेले नहीं बनना कि और तो सब छोड दिया बाकि कई एक कर्मेन्द्रिय विचलित होती है वह भी समय पर ठीक हो जाएगी। लेकिन कोई एक कर्मेन्द्रिय का आकर्षण भी एक बाप का बनने नहीं देगी, एकरस स्थिति में स्थित होने नहीं देगी, नम्बरवन में जाने नहीं देगी, अगर कोई हीरे जवाहर, महल माडियां छोड दे और सिर्फ कोई मिट्टी के फूटे हुए बर्तन में भी मोह रह जाए तो क्या होगा? जैसे हीरा अपनी तरफ आकर्षित करता है वैसे हीरे से भी ज्यादा वह फूटा हुआ बर्तन उसको अपनी तरफ बार बार आकर्षित करेगा। न चाहते हुए भी बुद्धि बार बार वहां अटकती रहेगी। ऐसे अगर कोई भी कर्मेन्द्रिय की आकर्षण रही हुई है तो श्रेष्ठ पद पाने से बार बार नीचे ले आएगी।......बापदादा बच्चों को कल्याण के लिए ही कहते हैं पुराना छोड दो, अधमरे नहीं बनो। मरना है ता पूरा मरो, नहीं तो भले ही जिन्दा रहो। –अ. वा. 3.4.82 पृ.337

अति इन्द्रिय सुख में रहनेवालों की निशानी क्या होगी? अति इन्द्रिय सुख में रहनेवाला कभी अल्पकाल के इन्द्रिय सुख की तरफ आकर्षित नहीं होगा, जैसे कोई साहूकार रास्ते चलते हुए कोई चीज पर आकर्षित नहीं होगा क्योंकि वह सम्पन्न है, भरपूर है। इसी रीति से अतिन्द्रिय सुख में रहनेवाला इन्द्रियों के सुख को ऐसे मानेगा जैसे जहर के समान हैं।.......अगर चलते चलते इन्द्रियों के सुख तरफ आकर्षित होते, इससे सिद्ध होता कि अतिन्द्रिय सुख की अनुभूति में कोई कमी है। इन्द्रियों के सुख का अनुभव कितने जन्म से कर रहे हो? उससे प्राप्ति का भी ज्ञान है ना? क्या प्राप्त हुआ? कमाया और गंवाया। जब गंवाना ही है तो फिर अभी भी उस तरफ आकर्षित क्यों होते? अतिन्द्रिय सुख की प्राप्ति का समय अभी थोडा समय है। यह अब नहीं तो कब नहीं मिलेगा।–अ.वा. 14.5.77 पृ. 149

होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है–बाप से सच्चा बनना। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज नहीं है, लेकिन प्यूरिटी अर्थात रीयल्टी अर्थात सच्चाई। –अ. वा.25.6.77 पृ.275

इतना बडा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो। इतने श्रेष्ठ कार्य के आगे स्वयं के पुरुषार्थ में हलचल वा स्वयं की कमजोरियां क्या अनुभव होती है.......अच्छी लगती है? वा स्वयं से भी शर्म आती है। चैलेन्ज और प्रैक्टिकल समान होना चाहिए। –अ. वा. 3.12.78 पृ.94

अगर किसी के प्रति भी स्वप्न मात्र भी लगाव हो, स्वार्थ हो तो स्वप्न में भी समाप्त कर देना। कई कहते हैं कि हम कर्म में नहीं आते लेकिन स्वप्न आते हैं। लेकिन अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चैक करो सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं थके हुए आए और बिस्तर पर गये–ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलापन की सजा है क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा–सब बाप को हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते लेकिन फरमान को नहीं मानते हो तो फरमान के बदले अरमान मिलता है। सुबह को उठकर के दिल में अरमान होता है ना कि मेरी पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई। ये कितना अरमान है। कारण है अलबेलापन। तो अलबेले नहीं बनो। जैसे आया वैसे यहां वहां की बातें करते करते सो जाओ क्योंकि समाचार तो बहुत होते हैं और दिलचस्प समाचार तो व्यर्थ ही होते हैं। कई कहते हैं और तो टाइम मिलती ही नहीं, जब साथ में एक कमरे में जाते हैं तो लेनदेन करते हैं लेकिन कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते करते सोना नहीं, यह अलबेलापन। ये फरमान का उल्लंघन करना है। अगर और टाइम नहीं है और जरुरी बात है तो सोनेवाले कमरे में नहीं लेकिन कमरे के बाहर दो सेकण्ड में एक दो को सुनाओ। सोते सोते नहीं सुनाओ।......तो जब आदि अर्थात अमृतवेला और अंत अर्थात सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वतः ही ठीक होगा। –अ.वा. 16.11.95 पृ.25

मन के प्रति बापदादा का डायरेक्शन है – मन को मेरे में लगाओ वा विश्व सेवा में लगाओ। मनमनाभव – इस मंत्र की सदा स्मृति रहे। इसको कहते हैं मन की स्वच्छता वा पवित्रता। –अ.वा. 6.1.90 पृ.126

वास्तव में तुमको बैठना भी ऐसे चाहिए जो अंग से अंग न मिले। –मुरली 9.4.69 पृ.2

कहते हैं ना शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है। इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोना बर्तन चाहिए। –मुरली 2.4.69 पृ.3

जो जितना पवित्र बना होगा तो पवित्रता की निशानी क्या होगी? औरों को भी पवित्र बनाएगा जरुर।......100% कपडा साफ किसी का है नहीं। क्योंकि 100% साफ कपडा जिसका होगा शरीर रुपी वस्त्र उसके नौ दरवाजों से सुगन्ध निकलेगा, कोई किसी प्रकार से दुर्गन्ध नहीं निकलेगा। देवताओं के शरीर से सुगन्ध निकलता है, हर छिद्र से सुगन्ध निकलता है। –कैसेट–107

ifo=rk e: vk[kk dk egRo vkj uke&:i dh xgpkjh

कोई किसी के नाम रूप में फंस पड़ते है तो बाप समझाते हैं यह क्रिमिनलाइज है।....इसलिए बाप कहते हैं– हर एक अपनी अवस्था को देखे। बड़े बड़े अच्छे महारथी अपने को देखे हमारी बुद्धि किसके नामरूप में जाती तो नहीं हैं? फलानी बहुत अच्छी है। यह करें। कुछ अन्दर में आता है? यह तो बाबा जानते हैं इस समय सम्पूर्ण सिविलाइज्ड कोई है नहीं। वह तो बिल्कुल जो पास विद आनर 8 रतन हैं उनकी ही इस समय सिविलाइज्ड हो सकती है। 108 भी नहीं। जरा भी चलायमान न आये, बहुत मुश्किल है। कोई विरले ऐसे होते हैं। आंखे कुछ न कुछ धोखा जरुर देती हैं। तो ड्रामा जल्द किसको सिविलाइज्ड नहीं बनाएगा। खूब पुरुषार्थ कर अपनी जांच करनी है। कहां हमारी आंखें धोखा तो नहीं देती हैं? विश्व का मालिक बनना बड़ी उंची मंजिल है।.... अपनी सम्भाल रखनी है। बेहद के बाप को भी सच नहीं बतलाते हैं। कदम कदम पर भूलें होती रहती हैं। थोड़ा भी उस क्रिमिनल दृष्टि से देखा, भूल हुई, फौरन नोट करो। 10–20 भूले तो रोज करते ही होंगे जब तक अभूल बनें। परन्तु सच कोई बताते थोड़े ही हैं। –मुरली 23.7.89 पृ.1

एक एक आत्मा इन्डिपेन्डेन्ट है। भाई बहन का नाता भी छुड़ा दिया। भाई भाई समझो फिर भी क्रिमिनल आई छूटती नहीं। वह अपना काम करती रहती है। इस समय मनुष्यों के अंग सब क्रिमिनल हैं। ....सबसे जास्ती क्रिमिनल अंग कौनसा है? आंखें। विकार की आश पूरी नहीं हुई तो फिर हाथ चलाने लग पड़ते। पहले पहले है आंखें। तब सूरदास की भी कहानी है। –मुरली 19.7.89 पृ.2

क्रिमिनल आई बदलकर सिविल बन जाए, टाईम लगता है। स्त्री को समझे हम ब्रहमा कुमार–कुमारियां भाई बहन हैं। कितना फर्क हो जाता है। स्त्री पुरुष की चलन बदल भाई बहन की हो जाए, डिफिकल्टी है। –मुरली 9.12.90

मनुष्य कितने विकारी क्रिमिनल आई वाले हैं। एक मिनिस्टर बाबा के पास आया– बोला हमारी तो क्रिमिनल आई जाती है। –मुरली 20.8.89 पृ.2

आशिक माशूक एक विकार के लिए बनते हैं, दूसरे सिर्फ रुप पर फिदा होते है। तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी ऐसे माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं। नहीं तो हमेशा मेल फिमेल एक दो के नाम रुप में फंसते हैं। यहां तो माया ऐसी प्रबल है जो माता– माता के नाम रुप में, कन्या– कन्या के नाम रुप में फंस पड़ती है। पुरुषार्थ करते हुए भी माया एकदम पकड़ लेती है। –मुरली 31.8.91

बाप इस पुरानी दुनिया से तुमको नफरत दिलाते हैं। इस समय सबकी आत्माएं काली हैं। तो उनको गोरा शरीर कैसे मिलेगा? भल करके चमड़ी कितनी सफेद है परन्तु आत्मा तो काली है ना। जो सफेद खूबसूरत वाले हैं उनको अपना कितना नशा रहता है। खुद काला भूत होगा परन्तु कहेगा हमको स्त्री सफेद चाहिए। मनुष्यों को यह पता ही नहीं पड़ता है कि आत्मा गोरी कैसी बनती है? –मु 12.7.84 पृ.2

हम सब एक बाप की संतान रुहानी भाई हैं– यह अलौकिक दृष्टि की स्मृति रहने से देहधारी दृष्टि अर्थात् लौकिक दृष्टि जिसके आधार से विकारों की उत्पत्ति होती है, वह बीज ही समाप्त हो जाता है। जब बीज समाप्त हो गया तो फिर अनेक प्रकार के विस्तार रूपी कल्प वृक्ष विकारों का स्वत: ही समाप्त हो जाता है। अभी तक भी बहुत बच्चों की कम्पलेन्ट है कि दृष्टि चंचल होती है वा दृष्टि खराब होती है। क्यों होती है? जबकि बाप का फरमान है लौकिक देह अर्थात् शरीर में अलौकिक आत्मा को देखो, फिर देह को देखते क्यों हो? अगर आदत कहते हो, आदत से मजबूर हो वा अल्पकाल के किसी न किसी रस के वशीभूत हो जाते हैं तो इससे सिद्ध है कि आत्मा परमात्मा प्राप्ति के रस में अभी तक अनुभवी नहीं हैं।काम महाशत्रु है ना। कोशिश बहुत करते हैं। इसलिए सूरदास की

भी कथा है। बाप कहते हैं यहां आंख निकालनी नहीं है। क्रिमिनल को सिविल बनाना है। इस समय की ही मेहनत है। सबसे महाशत्रु है यह काम। इसलिए सब क्रिमिनल बन गए हैं। तो फिर ऐसा चाहिए जो क्रिमिनल को बदल सिविल बनावें–मु. 31.1.74 पृ.3

जब क्रिमिनल आई टूटकर पक्की सिविल आई बन जाती है उसको कहा जाएगा कर्मातीत अवस्था। इतनी अपनी जांच करनी है। इकट्ठे रहते हुए परन्तु विकार की दृष्टि न जाए। बीच में ज्ञान तलवार होगी– हम भाई बहन हैं। –मु. 6.9.84 पृ.2

तुम्हारे लिए आवाज होता है कि यह भाई बहन बनाते हैं। इसमें शुद्ध वातावरण रहता है। क्रिमिनल दृष्टि नहीं जाती है। सिर्फ इस जन्म के लिए यह दृष्टि पड जाने से फिर भविष्य कब भी क्रिमिनल दृष्टि नहीं पडेगी। ऐसे नहीं कि वहां बहन भाई समझते हैं। वहां तो जैसे महाराजा महारानी होते हैं वैसे ही होते हैं। –मु. 6.9.84 पृ.1

जब ग्रहचारी बैठती है तो कितना नुकसान हो जाता है वह बाप जानते है। साहूकार गरीब बन पडते हैं। कारण तो होता है ना। बहुतों को बाबा समझाते भी रहते हैं–बच्चे नाम रुप में कभी नहीं फंसना। नहीं तो माया ऐसी है–नाक से पकड खड्डे में डाल देगी। माया बडा धोखा दे देगी। आशिक माशुक यहां नहीं बनना हैं। तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी ऐसे माया के विघ्न बहुत पडते हैं। नहीं तो हमेशा मेल फीमेल एक दो के नाम रुप में फंसते हैं।....... इसलिए बाबा सावधानी देते हैं कि बच्चे माया बहुत फंसाने की कोशिश करेगी। लेकिन तुमको फंसना नहीं है। देह अभिमान में नहीं आना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। –मु. 31.8.91

अपनी स्त्री के अलावा दूसरी कोई खूबसूरती देखेंगे तो झट वह खैचेंगी।.....दिल होती है उनको चुम्मन करें, हाथ लगावें। आंखें सभी से जास्ती धोखा देती है। कोई गाने में होशियार होंगे, श्रृंगार अच्छा होगा तो आंखे झट चलायमान हो जावेंगी।....तो जब ऐसी कोई स्त्री आदि सामने आती है तो किनारा कर लेना चाहिए। .....कोई को देखेंगे तो ख्याल आएगा यह तो बहुत अच्छी है। फिर बात करेंगे। दिल होगी उनको कुछ सौगात दूं, यह खिलाउं। यही चिन्तन चलता रहेगा।–मु.20.5.71 पृ.1

दुनिया में तो काली और गोरी शक्ल पर चलता है। कोई कोई बगैर देखे सगाई कर लेते हैं। फिर जब शक्ल देखते हैं तो कहते हैं हमको तो ऐसी काली नहीं चाहिए। फिर झगडा हो जाता–हम ऐसे को क्या करें। हमें तो सुहानी चाहिए।......अभी तुम्हारी काली आत्मा की सगाई हुई है गोरे साथ। ... .यह शरीर तो पुराना है। उनसे बिल्कुल नफरत आनी चाहिए भल कितना भी सुन्दर हो। लॉ मुजीब सभी काले हैं। क्योंकि आत्मा काली है।......जो नाम रुप में फंसते हैं उनको ही बन्दर बन्दरी कहा जाता हैं। –मु. 8.9.73 पृ.4

अच्छे अच्छे सेन्टर्स के अच्छे अच्छे बच्चों की भी क्रिमिनल आई रहती है। –मु.5.8.84 पृ.3

dfy;qxh ifrr nqfu;k dh ifjfLFkfr

बाप ने दिन में कर्म करने की छुट्टी दी है। बाकी टाईम में रात को जागकर अभ्यास करेंगे तो दिन में भी वह अवस्था रहेगी, मदद मिलेगी। रात का अभ्यास दिन में काम आएगा। रात को भी जागना है 12 के बाद, क्योंकि 9 से 12 बजे तक यह टाईम तो सभी से डर्टी है। मनुष्य गोते खाते रहते हैं। इसलिए विचार सागर मंथन सबेरे करना होता है। –मुरली 9.4.72 पृ.2

पढ़ाई सवेरे और शाम को होती है। दोपहर में वायुमण्डल ठीक नही होता है। रात्री का भी 10 बजे से 12 तक बिल्कुल खराब टाईम है। उसी समय जैसे कि विषय वैतरणी नदी में रहते हैं।आजकल तो न दिन न रात देखते हैं। पूरा वैश्यालय है। इस समय सतोप्रधान है ना।–मुरली 6.7.75 पृ.2

भ्रष्टाचारी अर्थात् जो मूत से पैदा होते हैं। रावण राज्य में भ्रष्टाचारी काम ही करते रहते हैं। फिर गुलगुल बनाने बाप को ही तरस पड़ता है। भारत में ही आते हैं। –मुरली 1.5.72 पृ.3

हमने आधा कल्प राज्य किया फिर वाम मार्ग में गए। उनका भी फिर मन्दिर बना हुआ है जगन्नाथ का। उसमें देवी–देवताओं के बहुत गन्दे गन्दे चित्र दिखाए हैं। उसके लिए भी गवर्मेन्ट को रिपोर्ट करनी चाहिए। ऐसे विकारी के मंदिर थोडे ही होने चाहिए। विलायत से बहुत गंदे चित्र मंगाते हैं। फारेनर्स लोग जब ऐसे चित्र देखते हैं तो फिर कहते हैं देवताएं कितने गंदे हैं। कृष्ण को इतनी रानियां थी। हिंदुओं ने अपने आप को चमाट मारी है। –मुरली 2.5.72 पृ.2

उस लौकिक बाप से तो 63 जन्म सराप ही मिलता है क्योंकि रावण के मत पर चलते हैं ना। हरेक बाप अपने बच्चों को सरापित ही करते हैं। काम चिता पर बिठाते हैं। बाप आए फिर ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। –24.5.72

प्रभात सबेरे 2–3 बजे को कहा जाता है जबकि सिमरण भी कर सके। ऐसे थोड़ेही 12 बजे विकार से उठकर कोई भगवान का नाम लेते होंगे, बिल्कुल नहीं। अमृतवेला 12 बजे को नहीं कहा जाता। उस समय तो मनुष्य पतित गंदे होते हैं। वायुमण्डल ही सारा खराब होता है। अढ़ाई बजे थोड़ेही कोई उठता है। 3–4 बजे का समय अमृतवेला है। –मुरली 25.7.89

भ्रष्टाचारी दुनिया में कोई भी श्रेष्ठाचारी नहीं होता। सभी पतित हैं। शरीर मूत से पैदा होता है। –24.5.72

तुम जानते हो इस समय सभी मनुष्य जंगली जानवर है। एक दो को काटते मारते ही रहते हैं। इन जैसा क्रोध और विकार और कोई में होता नहीं। यह भी गायन है कि द्रौपदी ने पुकारा। बाप ने समझाया है तुम सब द्रौपदियां हो और पुरुष सब दुशासन। द्रौपदी ने पुकारा है कि हमको नंगन करते हैं। बाप समझाते है ऐसे ऐसे अत्याचार करनेवाले है जिनको जानवरों से भी बदतर कहा जाता है। गउ एक बार ही बैल के पास आती है। फिर कब बैल के वार्ड में आएगी नहीं। बैल के सामने कब आयेगी नहीं, भाग जावेगी। लड़ पड़ेगी। यहां मनुष्य देखो कितने गंदे हैं। इसलिए द्रौपदी ने पुकारा है कि मुझे नंगन न करो। जुआ की बात लिखी हुई है। कहते दुशासन मुझे नंगन करते हैं। मैं रजस्वला हूं। मुझे हाथ मत लगाओ। नंगन न करो। तो यहां के मनुष्य ऐसे है जो भल कुछ भी हो तो भी काला मुंह करने बिगर रहेंगे नहीं। जानवरों से भी बदतर हैं। सतयुग में तो नंगन होने का हुक्म नहीं। इस समय है घोर अंधियारा। बाप देख रहे है कि कितना गंद हैं। कामी कुत्ते छोड़ते ही नहीं। इनके पास ज्ञान है तब ही पुकारती हैं। बड़े गंदे मनुष्य हैं। तुम भी समझ सकती हो ऐसे है ना बरोबर। भगवानुवाच बाप कहते हैं बच्चे अब विकार में न जाओ। मैं तुम्हे स्वर्ग में ले चलता हूं। –23.12.74

एक तो यह दुनिया ही वैश्यालय है और फिर वैश्याएं भी तीर्थों पर आ रहती हैं। एक तरफ स्नान करो दूसरी तरफ गटर में घुटका खाओ। –मुरली 9.1.74 पृ.3

बाप कहते है वास्तव में सब द्रौपदियां–दुशासन हैं। नंगन तो सब होते है ना। यह है बेहद की बात। शास्त्रों में एक द्रौपदी का नाम लिख दिया है। पांच पति थे उनको। यह भी हो न सके। हिन्दू

नारी तो एक पति ही करती है। पुरुष तो एक जुती गई तो दूसरी ले लेते हैं। आजकल तो बहुत गंदगी है। अपनी बच्ची को भी खराब कर देते। कितनी छी–छी दुनिया हैं। अब बाप तुमको गुलगुल बनाते हैं। –मुरली 22.1.74 पृ.2

आजकल मनुष्य के पास पैसे बहुत हो गए हैं। तो 5 विकार भी तेज हो गए है। काम विकार कितना तेज है। काम बिगर रह नहीं सकते। 4–5 वर्ष रह फिर लिखते हैं बाबा आज भूत लगा, काला मुंह कर दिया। कितना धक्का खाया, एकदम 5 माले से गिरे। पहले पहले है देहअभिमान । उपर से गिरा ठक, पुर्जा पुर्जा हो गया। खलास। हडगुड बिल्कुल ही टूट जाते हैं। फिर पुरुषार्थ करने में टाईम लगता है। यह है सबसे बड़ी चोरी। इसलिए बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। विकार को ही पतितपना कहा जाता है। –मुरली 9.7.71 पृ.2

बाकि तो वह विद्वान आचार्य पण्डित आदि सब पतित हैं। विकार से पैदा होते हैं। भल साधु. महात्मा है परंतु देवताओं को हाथ नहीं लगा सकते क्योंकि म्लेच्छ हैं। इसलिए बाउंडरी लगा देते हैं। कोई छू न सके। – मुरली 20.11.74 पृ.1

मनुष्य से देवता बदल टट्टू गधे मिसल बन जाते हें। गधे बेवकूफ होते हैं। घड़ी घड़ी मिट्टी में लेट कर मैले बन पड़ते हैं। बाप भी कहते हैं खबरदार रहना। टट्टू मिसल फिर मैला न बनना– मैं तुम्हारी आत्मा को पावन बनाने आता हूं। ऐसा न हो विकारी बन सारा श्रृंगार ही गवां दो। –मुरली 20.1.74 पृ.3

मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो उस समय पावन रहते हैं। आजकल तो यहां भी गंद लगा पड़ा है। पावन नहीं रहते। हरिद्वार तरफ बंखर में जाओ। तो वहां भी वैश्याएं बैठी हैं। बहुत पण्डे जाते हैं, यात्रियों को यात्रा कराते हैं। उसके साथ साथ फिर वह भी यात्रा करा देते हैं। जिससे एकदम बेड़ा गर्क हो जाता है। वैश्याओं का वहां झुण्ड रहता है। बाबा ने सुना है बंखर जैसे वैश्यालय है । –मुरली 21.11.74 पृ.3

विकारी मनुष्य सब अछूत म्लेच्छ हैं। इस समय सारी दुनिया अछूत है। क्योंकि विष पीते पिलाते हैं–20.11.74

कामी जो होते हैं उनके लिए बहुत कड़े अक्षर कहे जाते हैं। कहते हैं तुम तो कामी कुत्ते हो। बेहद का बाप भी समझाते हैं–हम तुमको जी.ओ.डी बनाते हैं, रावण तुमको डी.ओ.जी. बना देते हैं। है ही रावण राज्य। मिसाल देते हैं ना कुत्ते की पूंछ कितना भी सीधा करो परंतु होगा ही नहीं। यहां भी समझाया जाता है–पावन बनो फिर भी बनते नहीं। बाप कहते है–बच्चे विकार में मत जाओ अर्थात् कुत्तरे मत बनो। बंदर मत बनो। काला मुंह मत करो। फिर भी लिखते हैं बाबा माया से हार खाकर काला मुंह कर बैठे। अज्ञान काल में भी कोई गंदा काम करते है तो कहते हैं मुट्ठा काला मुंह करते आये हो। –मुरली 26.5.74 पृ.2

बाबा ने रात्री को समझाया किन्हों की दृष्टि कामी रहती है अथवा सेमी कामी दृष्टि है। वैश्यायें और लम्पट भी है ना। यह है सबसे बड़े कांटे। इसमें भी कोई खास रखते हैं, जिनको कामी कुत्ते भी कहा जाता है। बहुत बड़ा बड़ा घर खास उनके लिए बनाते हैं। जैसे कलकत्ते में कोई बड़ा आदमी वैश्या न रखे तो उनको बड़ा आदमी नहीं माना जाए। बहुत है। इसलिए भारत का नाम ही रखा हुआ है वैश्यालय। खास भी है आम भी है। कामन और प्राइवेट होते हैं। खास अपने लिए रखते हैं। फिर खुद भी जाते है, दोस्तों को भी ले जाते है या चेष्टा करते है कि फलाना बहुत अच्छा है, इनसे विकार

में जावे। वैश्याओं को यह काम है। कब यहां भी एसी वृत्ति वाले आते हैं जिनकी बुद्धि देह तरफ जाती है। कोई की सेमी बुद्धि जाती है। नए नए भी आते हैं जो पहले अच्छा चलते हैं। उस समय शमशानी बैराग आता है। फिर वहां जंगल में जाते है तो खराब हो पड़ते हैं। दृष्टि गंदी हो पड़ती हैं। यहां जिनको फूल समझ बागबान के पास ले आते हैं कि बाबा यह बहुत अच्छा फूल है। कोई के लिए माली कान में आकर बतलाते हैं यह फलाना फूल है। यह ऐसा है। माली को जरुर बतावेंगे ना। ऐसे नही बाबा अर्न्तयामी है। –मुरली 16.7.74 पृ.1

कोई में काम विकार जास्ती होता है। तो कहते हैं यह कामी कुत्ता है। स्त्री भी कहती है हमारा पति तो कामी कुत्ता दिखाई पड़ता है। घड़ी घड़ी विकार में जाते रहते हैं। कोई कहते 7–8 मास में एक बार विकार में जाना होता, कोई कहते मास–मास, कोई हफ्ते–हफ्ते, कोई बहुत कामी होते हैं तो रोज भी जाते हैं। उससे जास्ती विकारी तो दिन में दो तीन बार भी विकार में जाते हैं। बाप समझाते हैं सतयुग में यह विकार नहीं है। ...विकारी दुनिया को निर्विकारी बनाना यह तो बाप का ही काम है। . ....कहते हैं इस विगर बच्चे कैसे पैदा होंगे। बाप समझाते हैं–अभी जो बिच्छू टिन्डन पैदा होते हैं यह मृत्युलोक के सम्प्रदाय है। तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। यह बिच्छू टिन्डन बच्चे पैदा होना बन्द होना है। मृत्युलोक ही खत्म होना है। फिर इसके बाद विकारी लोग होंगे ही नहीं। इसलिए बाप से पवित्र होने की प्रतिज्ञा करते हैं। –मुरली 29.3.76 पृ.3

गटर में कोई मजा थोड़ेई है। यह है ही विषय सागर। रौरव नर्क में सब पड़े हैं, बहुत गन्द है। दिन प्रतिदिन गंद वृद्धि को पाता रहता है। इनको कहा जाता है डर्टी वर्ल्ड। डेविल वर्ल्ड। एक दो को दुःख ही देते क्योंकि देह अभिमान का भूत है। काम का भूत है। बाप कहते हैं इन भूतों को भगाओ। यह भूत ही तुम्हारा काला मुंह करते हैं। काम चिता पर बैठ काले बन जाते है, सड़ जाते हैं। तब बाप कहते हैं फिर हम आकर ज्ञान अमृत की वर्षा करते हैं। इन गन्द से तो अभी एकदम घृणा आती है। यह है जहर अथवा भाड खाना। अक्षर भी है मूत पलीती। ग्रन्थ बैठ पढ़ते हैं परन्तु है सब विकारी। सूरत बहुत अच्छी सीरत बन्दर जैसी है–8.8.75 पृ.2

चाचा मिला, मामा मिला, गुरु मिला, जो आया उनसे काला मुंह कर देती। वा चेष्टा रखती है जिसको बाबा सेमी कहते हैं। बाप कहते हैं विकारी जो बनते हैं उनका काला मुंह होना है। पतित माना काला मुंह। –मुरली 16.7.74 पृ.3

अभी तुम पवित्र बनते हो तो किचडे वालों से कितना मिक्सअप होना पडता है। नहीं तो ऐसे किचडे को शिवबाबा छू भी नहीं सकते। शिवबाबा बहुत सीक्रेट है, बहुत पवित्र है। –मुरली 30. 10.84 पृ.1

एक तो याद की यात्रा में रहना है जिससे गन्द निकल पवित्र बन जाएंगे। फिर तुम्हारी दिल नहीं होगी गन्दे से मिलने की। परन्तु सर्विस अर्थ तुमको बातचीत करनी पडती है। –मुरली 30.10.84 पृ.1

ऐसे भी होते हैं–सिखलाने वाले माया के चम्बे से विकार में चले जाते हैं। आये हैं बहुतों को दुबन से निकालने, खुद फंस मरते हैं। माया बडी जबरदस्त है। –मुरली 6.9.84 पृ.2

कोई से दिल लगाई भाकी पहनी तो समझो चट खाते में गया। उनका तो मुंह देखना भी अच्छा नहीं लगता। वह जैसे अछूत हैं। स्वच्छ नहीं है। अन्दर में दिल खाती है–बरोबर मैं अछूत हूं।
–मुरली 12.7.84 पृ.2

बाप जानते हैं कि एकदम जलकर काले कोयले बन गये हैं। —मुरली 30.10.84 पृ.3

देह अभिमान में आकर बहुत छी छी काम करते हैं। समझते हैं हमको कोई देखता थोडेही है? क्रोध, लोभ तो प्राइवेट नहीं होता। काम में प्राइवेसी चलती है। दरवाजा बन्द कर काला मुंह करते हैं। काला मुंह करते करते कृष्ण की आत्मा 84 जन्मों बाद काली बन गई है। गोरे से सांवरा बना है तो सारी दुनिया उनके पिछाडी आ गई। द्वापर से लेकर गिरते गिरते काले बन्दर बन गए हैं। ऐसे पतित दुनिया को बदलना जरुरी है। बाप कहते हैं तुमको शर्म नहीं आती? एक जन्म लिए पवित्र नहीं बनते हो। —मुरली 9.11.74 पृ.2

तुम्हारे पास प्रदर्शनी आदि में भिन्न भिन्न प्रकार के मनुष्य आते हैं। कोई कहते हैं जैसे भोजन जरुरी है वैसे यह विकार भी भोजन है। इन बिगर भूख से मरे जावेंगे। अब ऐसी बात तो है नहीं। सन्यासी पवित्र बनते हैं फिर मर जाते हैं क्या? ऐसे ऐसे बोलने वाले लिए समझा जाता है कोई बहुत अजामिल पापी होंगे जो ऐसे ऐसे कहते है। बोलना चाहिए क्या इस बिगर तुम मर जावेंगे जो भोजन से इनकी भेंट करते हो। स्वर्ग में आनेवाले जो होंगे वह होंगे सतोप्रधान फिर पीछे सतो, रजो, तमो में भी तो आते है ना। जो पीछे आते हैं उन आत्माओं ने निर्विकारी दुनिया तो देखी नहीं है। तो वह आत्माएं ऐसे ऐसे कहेंगे शरीर द्वारा कि इन बिगर हम रह नहीं सकते। सूर्यवंशी जो होंगे उनको तो फौरन बुद्धि में आयेगा यह तो सत्य बात है। बरोबर स्वर्ग में विकार का नाम निशान न था। —मुरली 5.3.75

रावण का चित्र है ना। उपर में गधे का शीश है—विकारी टट्टु बन जाते हैं ना। तुम समझते भी हो हम क्या थे। बाप बिगर हम गन्दे बन गये थे। कहा ही जाता है डर्टी ब्रूटस छी छी बन जाते हैं। इनको मूत पीना कहो, विष्टा खाना कहो एक ही बात है। कहते है ना अशंख चोर हराम खोर। —मुरली 19.11.74 पृ.1

तुम इस दुनिया से और कुछ न सुनो, न पढो। तुम उन्हों का संग भी न करो। मेहतरों से मनुष्य किनारा करते हैं ना। बाप ने समझाया हैं यह सभी मनुष्य मेहतर ही मेहतर हैं। भार खानेवाले हैं। ...... कब कब तो यहां भी अपवित्र आ जाते हैं। जिनको अजामिल कहो, जो कुछ कहो। —मुरली 9.4.69 पृ.2

मूत पीने की ऐसी आदत पड गई है जैसे शराबी शराब बिगर रह नहीं सकते।—मुरली.10.4.73,पृ.2

देखो बच्चे आजकल तो 70—80 वर्ष वाले भी विख को छोडते नहीं हैं। नहीं तो कायदा है 60 वर्ष के बाद वानप्रस्थ लेना। —मुरली 1.9.73 पृ.3

शिव का मंदिर भी है। वहां ही लक्ष्मी नारायण का चित्र, वहां ही राम का, वहां ही फिर कोसघर बनाते हैं। कहां देवतायें अहिंसक जो स्वर्ग में राज्य करते थे उनके मन्दिरों में फिर कोस घर बनाते रहते हैं। ....मन्दिरों में भी शादी के लिए हाल बनाते रहते हैं। —मुरली 6.4.69 पृ.1

कलियुग में देखो मनुष्य का क्या हाल है। अखबार में पढा था 42 वर्ष का आदमी हैं, उनका 43 बच्चे हैं। फिर इतनी युगल बनाई।.....कब तीन कब चार बच्चे पैदा किये।.....तो उनको क्या कहेंगे? कुतरे। कुतरे से भी जास्ती।.....सतयुग में तो एक धर्म, एक भाषा, एक बच्चा होता है।—मु.7.4.69 पृ.2

ifo=rk& dqekfj;ksa ds lanHkZ esa

जो भी गुरु लोग आदि हैं सभी है हठयोगी। घरबार छोड देते हैं। बाबा छुडाते नहीं है। कहते है पवित्र बनो। कुमार और कुमारी पवित्र हैं। शादी के बाद वह दुशासन वह द्रौपदी बन जाती है, रावण सभी को दुशासन बना देते है। सभी द्रौपदियां और दुशासन रावण संप्रदाय हैं। बहुत करके पुरुष ही नंगन करते हैं। तो द्रौपदी पुकारती है बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। हम पवित्र बन कृष्णपुरी में जानं चाहती हैं। कन्यायें भी पुकारती हैं मां बाप हमको तंग करते हैं, मारते है कि विकारी बनना ही होगा। यह समय ही ऐसा है। बाबा ने समझाया है कन्या को मां बाप भी पांव पडते हैं। क्योंकि पवित्र हैं। शादी करने से अपवित्र हो जाती है। ससुर घर जाती है तो फिर सभी के आगे माथा टेकना पडेगा। क्योंकि पतित बन जाती है। तब फिर पुकारती है हे बाबा पतित पावन आओ। अब बाप कहते है कुमारियां पतित न बनो। नहीं तो पुकारना पडेगा। पतित बनती ही क्यों हो? ऐसे थोडेही तुम्हारी गले में कोई फांसी डाले तो तुम डाल देंगी। तुम जानवर थोडे ही हो। अपने को बचाना चाहिए। बाप आये ही हैं पावन बनाने। कहते हैं स्वर्ग की बादशाही का वरसा देने आया हूं। इसलिए पवित्र बनना पडे। कन्या पावन ही रहे। पतित बनेगी तो पतित हो मर जावेंगी। स्वर्ग के सुख देख न सकेंगी। स्वर्ग में तो बहुत मौज हैं। – मुरली...1.5.72 पृ..1

कुमारियों द्वारा ही परमपिता परमात्मा ने भीष्मों आदि को ज्ञान बाण मरवाए। दुनिया तो इन बातों को नहीं जानती। जगदम्बा सरस्वती कुमारी है ना। बडे बडे पण्डित सरस्वती सरनेम रखाते हैं।... बरोबर अभी कन्याओं में ताकत जास्ती आती क्योंकि वह उल्टी सीढी नहीं चढी हैं। पुरुष जब स्त्री को लेता है तो उनमें मोह चला जाता है फिर मां दादे आदि सबसे मोह निकल स्त्री के मुरीद बन जाते हैं। फिर बच्चे पैदा करते हैं तो उनमें मोह चला जाता है। अभी तुम सबसे नष्टोमोहा बनते हो। – मुरली...22.6.73

कुमारियों के लिए तो जैसे मेहनत है नही। फ्री है। विकार में गई तो बडी पंचायत हो जाती है। कुमारी रहना अच्छा है। नहीं तो फिर अधरकुमारी नाम पड जाता है। युगल भी क्यों बने? इसमें भी नाम रुप का नशा चढता है। यह भी मूर्खता है। भल बहादुरी दिखाते हैं इसमें कोई शक नहीं। परन्तु बडी अच्छी हिम्मत चाहिए। ज्ञान की पूरी पराकाष्ठा चाहिए। बहुत हैं हिम्मत तो करते हैं परन्तु आग की आंच आ जाती है तो खेल ही खलास। इसलिए बाबा कहते है..कुमारी फिर भी अच्छी। अधरकुमारी का ख्याल ही क्यों करना चाहिए? कुमारियों का नाम तो बाला है। बाल ब्रह्मचारी है। बाल ब्रह्मचारी रहना अच्छा है। ताकत रहती है। दूसरे की याद नहीं आवेंगी। बाकी हिम्मत है तो करके दिखाते। परन्तु मेहनत है दो हो पडते है ना। कुमारी है तो अकेली हैं। दो से द्वैत आ जाती है। जितना हो सके कुमारी हो रहना अच्छा है। इसमें घर आदि बनाना पडता है। कुमारी सर्विस में निकल सकती है। बंधन में पडने से फिर बंधन वृद्धि को पाते रहते हैं। ऐसे जाल बिछाना ही क्यों चाहिए जो बुद्धियोग फंस पडे। ऐसे जाल में न फंसना ठिक है। कुमारियों के लिए तो बहुत अच्छा है। उनके लिए तो बहुत सहज है। स्टुडेन्ट लाइफ पवित्र लाइफ भी है। बुद्धि भी फ्रेश रहते है। कुमारी को भीष्म पितामह मिसल बनना है। कल्प पहले भी रहे हैं तब तो दिलवाडा मंदिर में यादगार बना है। कुमारी के ही चित्र रखे हैं। – मुरली...6.8.71 पृ..4

सभी कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि एक बाप दूसरा न कोई.. वह निभाती है? इसी वायदे को सदा निभानेवाली कुमारी विश्व कल्याण के अर्थ निमित्त बनती हैं। कुमारियों का पूजन होता है.पूजन का आधार है सम्पूर्ण पवित्र। तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के

आधार पर है। अगर कुमारी..कुमारी होते हुए भी पवित्र नही तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं। तो कुमारीपन की जो विशेषता है..उसको सदा साथ साथ रखना, उसे छोडना नहीं। नहीं तो अपनी विशेषता को छोडने से वर्तमान जीवन का अतिन्द्रिय सुख और भविष्य के राज्य का सुख दोनों से वंचित हो जावेंगी। — अ. वा....28.10.75

जितना हो सके कन्याओं को बचाना है। जितना तुम औरों को पार करेंगे उतना पद उंच होगा। इसलिए सर्विस बडी दिल से करनी होती है। जो शादी कर और पवित्र रहे उन्हों का बहुत नाम बाला होना है। जीवन कहानी लिखनी होगी दिखलाने के लिए। —मुरली...19.9.72 रात्रि क्लास

माथा पावन के आगे झुकाया जाता है ;कन्या का मिसालद्ध जब विकारी बनती है तो सबके आगे सिर झुकाती है और फिर पुकारती है पतित पावन.... अरे पतित बनती ही क्यों जो फिर पुकारना पडे? —मुरली...14.7.74 पृ.3

बागबान के पास सब किसम के हैं। बात मत पूछो। कोई कोई कन्यायें भी कांटा बन जाती है। कुमारी जीवन की क्या महिमा है? कुमारियों को पूजा जाता है क्यों? पवित्र आत्मायें हैं। तो सभी पवित्र आत्मायें पवित्र याद से औरों को भी पवित्र बनाने की सेवा में रहने वाली हो ना। ... तो सदा अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो। मन्दिरों में जो शक्तियों की पूजा होती है, वही हो ना।—अ.वा.17.5.83

जहां भी रहो, वहां सदा अपने को पूज्य महान आत्मा समझकर चलना। न आपकी दृष्टि किसी में जाए, न और किसी की दृष्टि आप पर जाए। ऐसी पूज्य आत्मा समझकर चलना। पूज्य आत्मा की स्मृति में रहनेवाली कुमारियों के तरफ किसी की भी ऐसी दृष्टि नही जा सकति है। सदा इस बात में अपने को सावधान रखना। कभी भी अपने को हल्की स्मृति में नही रखना। ब्रहमा कुमारी तो बन गई.... कभी ऐसे अलबेले नहीं बनना। अभी तो दादी बन गई, दीदी बन गई....नहीं। यह तो कहने भी आता है। लेकिन है श्रेष्ठ आत्मा, पूज्य आत्मा, शक्ति रुप आत्मा.... शक्ति मे उपर किसी की भी नजर नहीं जा सकती। अगर किसी की गई तो दिखाते है— वह भैंस बन गया। भैंस जैसे काली होती है तो वह भैंस अर्थात काली आत्मा बन गई और भैंस बुद्धि अर्थात मोटी बुद्धि हो जायेगी। अगर किसी की भी बुरी दृष्टि जाती है तो वह मोटी बुद्धि हो जायेगी। क्यों किसी की दृष्टि जाए। इसमें भी कमजोरी कुमारियों को कहेंगे। पाण्डवों की अपनी कमजोरी, कुमारियों की अपनी। इसलिए अपने को चेक करो। दादी दीदियों को भी डर इसी बात का रहता है कि कोई की नजर न लग जाए। तो ऐसी पक्की हो ना। कभी भी किसी से प्रभावित नही होना। यह सेवाधारी बहुत अच्छा है, यह सेवा में अच्छा साथी मददगार है, नहीं। बाप मेरे द्वारा कराता है। तो न स्वयं कमजोर बनो और न दूसरों को कमजोर बनने की मार्जिन दो। इस बात में किसी की भी रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए। —अ. वा. 19..5.83

जो बाप की श्रीमत है उसी प्रमाण, उसी लकीर के अन्दर सदा रहनेवाले सदा उपर उडते रहते हैं। तो लकीर के अन्दर रहनेवाली कौन हुई? सच्ची सीता। तो सभी सच्ची सीतायें हो ना? पक्का? लकीर बाहर पांव निकाला तो रावण आ जायेगा। रावण इन्तजार में रहता है—कि कहां कोई पांव निकाले और मैं भगाउं। तो कुमारी अर्थात सच्ची सीता। —अ. वा. 8.10.81

कभी वह जीवन खाना, पीना, घूमना— यह याद तो नही आता। दूसरों को देखकर यह नहीं आता कि हम भी थोडा टेस्ट करें। वह जीवन गिरने की जीवन है। चढने से गिरने की तरफ कौन जायेगा।..... जहां शुद्ध आत्मायें हैं वहां वहां सदा ही शुभ कार्य है। सभी आपस में संस्कार मिलाने की सबजेक्ट में पास हो ना। कोई खिटपिट नहीं, कहां भी दृष्टि वृत्ति नहीं। एक बाप दूसरा न कोई....

विशेष कुमारियों को इस बात में सर्टिफिकेट लेना है। जैसे नाम है बाल ब्रह्मचारिनी, वैसे संकल्प भी पवित्र हों– इसको कहा जाता है स्कालरशिप लेना। –अ. वा. 9.5.83 पृ..194

मैं तो ब्रहमा कुमारी बन गई, पवित्र आत्मा बन गई– अपनी उन्नति मे, अपना प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राजी होकर चल रहे हैं, यह बेहद बाप समान बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है।–अ. वा. 27.3.83 पृ.98

तो कुमारी और कुमार को शादी करनी ही नहीं चाहिए। नहीं तो वह भी गृहस्थी हो पडेंगे। कुछ गंधर्वी विवाह का नाम भी है। वास्तव में मार भी सहन करनी चाहिए। मर जाना चाहिए परन्तु अधर कुमारी कभी नहीं बनना चाहिए। बालब्रहमचारी का नाम बहुत होता है। शादी की माना हाफ पार्टनर हो गई। कुमारी को कहा जाता है तुम तो पवित्र बनो। गृहस्थ व्यवहार वालों को कहा जाता है गृहस्थ में रहते कमल फूल समान रहो। उन्हों की ही मेहनत होती है। शादी न करने से बन्धन न रहेगा। कन्या को तो पढना ही है और ज्ञान में बहुत मजबूत रहना है। –मुरली 11.6.71 पृ..2

बहुत कुमारियां भी बडी गन्दी होती हैं। कितना भी समझाओ समझती नहीं। बस मूत पीने की ही लत लगी रहती है। काम कटारी चलावे, मूत पीवे, वही चिन्तन चलता रहता है। ऐसे भी है,......हनीमून करने जाते हैं। काम कटारी चलाने जाते हैं।.......सुनते हैं तो दिल होती है हम भी काला मुंह करें। –मुरली 21.4.69 पृ.3

बाबा दिन प्रतिदिन कडे कडे अक्षर देते रहते हैं। लौकिक बाप भी समझाते हैं। शादी ना करो। काला मुंह हो जावेगा। तो बाप को भी जवाब दे देते हैं। काला मुंह कर खत्म हो जावेंगे।
–मुरली 21.4.69 पृ.3

आजकल तो इसके पिछाडी प्राण भी दे देते हैं। कोई की किसके साथ दिल होती है, तो शादी नहीं कराई जाती है तो बस घर में ही हंगामा मचा देते हैं। यह है ही गन्दी दुनिया।–मु. 21.4.69 पृ.2

बडे ही धूमधाम से काम कटारी चलाते हैं। उनका भी ऐसा चित्र बनाना चाहिए। कुमार और कुमारी दोनों के हाथ में काम कटारी देना चाहिए। वह उनके गले में वह उनके गले में लगाते हैं। फिर तुम समझाओ– बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। कुमारियों को भी बाबा कहते हैं शादी तो बरबादी हो जाएगी। इस गटर में मत गिरो। क्या तुम बाप का भी नहीं मानेगी? स्वर्ग की महारानी नहीं बनेगी? अपने साथ प्रण करना चाहिए कि हम उस दुनिया में कब नहीं जावेंगी। उस दुनिया को याद नहीं करुंगी। शमशान को कभी याद करते हैं क्या? –मुरली 4.3.75

कुमारियों को तो संगदोष से बहुत बचाना है। बाबा आये ही हैं एक दो को खून करने से बचाने। काम कटारी से एक दो को खून करते हैं ना। बाप कहते हैं इस पतितपने से तुम आदि मध्य अंत दुःख पाते हो–मु.1.3.75

बोलो हमको गटर में जाना न है। हमारी शादी के लिए पैसे तो निकाले ही होंगे। वह इस रुहानी सेवा में लगाओ। सेन्टर खोल कर दो। बाबा तो कन्याओं को देख बहुत खुश होते हैं कि यह बहुतों का कल्याण करके दिखावेंगी तो जन्म जन्मान्तर के लिए बहुत उंचा पद पावेगी। –मुरली 27. 1.75

बाप निर्विकारी बनाते हैं। हम अकेली थी अकेली ही जाना है। उनको कोई थोडा टच करेगा भी तो अच्छा न लगेगा। कहेंगी यह हमको हाथ क्यों लगाते हैं? इन में विकारी बांस है। विकारी हमको टच भी न करें। इस मंजिल पर पहुंचना है। अभी वह कर्मातीत अवस्था पिछाडी में आवेगी। अभी ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं। —मुरली 27.6.74

50—100 रुपया देते हैं सिर्फ बाल बनाने के लिए, इसको कहा जाता है अति देह अभिमान। वह फिर ज्ञान उठा न सके। बाबा कहते हैं बिल्कुल सिम्पुल बनो। उंची साडी पहनने से देह अभिमान आता है। हमको वायल की साडी पहनी हुई है। देह अभिमान तोडने लिए सब हल्का कर देना चाहिए। अच्छी चीज देह अभिमान में लाती है। —मुरली 6.7.75 पृ.3

कुमारियां सदा ही पवित्र मानी जाती हैं। कुमारियों के पवित्रता की महिमा 100 ब्राह्मणों से भी ज्यादा है।...जब तक कुमारी है तब तक उसके पांव पडते है और जब कुमारी शादी करती है तो उसी दिन सबके पांव पडने लग पडती है। ......सच्ची फ्रेण्ड हो ना। बाप ऐसा मिला है जो कोई भी बात करो लेकिन दिलाराम तक ही रहेगी। सारे विश्व में आकर्षण वाला बाप ही अनुभव होता है ना।......कोई टी.वी. तो नहीं देखती हो? फिल्म तो नहीं देखती? अगर वह फिल्म देखी तो यह फिल्म खत्म।......यह गृहस्थी जीवन के झंझट बाहर से दिखाई नहीं देते हैं लेकिन अंदर बहुत बंधन है।.....इसलिए कुमारियां ऐसे बंधनों से बच गई। —अ.वा. 21.3.85 पृ.260

कुमारी है, कोई कुमार को याद किया तो कब मन शांत न होगा। बुद्धि चलती रहेगी। उसकी याद आती रहेगी। बाप समझाते हैं यह 5 भूत कम नहीं हैं। कहा जाता है इनमें पांच भूतों की प्रवेशता है।—मुरली 1.3.78 पृ.2

गृहस्थी जीवन है बकरी समान जीवन, कुमारी जीवन है पूज्य जीवन। अगर कोई एक बार भी गिरा तो गिरने से हड्डी टूट जाती है ना।......टेस्ट करके फिर समझदार नहीं बनना।—अ.वा.26.1.88 पृ. 3

रुहानी कुमारियां ही बाप के साथ रह सकती। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या? तो एक बार के अनुभवी कभी धोखे में नहीं आ सकते। माया भिन्न भिन्न रुप में आती है। कपडों के रुप में आएगी, सिनेमा के रुप में आएगी, मां.बाप के मोह के रुप में आएगी, घूमने फिरने की रुप में आएगी। माया कहेगी यह कुमारियां हमारी बनें। बाप कहेंगे हमारी बनें, तो क्या करेंगी? —अ.वा. 9.5.84 पृ.304

विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना है। शीतल भी किस रुप में बनना है, वह अर्थ भी समझती हो। लेकिन जब सर्विस पर हो, कर्तव्य पर हो तो काली रुप चाहिए। काली रुप होंगी तो कभी भी किस पर बली नहीं चढेंगी,लेकिन अनेकों को अपने उपर बली चढावेंगी।
—अ.वा. 28.5.70 पृ.255

कई बच्चियां लिखती हैं कि शादी के लिए बहुत तंग करते हैं, क्या करे? जो मजबूत सेन्सिबुल बच्चियां होंगी वह कब ऐसे लिखेंगी नहीं। लिखती हैं तो बाबा समझ जाते हैं कि रिढ बकरी है। यह तो अपने हाथों में है जीवन को बचाना। —मुरली 23.9.70 पृ.3

कुमारी अगर चाहे, जिद पर रहे कि हम शादी नहीं चाहते तो गवर्मेन्ट कुछ कर नहीं सकती। समझा सकते हैं कि हम ससुर घर जावे ही क्यों जो पुजारी बन सबके आगे झुकना पडे। मैं कुमारी हूं तो सब मेरे आगे सर झुकाते हैं। तो हम क्यों न पूज्य रहें। –मुरली 7.11.73 पृ.3

कुमारियां पतित बन पडती है। दोनों पतित बनते हैं, दोनों की दिल होती है तब ताली बजती है। अगर अपनी हिम्मत हो तो रडी ऐसी करें जो वह एकदम भाग जाए। मुरली 4.3.69 पृ.4

अब बाप कहते हैं इन कन्याओं द्वारा उद्धार कराउंगा। कन्या का गायन है। कुमारी वह जो पियर और ससुरघर का 21 जन्मों के लिए उद्धार करें। तुम इस समय कन्याएं बनती हो ना। मातायें भी कुमारी बन जाती है।.......कुमारियों ने कमाल की है। बाप ने ही कुमारियों को उठाया हैं।.....देखते हो पवित्रता में सुख भी है तो मान भी है। –मुरली 6.3.73 पृ.2

कुमारियों से.......जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से सदा है ही। पहले कहने मात्र थे, अभी प्रेक्टिकल है। भक्ति मार्ग भी गायन जरुर करते थे कि सर्व सम्बन्ध बाप से है। लेकिन अब प्रेक्टिकल सर्व सम्बन्ध का रस बाप द्वारा मिलता है। ऐसे अनुभव करने वाली हो ना। अब सर्व रस एक बाप द्वारा मिलता है तो अब कहां भी संकल्प जा नहीं सकता। ऐसे निश्चय बुद्धि हो।–अ. 16.2.84 पृ. 77

ifo=rk&dqekjksa ds lanHkZ esa

कुमारों को सदा प्योर और सतोगुणी रहने का यादगार कौनसा है मालूम है? सनतकुमार। उन्हों की विशेषता क्या दिखाते हैं ? उन्हों को सदैव छोटा कुमार रुप ही दिखाते हैं। कहते हैं उन्हों की सदैव 5 वर्ष की आयु रहती है। यह प्योरिटी की गायन है। जैसे 5 वर्ष का छोटा बच्चा बिलकुल प्योर रहता हैं ना। सम्बन्धों के आकर्षण से दूर रहता हैं। भल कितना भी लौकिक परिवार हो लेकिन स्थिति ऐसी हो जैसे छोटा प्योर होता हैं। वैसे ही प्योरिटी का यह यादगार है। कुमार अर्थात पवित्र अवस्था। उसमें भी सिर्फ एक नहीं, संगठन दिखलाया है। दृष्टान्त में तो थोडे ही दिखाये जाते हैं। तो यह आप लोगों का संगठन प्योरिटी का यादगार है। ऐसी प्योरिटी होती जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही नहीं हो।–अ. वा. 11.3.71 पृ.41

सीता और रावण का खिलौना देखा है ना। रावण के तरफ सीता क्या करती है? पीठ करती है ना। अगर पीठ कर लिया तो सहज ही उनके आकर्षण से बच जायेंगे। .... तो कुमारों को यह खिलौना सामने रखना चाहिए। माया की तरफ मुंह कर लेते है। –अ. वा. 11.3.71 पृ.41

सदैव हरेक नारी शरीरधारी आत्मा को शक्ति रुप, जगतमाता का रुप, देवी का रुप देखना यह है दिव्य नेत्र से देखना। कुमारी है, माता है, बहन है, सेवाधारी निमित्त शिक्षक है, लेकिन है कौन? शक्ति रुप। बहन भाई के सम्बन्ध में भी कभी कभी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है। इसलिए सदा शक्ति रुप हैं। शिवशक्ति है। शक्ति के आगे अगर कोई आसुरी वृत्ति से आते तो उनका क्या हाल होता है, वह तो जानते हो ना। हमारी टीचर नहीं, शिवशक्ति है। ईश्वरीय बहन है इससे भी उपर सदा शिवशक्ति रुप देखो –अ. 27.4.83 पृ 166,167

कोई भी कर्मेन्द्रियां अपने बन्धन में नहीं बांधे इसको कहा जाता है साक्षी। ...कभी आंख भी धोखा न दे। शारिरिक सम्बन्ध में आना अर्थात आंख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मेन्द्रियां धोखा न दे।...

सदा यह याद रखो कि हमारे उपर बहुत बडी जिम्मेवारी है। एक कमजोर तो एक के पीछे एक का सम्बन्ध है–अ 9.5.83पृ.190

कुमार सदा अपने को बाप के साथी समझते हो ?...वैसे भी जीवन में सदा कोई न कोई साथी बनाते हैं। ....ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रुहानी सच्चा साथी सदा साथ निभानेवाले हैं। तो कुमार अकेले हो या कम्बाइन्ड हो? फिर और किसी को साथी बनाने का संकल्प तो नहीं आता है? कभी कोई मुश्किलात आये, खाना बनाने की मुश्किल हो तो साथी बनाने का संकल्प आयेगा या नहीं? कभी भी ऐसा संकल्प आये तो इसे व्यर्थ संकल्प समझ सदा के लिए सेकण्ड में समाप्त कर लेना क्योंकि जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या भरोसा। इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या? तो सदा कम्बाइण्ड समझने से और संकल्प समाप्त हो जायेंगे क्योंकि सर्वशक्तिवान साथी है। –अ. वा. 8.4.82 पृ..360

ब्रहमा कुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनालिटी और रायल्टी में रहना। ....और यही प्युरिटी की रायल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुडायेगी। .....जो भी देखे हरेक ब्रहमाकुमार और कुमारी से यह पर्सनालिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनालिटी वह तो आत्माओं का देहभान में लाती है और प्युरिटी की पर्सनालिटी देहीअभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है। तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? ...औरों को अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ–साथ प्युरिटी की पर्सनालिटी, रुहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनालिटी की ओर आकर्षित हो। सदा बाप का परिचय देनेवाले वा बाप का साक्षात्कार करानेवाले रुहानी दर्पण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनानेवाला सदा दिखाई दे।.....कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभु परिचय दे सकते हो। गर्वमेन्ट को भी जगा सकते हो। लेकिन वह परीक्षालेंगे। ऐसे ही नहीं मानेंगे। तो ऐसे कुमार तैयार है? गुप्त सी. आई. डी आपके भी पेपर लेंगे कि कहां तक विकारों पर विजयी बने हैं। ...सभी सोच रहे हैं कौन से सी.आई.डी आयेंगे। जानबूझ कर कोध दिलायेंगे। पेपर तो प्रेक्टिकल लेंगे ना। प्रेक्टिकल पेपर देने के लिए तैयार हो? आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है।
–अ.वा.24.4.83 पृ..162,163

कुमार जीवन में बाप का बनना– कितने भाग्य की निशानी है। ऐसे अनुभव करते हो कि हम कितने बन्धनों में जाने से बच गये? .....देह के भान का भी बन्धन न हो। इस देह के भान से सब बन्धन आ जाते हैं। तो सदा अपने को आत्मा भाई. भाई हैं...ऐसे समझकर चलते हो? इसी स्मृति से कुमार जीवन सदा निर्विघ्न आगे बढ सकती है। संकल्प वा स्वप्न में भी कोई कमजोरी न हो इसको कहा जाता है विघ्न विनाशक–अ. 8.4.82पृ.359

कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है क्योंकि पवित्र जीवन है और जहां पवित्रता है वहां महानता है। कुमार अर्थात शक्तिशाली, जो संकल्प करे वह कर सकता हैं....स्वयं भी पवित्र रह ओरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हैं। ऐसी सेवा के निमित्त बन सकते हो। जो दुनियावाले असम्भव समझते हैं वह ब्रहमा कुमार चैलेंज करते हैं..तो हमारे जैसा पावन कोई हो नहीं सकता,क्यों? क्योंकि बनानेवाला सर्वशक्तिवान है। दुनियावाले कितना भी प्रयत्न करते है लेकिन आप जैसा पावन बन नहीं सकते। आप सहज ही पावन बन गये। सहज लगता है ना? कुमारों की परिभाषा ही है चैलेंज करनेवाले, परिवर्तन कर दिखानेवाले, असम्भव को सम्भव करनेवाले। दुनियावाले अपने साथियों को संग के दोष में ले जाते है और आप बाप के संग में ले जाते हो। उन्हे अपना संग नहीं लगाते, बाप के संग का रंग लगाते हो, बाप समान बनाते हो।–अ. वा. 30.1.88

अगर कुमार निर्विघ्न कुमार है तो ऐसे कुमार बहुत महान गाए जाते हैं, क्योंकि दुनियावाले भी कुमारियों के बजाय कुमारों के लिए समझते हैं कि कुमार योग्य बन जाएं यह मुश्किल है।....कुमार कुमारियों से भी नम्बर आगे जा सकते हैं लेकिन निर्विघ्न कुमार हों। क्योंकि कुमारों को बहुत करके यही विघ्न आता है कि कोई साथी नहीं है। कोई साथी चाहिए, कम्पेनियन चाहिए। तो किसी न किसी रीति से अपनी कम्पनी बना लेते हैं।..... कम्पनी कम्पेनियन बनाने का संकल्प पैदा कर देती है। पहले कम्पनी में आते हैं, बातचीत करना, बैठना, फिर कम्पेनियन बनाने का भी संकल्प आता हैं। लेकिन ऐसे भी कुमार हैं जो बाप के सिवाय न कम्पनी बनाने वाले है न कम्पेनियन बनानेवाले हैं। सदा बाप की कम्पनी में रहनेवाले कुमार सदा सुखी रहते हैं। ....सारा परिवार कम्पनी है फिर तो ठीक लेकिन दो तीन या एक कोई कम्पनी चाहिए वह रांग है। ....आखिर तो विश्व को अपने आगे, बाप के आगे झुकाना तो है।....कुमारी मैनारिटी फिर भी सेवा की कम्पनी में रहती है लेकिन कुमारों को थोड़ा सा कम्पनी का संकल्प आता है, तो पाण्डव भवन बनाकर सफल रहें, ऐसा कोई करके दिखाओ। लेकिन आज पाण्डव भवन बनाओ और कल पाण्डव एक ईस्ट में चला जाए एक वेस्ट में चला जाए, ऐसा पाण्डव भवन नहीं बनाना। ....बापदादा को कुमारों पर विशेष नाज है कि अकेले रहते भी पुरुषार्थ में चल रहे है। कुमार आपस में दो तीन साथी बनाकर क्यों नही चलते, साथी सिर्फ फीमेल ही नहीं चाहिए, दो कुमार भी रह सकते हैं लेकिन एक दो के निर्विघ्न साथी होकर रहें। –अ. वा. 27.11.89

गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए– इसका मतलब यह नहीं कि कोई को गृहस्थ न है तो जरुरी जाना ही पडे। नहीं, व्यवहार तो जरुर चाहिए। सबको शरीर निर्वाह जरुर करना है। इसके लिए प्रबन्ध करना चाहिए। गृहस्थ में जाने से फिर बच्चों आदि में मोह पड जाता है। गृहस्थ में जो गए हैं उनको भी शरीर निर्वाह करना है। फिर कमल फूल समान पवित्र रहना है, बुद्धि और तरफ न जाए। एक बाप को ही याद करना है क्योंकि बाप के पास वापिस जाना है। अभी विकार की सीढी चढनी न है। गन्धर्व विवाह का जो गायन है वह तो बचाने लिए कराया जाता है क्योंकि बहुत सताते हैं। मनुष्य फिर कहते हैं शादी बिगर सिजरे का नाम कौन निकालेगा। अभी बाप कहते हैं–पतित मनुष्य.सिजरे का अब दरकार नहीं है। अब तो पावन सिजरा चाहिए। –मुरली 28.11.73 पृ.2

गृहस्थ में रहनेवाले भी बहुत होते है जो शादी करना पसन्द नहीं करते, झंझट समझते हैं। शादी करना फिर बाल बच्चे आदि सम्भालना–ऐसी जाल फैलाये ही क्यों जो खुद ही फंस पडे। ऐसे बहुत यहां भी आते हैं। 40 साल हो गए ब्रह्मचारी रहते। इसके बाद क्या शादी करेंगे? स्वतन्त्र रहना पसन्द करते हैं। तो बाप उनको देख खुश होते हैं। समझते हैं यह तो है ही बंधनमुक्त। बाकी रहा शरीर का बंधन। उसमें देह सहित सबको भूलने का होता है। –मुरली 1.7.84 पृ.1

कुमार कुमारियां तो है ही पवित्र। उन्हों को फिर समझाया जाता है ऐसे गृहस्थ में फिर जाना नहीं है जो फिर पवित्र होने का पुरुषार्थ करना पडे। ......बैचलर्स तो सब धर्मो में बहुत रहते हैं। परन्तु सेफ्टी में रहना जरा मुश्किल होता है। फिर भी रावण राज्य में रहते हैं ना। विलायत में भी ऐसे बहुत मनुष्य शादी नहीं करते हैं। फिर पिछाडी कर लेते हैं कम्पेनियनशिप के लिए। क्रिमिलन आई से नहीं करते हैं।–मुरली 19.9.84 पृ.2

ईश्वरीय राह पर चलनेवाले यहां का कोई भी मर्तबा नहीं लेंगे। अगर कोई कहते हैं मैं शादी करता हूं तो आसुरी राह पर चलनेवाला हो गया। बाप तो तुमको ले जाते हैं बहिस्त में। फिर अगर दोजक याद आई,गटर में जाकर पडे तो उनको कहेंगे डर्टी ब्रूट्स। तुमको तो दैवी परिवार का बनाते हैं। गटर में जाने की कब आश भी न रखना है। –मुरली 27.1.75

तुम्हारे पास गन्धर्वी विवाह करते हैं फिर भी दूसरे दिन खलास कर देते हैं। देर थोडे ही लगती है क्योंकि स्त्री है माया का रुप। कितनी कशिश करती है। दोनों बिगर तो दुनिया चल नहीं सकती। तो भी पवित्र बनने का पुरुषार्थ इस समय ही होता है। —मुरली 18.7.89 पृ.2

कोई भी कर्म इन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे, सदा बाप की तरफ आकर्षित रहें। किसी भी व्यक्ति व वस्तु की तरफ आकर्षण न जाए। ऐसे राज्य अधिकारी तपस्वी कुमार हो? बिल्कुल विजयी। क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुगी है ना और साथ भी हंस और बगुलों का है। ऐसे वातावरण में रहते हुए स्वराज्य अधिकारी होंगे तब सेफ रहेंगे। जरा भी दुनिया के वायब्रेशन की आकर्षण न हो। —अ.वा. 29.10.81

सिर्फ कुमारों के एक बात अटेन्शन में रखनी है—सदा अपने को बिजी रखो, खाली नहीं। शरीर और बुद्धि दोनों से बिजी रहो।.........जैसे कर्म की दिनचर्या सेट करते हो ऐसे बुद्धि की भी दिनचर्या सेट करो।......बिजी रहने वाले को किसी भी रुप से माया वार नहीं कर सकती। —अ.वा.11.5.83पृ.199

अपने लिए भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ।......कुमारों का आपस में ग्रुप होना चाहिए। कभी कोई बीमार पडे तो एक की डयूटी हो। एक दूसरे की मदद कर सेवा करो। कभी भी पूंछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जाएंगे। बाहर से पता नहीं चलता लेकिन अगर लगा दिया तो मुश्किल हो जाएगी। अभी तो स्वतंत्र हो फिर जिम्मेवारी बढ जाऐगी। सभी ने बाप को कम्पेनियन बनाया हैं ना? तो एक कम्पेनियन छोडकर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक से भी अच्छा नहीं माना जाता। —अ.वा. 30.11.79 पृ.67

अगर सिर्फ कुमार रहेंगे तो माया आएगी, ब्रहमाकुमार रहेंगे तो माया भाग जाएगी। तो जैसे ब्रहमा आदि देव है, ब्रहमाकुमार भी आदि रत्न होंगे। आदि देव के बच्चे मास्टर आदि देव। आदि रत्न समझेंगे तो अपने जीवन के मूल्य को जानेंगे। —अ.वा. 30.11.79 पृ.66

कुमारियों को कहते हैं 100 ब्राहमणों से उत्तम कन्या और कुमार कितनों से श्रेष्ठ है? सात शीतलाओं के साथ एक कुमार दिखाते हैं तो आप 700 ब्राहमणों से उत्तम हुए।.......माया कितना भी हिलाने की कशिश करे लेकिन आप अंगद के मुआफिक जरा भी नहीं हिलो, नाखुन से भी हिला न सके। —अ.वा. 30.11.79 पृ.68

कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्ही से खेलूं , तुम्ही से खाउं— यह चित्र देखा है सखे रुप से। —अ.वा. 1.12.78 पृ.87

यह भी पूछना है कब से पवित्र रहते हो। अगर जवान लडका है, कहते हैं 6 मास से पवित्र रहते हैं तो विश्वास नहीं करना चाहिए। विषय सागर में गिर पडते हैं।......घडी घडी कशिश होती रहती है। —मुरली 12.4.69 पृ.3

शादी नहीं करते है तो उनको घर से निकाल देते हैं। कहते हैं कसाई बनो तो हमारे कुल में रहो। नहीं तो निकल जाओ। —मुरली 13.4.69 पृ.3

ifo=rk& ekrkvk dk lnHkk e

शिव भगवानुवाच माताऐं स्वर्ग का द्वार हैं और शंकराचार्य वाच्य नारी नर्क का द्वार खोलती हैं। तुम ब्राह्मणियां बन सबको स्वर्ग का द्वार दिखाती हो। —मुरली 26.5.74 पृ.2

कलियुगी मनुष्य की रसम रिवाज ही अलग, इन्हों का है विषय सागर में गोता खाना। यह विष खाना तो मीरा को भी पसन्द नही था। अभी तुम कितनी मीराएं हो। वह तो एक मीरा थी अब तुम सब मीराएं हो। कलियुगी लोकलाज कुल मर्यादा पसन्द नहीं करती हो। तुम कलियुगी लोकलाज छोड़ती हो तो कितना झगड़ा होता है। तुमको बाप ने श्रीमत दी है काम महाश्त्रु है। —मुरली 11.6.74 पृ..3

कोई कोई बड़े अच्छे फूल लाते है। तड़फते है बाबा पास जावें कैसे युक्तियों से बच्चियां आती हैं।....घर में मार खाती हैं तो भी कहती शिवबाबा हमारी रक्षा करो। उनको ही सच्ची द्रौपदी कहा जाता है। पास्ट जो हो गया सो फिर रिपीट होना है। कल पुकारा था ना। आज बाबा आए हैं बचाने के लिए। युक्तियां बतलाते हैं ऐसे ऐसे भूं भूं करो। तुम हो ब्राह्मणी। वह पति है कीड़ा। उन पर भूं भूं करते रहो। बोलो भगवानुवाच काम महाशत्रु है उनको जीतने से हम विश्व का मालिक बनते हैं। कोई न कोई समय अबलाओं के वाक्य लग जाते है तो फिर ठण्डे हो जाते हैं। कहते अच्छा भल जाओ। ऐसा बनानेवाले पास जाओ। मेरी तकदीर में नहीं है। तुम तो जाओ। ऐसे बहुत द्रौपदियां पुकारती हैं। बाबा लिखते हैं भूं भूं करो। कोई कोई स्त्रियां भी होती है जिनको सूपनखा, पूतना कहा जाता हैं, फिर पुरुष उनको भूं भूं करते हैं। वह कीड़ा बन पड़ती है। विकार बिगर रह नहीं सकती है। दुःशासन निर्विकारी और द्रौपदी पूतना बन पड़ती है। ऐसे भी होता है।....कोई कहती हैं पति मर गया है फिर भी दृष्टि दूसरे तरफ जाती है। चाचा मिला, मामा मिला, गुरु मिला, जो आया उनसे काला मुंह कर देती वा चेष्टा रखती हैं जिसको बाबा सेमी कहते हैं। बाप कहते हैं विकारी जो बनते हैं उनका काला मुंह होता है। पतित माना काला मुंह। —मुरली 16.7.74 पृ..3

कलगीधर बनने वालों पर कलंक भी लगते है इसमें नाराज न होना चाहिए। अखबार वाले कुछ भी खिलाफ डालते हैं क्योंकि पवित्रता की बात हैं। अबलाओं पर अत्याचार होंगे। कोई कोई भार्या भी ऐसे होती है डण्डा मारने में भी देरी नहीं करती पुरुषों को। कहेंगे यह क्या करते हो। क्या सीखकर आए हो। सारी दुनिया कैसे चलती। तुम टेढ़े बन पड़े हो। अकासुर, बकासुर नाम भी हैं, स्त्रियों के भी नाम पूतना, सूपनखा है बरोबर। —मुरली 10.8.79 पृ.2

बड़ी ते बड़ी चोट है विकार की। इसलिए कहा जाता है काम महाशत्रु है। यही पतित बनाते हैं। काम के उपर ही सारी कहानी है। स्त्री को भगाते हैं कामी पुरुष। नहीं तो भगाकर क्या करेंगे। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण ने कोई काम के लिए भगाया।....झगड़ा होता ही है विकार पर। विकार के लिए न छोड़ेंगे तो जरुर कहेंगे इससे तो बर्तन साफ करने में अच्छा है, पोंछा झाडू लगावेंगे परन्तु पवित्र रहेंगे। इसमें हिम्मत बहुत चाहिएं। बाप कहते हैं शरण दे सकते हैं परन्तु नष्टोमोहा भी चाहिए, जब कोई बाप की शरण में आते हैं तो फिर माया भी लड़ने शुरु करती है,पांच विकारों की बिमारी और ही उथलती है। पहले तो पक्का निश्चय बुद्धि होना चाहिए—जीते जी मरना है। —मुरली 6.8.71 पृ..3

अबलाओं पर अत्याचार होते हैं यह भी गायन है। विष के कारण बहुत मार खाती हैं। बहुत पापात्माएं हैं। कोई कोई स्त्रियां भी ऐसे हैं जो विष के लिए पति को तंग करती है।—मुरली 5.11.74

वह पति जो विष पिलाते हैं उनको कितना याद करते हैं और यहां बाप जो अमृत पिलाते हैं, कौड़ी से हीरा बनाते हैं उनको याद नहीं करते। ऐसे बाप को तो कितना याद करना चाहिए। –मुरली 9.4.72 पृ..3

बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार तुम बान्धेली गाई हुई हो। अबलाओं पर अत्याचार होते ही इस विख पर हैं। ड्रामा अनुसार यह भी होना है। ....मार खाकर आखिर आकर शरण लेती हैं ब्रह्माकुमारियों की। तुम जानते हो शिवबाबा की शरण लेनी होती है। सबसे समर्थ यह है। –मुरली 5. 8.71 पृ.4

काम का भूत है बहुत कडा। एकदम काला मुंह कर देते हैं। क्रोध काला मुंह नहीं करता है। रावणराज्य में ही यह विकार रुपी सर्प डसता है। स्त्री को नागिन कहते हैं। खुद भी तो बडे नाग हैं ना। यह भी बुद्धि में नहीं आता है। नाग बिगर नागिन कैसे कही जावेंगी। उन्होंने स्त्री का नाम बिगाडा है। अब फिर बाप नाम बाला करते हैं। शिवाचार्य कहते हैं हम माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। शंकराचार्य कहते हैं मातायें नर्क का द्वार खोलती हैं। –मुरली 9.8.71 पृ.4

पवित्रता पर ही झगडा पडता है। अगर जबरदस्ती गंदा करते हैं तो क्या कर सकती हो। अच्छा शिवबाबा को याद करती रहो। केस तो बहुत होते हैं ना। विघ्न तो बहुत पडेंगे।–मुरली 18.12.71 पृ.3

अत्याचार होते हैं तब तो पाप का घडा भरेगा। बाप कहते हैं थोडा सहन करना पडेगा। तुम अपने बाप को और वरसे को याद करते रहो। मार खाने समय भी बुद्धि में यह याद करो–शिवबाबा। –मुरली 2.6.71 पृ.3

माताओं को लिए तो बहुत खुशी की बात है– क्योंकि बाप आया ही है माताओं के लिए। गोपाल बनकर गौ माताओं के लिए आये हैं। इसी का तो यादगार गाया हुआ है। –अ.वा. 15.1.83

बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों को पुरानी दुनिया में कितना सहन करना पडता है। आत्मा के लिए मौजों का समय है लेकिन शरीर से सहन भी करना पडता है।.....भागवत आप सबके सहन शक्ति के चरित्रों का यादगार है। तो सहन करना नहीं लेकिन यादगार चित्र बन रहे हैं। अभी तक भी यही गायन सुन रहे हो कि भगवान के बच्चों ने बाप के मिलन के स्नेह में क्या–क्या किया। गोपीवल्लभ की गोप गापिकाओं ने क्या–क्या किया। तो यह सहन करना नहीं लेकिन सहन ही शक्तिशाली बना रहे हैं। –अ.वा. 19.5.83

माताएं तो बापदादा को अति प्रिय हैं क्योकि माताओं ने बहुत सहन किया है। तो बाप ऐसे बच्चों को सहन करने का फल सहयोग और स्नेह दे रहे हैं। सदा सुहागवती रहना। इस जीवन में कितना श्रेष्ठ सुहाग मिल गया है। जहां सुहाग है वहां भाग्य तो है ही। इसलिए सदा सुहागवती भव। –अ. वा. 1.11.81

माताऐं वा बहनें भी सदा अपने शिवशक्ति स्वरुप में स्थित रहें। मेरा विशेष भाई, विशेष स्टुडेन्ट नहीं। –अ.वा.27.4.83 पृ.167

हरेक शक्ति द्वारा बाप प्रत्यक्ष हो जाए। तभी जय–जयकार हो जायेगी। शक्तियों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हुई है तभी सदा शिवशक्ति इकट्ठा दिखाया है। जो शिव की पूजा करेंगे वह शक्ति की जरुर करेंगे। बाप और शक्तियों का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए पूजा साथ साथ होती है। शक्तियों ने बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराया है तभी तो पूजा होती है। –अ.वा. 30.11.79

मातायें गिरी तो चरणों तक, चढती हैं तो एकदम सिर का ताज। बहुत गिरा हुआ उंचा चढ जाए तो खुशी होगी ना। –अ.वा. 30.11.79

शक्तियां अपने शक्ति रुप में आ गई तो सभी की वायब्रेशन फैलता रहेगा। गृहस्थी में रहते ट्रस्टी होकर रहेंगी तो न्यारी रहेंगी। अपना और अन्य का जीवन सफल बनाने के निमित्त बनेंगे। सदा इसी नशे में रहो हम कल्प पहले वाली गोपियां हैं बाप मिला गोया सब कुछ मिला। कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। –अ.वा. 30.11.79

द्रौपदी ने भी पुकारा है– यह दुःशासन हमको नंगन करते हैं। यह भी खेल दिखाते हैं कि द्रौपदी को कृष्ण 21 साड़ियां देते हैं। –अ.वा. 2.9.89 पृ..3

माताओं की मदद से बहुत नाम बाला हो सकता है। जितने आये हैं उतने सभी हैंड्स सर्विस में मददगार बन जाए तो बहुत जल्दी नाम बाला कर सकते हो क्योंकि युगलमूर्त बन चलनेवाली हो। इसलिए ऐसे युगल सर्विस में बहुत अपना शो कर सकते हो। ऐसे कर्तव्य करके दिखाओ जो आपके कर्तव्य हर आत्मा को आप की तरफ आकर्षण करे। माताओं का ग्रुप सो भी ऐसी मातायें जो कि युगल रुप में चल रही हैं उनको समय निकालना सहज हो सकता है। .....जैसे एक एक कुमारी 100 ब्राहमणों से उत्तम गाई हुई है वैसे एक एक माता जगतमाता है। कहां 100 ब्राहमण कहां सारा जगत। तो किसकी उंची महिमा हुई? एक एक माता जगतमाता बनकर जगत की आत्माओं के उपर तरस, स्नेह और कल्याण की भावना रखो। –अ.वा. 1.3.71

बाप कहते हैं माताओं का नाम बहुत बाला करना है। पुरुषों को इसमें मदद करनी चाहिए। यह पवित्र रहने चाहती हैं तो पवित्र रहने दो। बाप सिद्ध कर बतलाते हैं नर्क का द्वार तो पुरुष बनते हैं। स्त्री का पति मर जाता है तो स्त्री विधवा बन जाती है। शादी भी नहीं करती। पुरुष तो दो तीन शादियां भी कर लेते हैं। वह थोड़े ही पत्नीव्रता बनते हैं? तो जास्ती नर्क का द्वार कौन हुए? शास्त्रों में तो द्रौपदी को पांच पति दिखाये हैं। इससे भी कितना नुकसान कर दिया है। ...लम्पट पुरुष होते हैं। 4–5 स्त्रियां भी रखते हैं। पैसे वाले बड़े बड़े आदमी गन्दे होते हैं।... स्त्री कब दूसरा पुरुष नहीं करती। तो बाप आकर माताओं और कुमारियां को उठाते हैं। ....मनुष्य समझते हैं विकार बिगर सृष्टि कैसे बढ़ेगी। बाप कहते हैं अब यह विष की पैदाईश कम हो।... मां–बाप कुमारी को कंस के हवाले करते हैं कुसने लिए। ...कंस जरासंधी रावण आदि यह सब आसुरी नाम हैं। –मुरली 6.3.73 पृ.3

माताओं का ही मुख्य काम है। सन्यासियों का भी उद्धार माताओं को करना है। –मु.7.3.73,पृ..3

त्रिया चरित्र तो मशहूर है। एक खेल है जिसमें दिखाया है अपन को बचाने लिए स्त्री कितने चरित्र करती है। तुम बहुत युक्तियां कर सकती हो। भक्ति में बैठ जाओ, कहो बाबा ने हमको साक्षात्कार कराया है, पतित दुनिया विनाश होनेवाली है, हम वैकुण्ठ भी देखते हैं। बाप कहते हैं खबरदार रहना विष पिया तो दोजख चली जावेंगे। पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। मैंने प्रतिज्ञा की है। ऐसे ऐसे युक्ति से समझाना है तुमको विष चाहिए तो भल दूसरी शादी कर लो। मुझे तो बाप से वर्सा लेना है। परन्तु पहले तो पक्की नष्टोमोहा वाली चाहिए। ऐसे नहीं फिर बच्चे

आदि याद पड़ते रहें। ...जो तीखे होंगे वह तो कहेंगे कुछ भी करो, मार डालो, हम पवित्र जरुर बनेंगे। भल बाहर जाकर गन्दा होता रहे। हम उनके पीछे क्यों अपनी जान गवाएं।...मार मार कर मार दे, तुम शिवबाबा की याद में रहो। बाबा की याद में मर जाओ तो भी बेड़ा पार है। बोलो तुम हमको सताते हो हम गवर्नमेन्ट को चिट्ठी लिखते हैं। हम भारत को पावन बनाने पवित्र बनती हैं यह पवित्र रहने न देता है। —मुरली 21.9.73 पृ.2,3

अधर कुमारी, कुमारी कन्या का मंदिर भी है ना। गृहस्थी से निकल कर फिर बापके बच्चे बने है तो उन्हों को अधर कहा जाता है। —मुरली 24.4.73 पृ..4

लिखते हैं द्रौपदी को पांच पति थे। अरे हिन्दू नारी को एक पति होता है पांच कैसे होंगे? —मुरली 3.5.73 पृ.2

बच्चियां कहती हैं ...बाबा आप अपनी शरण में लो। परन्तु इसमें भी खिटपिट होती है ना। गर्वनमेन्ट की भी खिट खिट होती है। फिर अखबारों में भी धूमधाम मचा देते हैं। तो बांधेलियों को बंद कर देते हैं। इसलिए खबरदारी से कदम उठाना है। एक के कारण बहुत बंद हो जाते हैं। —मुरली 12.4.69 पृ.4

बाप आकर माताओं को गुरु पद देते हैं। —मुरली 6.3.73 पृ..2

माता की महिमा है। सभी धर्मवालों के उपर माता होनी चाहिए। सभी को मां जगदम्बा बैठ लोरी दे। बच्चे पैदा होते हैं माता द्वारा। जगदम्बा माता ठहरी। तुम सभी को उनके आगे माथा झुकाना है। माता समझा सकती है यह भ्रष्टाचारी दुनिया श्रेष्ठाचारी कैसे बने वा इस भारत में शान्ति कैसे स्थापन हो। —मुरली 11.1.72 पृ.3

कई बच्चियां बहुत याद करती हैं। शिवबाबा कहने से ही कई बच्चों को प्रेम के आंसू आ जाते हैं— कब जाये मिलेंगे। देखा नहीं है तो भी तड़फते हैं। — मुरली 20.5.71

यह तो बाप जानते हैं विकार के लिए कितने झगडे करते हैं। विघ्न पडते हैं। कहते हैं—बाबा हमको पवित्र रहने नहीं देते। बाप कहते हैं अच्छा बच्चे तुम याद की यात्रा में रह, जन्मों जन्मान्तर के पाप जो सिर पर है वह बोझा उतारो। घर में बैठे शिवबाबा को याद करो। —मुरली 5.9.84 पृ.2

बाबा कहते हैं यह अत्याचार सहन करने पडेंगे बाबा के निमित्त। —मुरली 20.9.92

रुद्र ज्ञान यज्ञ में अनेक प्रकार के असुरों के विघ्न पडेंगे। फिर मनुष्य समझते हैं असुर लोग उपर से गोबर, गन्द आदि डालते थे, परन्तु नहीं। तुम देखते हो कितने विघ्न पडते है। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं तब तो पाप का घडा भरेगा। बाप कहते हैं थोडा सहन करना पडेगा। तुम अपना बाप और वर्से को याद करते रहो। मार खाते समय भी बुद्धि में यह याद करो—शिवबाबा।—मुरली 2.6.71 पृ.3

वास्तव में बाप तो आकर माताओं का मर्तबा उंचा करते हैं। गाया भी जाता है पहले लक्ष्मी पीछे नारायण। तो लक्ष्मी की इज्जत ज्यास्ती ठहरी। —मुरली 19.12.71 पृ.2

माताओं को विशेष खुशी होनी चाहिए कि हमारे लिए खास बाप आया हैं। और जो भी आए उन्होंने पुरुषों को आगे किया। धर्म पिताएं धर्म स्थापन करके चले गये। माताओं को किसी ने भी

नामीग्रामी नहीं बनाया। और बाप ने पहले माता का सिलसिला स्थापन किया। तो माताएं सिकिलधी हो गई ना? कितने सिक से बाप ने ढूंढा और अपना बना लिया। –अ. वा. 11.5.83 पृ.201

जब से बापदादा ने माताओं के उपर नजर डाली तबसे दुनियावालों ने भी ''लेडिज फर्स्ट'' का नारा जरुर लगाया। –अ. वा. 21.3.83 पृ.66

माताओं का एक अभ्यास होते है। उस अभ्यास को पक्का करने के लिए बुलाया है। वह कौनसा अभ्यास जो कुमारियों में नहीं, माताओं में होता है?– सती बनने का। सती बनना अर्थात पूरा ही बली चढना। सती बनने का मुख्य गुण क्या होता है? लगन लगाए बैठी होती है। सती बनने के लिए त्याग भी चाहिए, नष्टमोहा चाहिए। –अ. 15.9.69 पृ.103

ifo=rk&xgfLFk;ksa dks lnHkkoEk

घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता, ऐसे आपके घर से पवित्रता को खुशबू आये। जिस प्रकार अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैलती, इसी प्रकार पवित्रता की खुशबू दूर दूर तक फैलनी चाहिए, इसको कहा जाता है पवित्र प्रवृत्ति।–अ.वा. 17.10.81

अपनी विशेषता को जानते हो? इस ग्रुप की विशेषता क्या है? यह ग्रुप सन्यासी महात्माओं को भी नीचे झुकानेवाला है। सन्यासी अर्थात आजकल की महान आत्माएं। तो आजकल की महात्मा कहलाने वालों को भी अपने जीवन द्वारा बाप का परिचय दिलानेवाले हो।.....सभी की गाड़ी दो पहिये वाली ठीक चल रही है ना? कभी कोई पहिया नीचे उपर तो नहीं होता। एक पहिया आगे चले दूसरा पीछे ऐसे तो नहीं होता। आज सबकी यही विशषता हो– जो एक दो से आगे भी रहो और एक दो को आगे करने वाले भी। एक दो को आगे रखना ही आगे होना है। ऐसे नहीं मैं पुरुष हूं और वह समझे मैं शक्ति हूं। अगर आप शक्ति हो तो वह पाण्डव भी कम नहीं, तो शक्तियां भी कम नहीं। दोनों ही बाप के सहयोगी हैं इसलिए पाण्डव आगे हैं या शक्तियां आगे हैं, यह भी नहीं कह सकते। शक्तियों को ढाल इसलिए कहते हैं क्योंकि वह अपने को बहुत समय से नीचे समझती हैं, इसलिए नशा चढाने के लिए आगे रखा है। शक्तियों को आगे रखने में ही पाण्डवों का फायदा है। शक्ति पीछे रहेगी तो आपको भी पीछे खींच लेगी। क्योंकि शक्तियों में आकर्षण करने की शक्ति ज्यादा होती है। इसलिए शक्तियों को आगे रखना ही आपका आगे होना है। –अ.वा. 29.10.81

प्रवृत्ति में रहते भी सदा देह के सम्बन्ध से निवृत्त रहो। तभी पवित्र प्रवृत्ति का पार्ट बजा सकेंगे। मैं पुरुष हूं, यह स्त्री है, यह भान स्वप्न में भी नहीं आना चाहिए। आत्मा भाई–भाई हैं, तो स्त्री पुरुष कहां से आये। युगल तो आप और बाप हो ना, फिर यह मेरी युगल है– ऐसा कैसे कह सकते? यह तो निमित्त मात्र सिर्फ सेवा अर्थ है बाकी कम्बाइन्ड रुप तो आप और बाप हो। फिर भी बापदादा मुबारक देते हैं हिम्मत पर। –अ.वा. 29.10.81

जो प्रवृत्ति में रहते हैं उन्हों के लिए सहज बात इसीलिए है कि उन्हों के सामने सदैव कान्ट्रास्ट है। कान्ट्रास्ट होने के कारण निर्णय करना सहज हो जाता है। निर्णय करने की शक्ति कम है इस लिए सहज नहीं भासता है। एक बार जब अनुभव कर लिए कि इससे प्राप्ति क्या है तो फिर निर्णय हो ही जाता है। ठोकर का अनुभव एक बार किया तो फिर बार बार थोड़े ही ठोकर खायेंगे। निर्णय शक्ति कम है तो फिर मुश्किल भी हो जाता है। तो यह प्रवृत्ति में अथवा परिवार में रहते हैं उसके अनुभवी होने के कारण, सामने कान्ट्रास्ट होने के कारण धोखे से बच जाते है। –अ.वा. 13.3.71

अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठ गोरा बनते हो। बच्चो को भी यह पुरुषार्थ कराना है। हम ज्ञान चिता पर बैठे हैं तुम फिर काम चिता पर क्यों बैठने की जिद करते हो। अगर पुरुष ने ज्ञान उठाया स्त्री न उठाती हो तो भी झगड़ा हो पड़ता है। यज्ञ में विघ्न तो पड़ते ही हैं। यह ज्ञान कितना लम्बा चौड़ा है।–मुरली 1.5.72 पृ.2

बाप किसको भी कान से पकड़ सकते हैं। शर्म नहीं आता है। बाबा तुमको कहते हैं काला मुंह न करो। प्रतिज्ञा करो। क्या तुम यह प्रतिज्ञा नहीं कर सकते हो? भगवानुवाच है ना। आत्माओं का बाप है। एक वही सभी को पावन बनावेंगे। वही कहते हैं तुम पतित पत्थर बुद्धि न बनो। अब बाप कहते हैं ज्यास्ति पापात्मा न बनो, काला मुंह मत करो। अगर करेंगे तो धर्मराज डण्डा मार खत्म कर देंगे। यह बाप ही कर सकते हैं। तुमको शर्म नही आता है। यह सिर्फ अन्तिम जन्म पवित्र बनो तो तुम गोरा बनेंगे। तुमने 64 जन्म काला मुंह किया है। तो भी अजुन पेट नहीं भरा है। एक जन्म के लिए पवित्र नहीं बनते हो तो तुमको बहुत सजा मिलेगी। धर्मराज हड्डी तोड़ देंगे। तो भी समझते नहीं। बाबा अथवा मम्मा युक्ति से कह सकते हैं। मां तुमको कहती है काला मुंह न करो। तुम बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि, कंगाल विषयी बन गये हों। अब काला मुंह मत करो। नहीं तो थप्पड़ मार देंगे। मां कह सकती है। बच्चों को हक नहीं है। भाई–बहन तो आपस मे लड़ पड़े। मां–बाप का तो रिगार्ड रखते हैं। वह भी समझकर बोलना पड़ता है। नहीं तो झगड़ा हो जाए–मुरली..2.72 पृ.3

यहां है सभी नई बातें। ऐसा कोई पास कायदा नहीं है जो घर में गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पवित्र रहे। इसलिए यह नई बातें समझते हैं। विचार किया जाए प्रजापिता ने भी एडाप्ट किया होगा। छोटे बच्चे को थोड़े ही राजयोग सिखावेंगे। राजयोग तो प्रवृत्तिमार्ग वालों, बड़ों को सीखना पड़े। बड़ों को एडाप्ट किया होगा। जरुर भाई बहन बने होंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते दोनों पवित्र रहें। यहां मेहनत भी करनी पड़ती है। पवित्र प्रवृत्ति मार्ग बनाना है। पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था। अब अपवित्र हुआ है। फिर बाप ही आकर पवित्र बनाते हैं। सन्यासी तो भाग जाते हैं। वह ज्ञान तब दे जब खुद गृहस्थ व्यवहार में रहे। स्त्री पुरुष जो शादी किया हुआ है उनको कुछ डिफिकल्ट लगता हैं। दोनों काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठ जाए, बहादुरी है। बहादुरी से ही प्राप्ति होती है। सन्यासी आदि सभी अभी नहीं समझते हैं। जब तुम्हारी वृद्धि हो जावेगी फिर समझेंगे कोई ताकत हैं। ताकत तो ईश्वर की ही कहेंगे। ईश्वरीय ताकत नहीं परन्तु ईश्वर खुद ताकत दे रहे हैं रावण पर जीत पाने की।
–मु.14.8.72 पृ.3

काला मुंह तो करते हैं ना। नंगन तो होते हैं ना। बाप कहते हैं कोई भी हालत में नंगन न होना है। –मुरली 19.9.72 पृ.2

बड़ी युक्ति से स्थापना होती है। विघ्न भी पड़ेंगे, कितने अत्याचार होते हैं। मैजारिटी पुरुष जास्ती तंग करते हैं। कहां कहां स्त्रियां भी बड़ी तंग करती हैं। अब बाप माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। हैं तो पुरुष भी। माता जन्म देती है तो उनको पुरुष से इजाफा जास्ती मिलता है।–मु. 9.1. 74 पृ.3

जबकि बुद्धि की सगाई बाप से हुई है तो उनको याद करो ना। फिर दूसरे को क्यों याद करते हो। शर्म नहीं आती? किमिनल आंखें हो जाती है। सगाई अर्थात् बुद्धि में शिवबाबा की याद। स्त्री पुरुष को भी ऐसी सगाई हो जाती है ना। याद ठहर जाती है। –मुरली 14.11.74 पृ.2

बाबा के पास बहुत बच्चें हैं जो शादी करके भी पवित्र रहते हैं। सन्यासी तो कहते हैं यह हो नहीं सकता। जो दोनों इकट्ठे रह सकें। –मुरली 26.12.85 पृ.1

पहलवान से माया भी पहलवान हो लड़ती है। ....8–10 वर्ष बाद भी फिर काम से हार खा लेते हैं। इतना काम बलवान है। देह अभिमान में आने से झट विकार मुंह दिखाने आवेंगे।–मु.28.11.74 पृ.3

लिखते हैं बाबा हम काला मुंह कर बैठा, अब कृपा करो, क्षमा करो। अब इसमें क्षमा की तो बात ही नहीं। तमोप्रधान काम करने से तुम ही गिर पड़ते हो। वह खुशी, वह याद की यात्रा रह न सके। अपने पैर पर आपे ही कुल्हाड़ा मारते हैं। बाप सभी को आशीर्वाद देते हैं क्या? वह तो बात ही नहीं। संगदोष में आए अथवा माया के वश हो कुछ कर लिया। अपने पैर पर कुल्हाड़ा मारा।–मु.29.11.74,पृ.3

सतयुग में यह गन्दी चीजें मांस आदि होता ही नही। बाप कहते हैं विकारों को छोड़ दो। हम तुमको विश्व की बादशाही देते हैं कितनी आमदनी होती है। तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। सिर्फ एक जन्म पवित्र रहने से कितनी भारी आमदनीं होती है। भल इकट्ठे रहो ज्ञान तलवार बीच में हो। पवित्र रहकर दिखाया तो सबसे उंच पद पावेंगे। क्योंकि बाल ब्रहमचारी ठहरे। फिर नालेज भी चाहिए। औरों को आप समान बनाना है। सन्यासियों को दिखाना है कि कैसे हम इकट्ठे रहते भी पवित्र रहते हैं। तो समझेंगे इनमें बड़ी ताकत है। बाप कहते हैं यह एक जन्म पवित्र रहने से 21 जन्म तुम विश्व का मालिक बनेंगे। कितनी बड़ी प्राइज मिलती है। तो क्यों न पवित्र रह दिखावेंगे।–मुरली 19.7.74 पृ.3

इस प्रकार की कहानी है–एक कुमारी मटकी भरने जाती थी। वहां एक कुमार को कहा यह मटका मेरे सिर पर ऐसे रखो जो अंग से अंग न लगे। कहानी बहुत अच्छी बनाते हैं जो इस समय काम आती है। उसने कहा हम ऐसे ही मटका रखेंगे। अच्छा फिर अनायास दोनों की सगाई हो गई। सगाई तो बिगर देखे कर लेते हैं। सो जब एक दो को देखा तो कुमार ने कहा यह तो वही कुमारी है जिसने हमसे प्रण लिया था। बस वह प्रण याद आने से अलग अलग सो गए। प्रतिज्ञा की तलवार बीच में थी–अंग से अंग न लगे। थोडे दिन बाद मां–बाप ने पूछा तो बोला हमारा अंग अंग से नहीं लगता है क्योंकि हमारा ऐसे प्रण किया हुआ था। ऐसे कुछ कहानी है। यह भी ऐसे है ना। स्त्री पुरुष साथ रहते भी समझते हैं हमारी तो प्रतिज्ञा की हुई है अंग अंगसे न लगे। यहां बीच में ज्ञान तलवार है। उनकी थी प्रतिज्ञा का तलवार।.....परन्तु लिखते हैं बाबा कशिश होती है। वह अवस्था अजुन पक्की नहीं हुई है। कुछ न कुछ अंग लग जाते हैं। –मुरली 6.9.89 पृ.2

स्त्री के लिए पति से पूछो वा स्त्री से पति के लिए पूछो तो झट से बतायेगी इनमें यह खामियां है। इस बात में यह तंग करती है या तो कहेंगे हम दोनों ठीक चलते हैं। कोई किसको तंग नहीं करते हैं। दोनों एक दो के मददगार साथी हो चलते हैं। कोई तो एक दो को गिराने की कशिश करते हैं। –मुरली 29.10.84 पृ.3

पवित्रता के लिए बहुत मूंझते हैं कि क्या करें? कैसे कम्पेनियन होकर रहे? कम्पेनियन होकर रहने का भी अर्थ क्या है? विलायत में जब बूढा होते हैं तो फिर कम्पनियन रखने के लिए शादी कर लेते हैं सम्भाल के लिए। ऐसे बहुत हैं जो ब्रहमचारी हो रहना पसन्द करते हैं। –मुरली 11.7.84 पृ.1

बाबा आर्डिनेन्स निकालते हैं बच्चे काम महाशत्रु है। यह तुमको आदि, मध्य, अन्त दुःख देते हैं। अभी तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पावन बनना है। –मुरली 11.7.84 पृ.1

प्रवृत्ति वालों को बापदादा एक बात के लिए मुबारक देते हैं कि जब से प्रवृत्ति मार्ग वाले सेवा साथी बने हैं तो सेवा में नामबाला करने से एग्जाम्पल बने हैं। पहले लोग समझते थे कि ब्रहमा कुमार या ब्रहमा कुमारी बनना माना घरबार छोडना ....यह डर था ना। और अभी समझते हैं कि इन्हों को

तो घर भी अच्छा चलता, धन्धा भी बहुत अच्छा चलता, खुद भी खुश रहते, तो यह देख करके समझते कि हम भी बन सकते हैं। तो एग्जाम्पल बन गए ना। —अ.वा. 25.11.95

एक तो किसको दुःख नहीं देना है। ऐसे नहीं कोई को विष चाहिए, वह नहीं देते हो तो यह कोई दुःख देना है। ऐसे तो बाप कहते नहीं हैं। कोई ऐसे भी बुद्धु निकलते हैं जो कहते हैं —बाबा कहते हैं ना किसको दुःख नहीं देना है, अब यह विष मांगते है तो उनको देना चाहिए, नहीं तो यह भी किसको दुःख देना हुआ ना। ऐसे समझने वाले मूढमती भी हैं। बाप तो कहते हैं पवित्र जरुर बनना है। आसुरी चलन और दैवी चलन की भी समझ चाहिए। —मुरली 25.10.89

सदा कमल आसन पर विराजमान रहो। कभी भी पानी वा कीचड की बूंद स्पर्श न करे। कितनी भी आत्माओं के सम्पर्क में आते सदा न्यारे और प्यारे रहो। सेवा के अर्थ सम्पर्क है। देह का सम्बन्ध नहीं है, सेवा का सम्बन्ध है। प्रवृत्ति में सम्बन्ध के कारण नहीं रहे हो, सेवा के कारण रहे हो। —अ.वा. 28.4.82

फलक से कहते हैं ना कि आग कपूस इकटठा रहते भी आग नहीं लग सकती, चैलेन्ज है ना।... तो आप सभी युगलों की ये चैलेन्ज है या थोडी थोडी आग लगेगी फिर बुझा देंगे?—अ.वा.16.11.95पृ.24

पहली प्रवृत्ति देह के हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की और चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र प्रवृत्ति नही बना सकेंगे। —अ.वा.24.10.75 पृ.520

ये राजयोग खुद प्रवृत्ति में रहकर सिखाया होगा या निवृत्ति में रहकर सिखाया होगा? निवृत्ति मार्ग वाले प्रवृत्ति मार्ग वालों को राजयोग सिखलाए नहीं सकते।......लेकिन राजयोग तो अर्जुन जैसे गृहस्थियों को सिखलाया गया था या निवृत्ति मार्गवाले भीष्म पितामह आदि ने सीखा था? वो नहीं सिख सके। गृहस्थियों को ही प्रवृत्ति मार्गवालों को ही राजयोग सिखलाया जाता है। सिखलाने वाला स्वयं भी प्रवृत्ति मार्ग में होता है। ब्रहमा सरस्वती की प्रवृत्ति कहेंगे? वह तो उनकी बेटी थी। बाप और बेटी की प्रवृत्ति नहीं होती। तो क्या ब्रहमा द्वारा राजयोग नहीं सिखलाया? राजयोग सिखलाया तो राजयोग का रिजल्ट आना चाहिए।......राजा बने हैं? राजा बने या अधीन बन गए? —कैसेट 148 दि.22.4.89

यदि विकार में गया और बुद्धि से प्वाइन्टस एकदम निकल जावेगी। जैसे गूंगा बन जावेगा। —मु. 13.2.73 पृ.1

अपने को कमल पुष्प समान अति न्यारा और सदा बाप का प्यारा अनुभव करते हो? कमल पुष्प एक तो हलका होने कारण जल में रहते भी जल से न्यारा रहता है, प्रवृत्ति होते भी स्वयं निवृत्त रहता है। ऐसे ही आप सब भी लौकिक या अलौकिक प्रवृत्ति में रहते हुए भी निवृत्त अर्थात न्यारे रहते हो? निवृत्त रहने के लिए विशेष अपनी वृत्ति को चैक करो। जैसी वृत्ति वैसी प्रवृत्ति बनती है। वृत्ति कौनसी रहती है? आत्मिक वृत्ति और रुहानी वृत्ति। इस वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति में भी रुहानियत भर जाएगी अर्थात प्रवृत्ति में भी रुहानियत के कारण अमानत समझ कर चलेंगे। .....मेरेपन में ही मोह के साथ साथ अन्य विकारों की भी प्रवेशता होती है। मेरापन समाप्त होना अर्थात विकारो से मुक्त, निर्विकारी अर्थात पवित्र बनना है जिसमें प्रवृत्ति भी पवित्र प्रवृत्ति बन जाती है। विकारों का नष्ट होना अर्थात श्रेष्ठ बनना है।.......प्रवृत्ति को पवित्र प्रवृत्ति बनाया है? सबसे पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की

प्रवृत्ति फिर है देह की सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति, देह के हर कर्म इन्द्रिय को पवित्र बनाना है। —अ.वा. 24.10.75

जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की और चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र प्रवृत्ति नहीं बना सकेंगे। ब्रहमा कुमार और ब्रहमा कुमारी की प्रवृत्ति कौनसी है? जैसे हद के सम्बन्ध की प्रवृत्ति है वैसे ब्रहमा कुमार ओर कुमारी के नाते से सारी विश्व की आत्माओं से साकारी भाई बहन का सम्बन्ध—इतनी बडी बेहद की प्रवृत्ति है। लेकिन पहले अपनी देह की प्रवृत्ति बनावें, तब बेहद की प्रवृत्ति को भी पवित्र बना सकेंगे। कहावत है— चैरिटी बिगिन्स एट होम— पहले अपनी देह की प्रवृत्ति अर्थात घर को पवित्र बनाने की सेवा करनी है। फिर बेहद की करनी है। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रुपी घर को पवित्र बनाया है? संकल्प को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रुहानी अर्थात पवित्र बनाया है? जैसे दीपावली पर घर के हर कोने को स्वच्छ करते हैं—वैसे हर कर्मेन्दिय को स्वच्छ करते हैं, कोई एक कोना भी न रहे जाए इतना अटेन्शन रखते हैं— ऐसे हर कर्म इन्द्रिय को स्वच्छ बनाकर आत्मा का दीपक सदाकाल के लिए जगाया है? —अ.वा. 24.10.75

घर गृहस्थ के कीचड में रहते हुए भी कमल पुष्प समान वृत्ति से न्यारे रहे। तो ऐसा राजयोग जिन्होंने सीखा और परमात्मा बाप ने सिखाया। तो सिखानेवाला स्वयं प्रवृत्ति मार्ग में होगा या निवृत्तिमार्ग में होगा? वह भी प्रवृत्ति मार्ग में होगा।—कैसेट—102

प्रवृत्तिमार्ग की स्थापना होनी है। कोई निवृत्तिमार्ग की स्थापना नहीं होनी है। तो करानेवाला और करनेवाली दोनों ही मिल करके एक ही स्टेज पर होने चाहिए। आत्मा और शरीर या शरीरधारी—ये दोनों की प्रवृत्ति। तो यह प्रवृत्ति है। वो प्रवृत्ति ही सम्पन्न दुनिया की रचना करती है। —कैसेट 44

संग के रंग से ही पतन शुरु हुआ ना। भ्रष्ट इन्द्रिय के सहयोग से ही पतन शुरु हुआ। —और पावन बनने के लिए भी क्या करना पडे? पावन बनने के लिए भी शर्त है की दूरबाज, खुशबाज होने से काम नहीं चलेगा। दूरबाज होना, खुशबाज होना— यह सन्यासियों का काम है। सन्यासी दूर भागते हैं और समझते हैं हम पवित्र हैं। लेकिन बाप कहते हैं यह उनकी झूठी पवित्रता है। सच्ची पवित्रता क्या है?—साथ में रहकर और साथ में रहते हुए भी प्रवृत्ति मार्ग को वृत्ति में अपनाते हुए जीवन को सफल बनाना। वह बुद्धि में टच नहीं होना चाहिए संकल्प मात्र भी। इसलिए बाबा ने मुरलियों में बोला है—कर्म भले करो लेकिन कार्य करते हुए भी याद मुझे करो। भल कोई भी कर्म करो, तो कोई भी कर्म करने में तो सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म आ जाते हैं। लेकिन इस बात में 100% पास होनेवाली और नम्बरवार पास होनेवाली आत्मायें अलग अलग है। जो माला के मणके बनते हैं और उसी स्टेज को प्राप्त करते हैं, तो उनमें शिवबाबा का जो सेम्पल है, मंदिर में जिसकी पूजा होती है और सिर्फ भारतवर्ष में नहीं, विदेशों में भी उस रुप की पूजा होती है—वह सिर्फ एक ही युगल दिखाया गया है— वह भगवान—भगवती के रुप में पूजे जाते है। शंकर और पार्वती। और उनके लिए शास्त्र में जो दिखाया गया है उनका जन्म जन्म का साथ है। —कैसेट—103

प्रवृत्तिमार्ग की याद के लिए दोनों का समान सहयोग चाहिए। ऐसे नहीं हो कि एक योगी हो और एक भोगी हो। एक इन्द्रिय का रस लेनेवाला हो और एक इन्द्रिय के उपर कन्ट्रोल करनेवाला हो। तो योग के उपर सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, दोनों ही एक जैसे पुरुषार्थी चाहिए। तब ही सिद्ध हो सकता है। इसलिए भारतीय परम्परा में कोई भी अनुष्ठान करते है तो स्त्री—पुरुष की गांठ जोडी जाती है। तो कहते हैं यज्ञ अनुष्ठान सफल हुआ। माना दोनों के द्वारा जो कार्य किया जाता है उसमें सिद्ध

होती है। समान पुरुषार्थ होना चाहिए। इसलिए शिवलिंग को जलाधारी दिखाते है और शालीग्राम को जलाधारी नहीं दिखाते हैं। –कैसेट–260

ifo=rk& v/kj dekjk (ik.Mok) d lnHk e

पाण्डव अर्थात संकल्प और स्वप्न में भी हार न खानेवाले। विशेष यह स्लोगन याद रखना कि पाण्डव अर्थात सदा विजयी। स्वप्न भी विजय का आये। इतना परिवर्तन करना। सभी जो बैठे हो विजयी पाण्डव हो। वहां जाकर हार खा ली,यह पत्र तो नहीं लिखेंगे? माया आ नहीं जाती लेकिन आप उसे खुद बुलाते हो। कमजोर बनना अर्थात माया को बुलाना। तो किसी भी प्रकार की कमजोरी माया को बुलाती है तो पाण्डवों ने प्रतिज्ञा की? सदा विजयी रहेंगे,ऐसे प्रतिज्ञा करनेवालों को सदा बापदादा की बधाई मिलती रहती है।
–अ.वा. 17.4.83

दुनिया में और भी पुरुष है लेकिन उन्हों से न्यारे और बाप के प्यारे बन गए, इसलिए पुरुषोत्तम बन गए। औरों के बीच में अपने को अलौकिक समझते हो ना। चाहे सम्पर्क में लौकिक आत्माओं के आते लेकिन उनके बीच में रहते हुए भी मैं अलौकिक न्यारी हूं , यह तो कभी नहीं भूलना है ना। क्योंकि आप बन गए हो हंस, ज्ञान के मोती चुगनेवाले होली हंस हो। वह हैं गन्द खानेवाले बगुले। वे गन्द ही खाते, गन्द ही बोलते.....तो बगुलों के बीच में रहते हुए अपना होलीहंस जीवन कभी भूल तो नहीं जाते, कभी उसका प्रभाव तो नहीं पड जाता। वैसे तो उसका प्रभाव है मायावी और आप हो मायाजीत, तो आपका प्रभाव उन पर पडना चाहिए, इनका आप पर नहीं। सदा अपने को होलीहंस समझते हो? ....तो होलीहंस सदा स्वच्छ, सदा पवित्र। पवित्रता ही स्वच्छता है। .....होलीहंस संकल्प भी अशुद्ध नहीं कर सकते। संकल्प भी बुद्धि का भोजन है। अगर अशुद्ध वा व्यर्थ भोजन खाया तो सदा तन्दुरुस्त नहीं रह सकते। –अ.वा. 17.4.83

अपने को अधर कुमार तो समझते हो ना? संकल्प वा सम्बन्ध में अधर कुमार की स्मृति नहीं रहती है? जैसे देखो, पहले भाई बहन की स्मृति में भी कुछ देह अभिमान में आ जाते हैं, इसलिए उससे भी उंची स्टेज भाई भाई की बताई। ऐसे ही अपने को अधर कुमार समझकर चलते हो गोया प्रवृत्ति मार्ग के बन्धन में बंधी हुई आत्मा समझ कर चलते हो। इसलिए अब इस स्मृति से भी परे। अधर कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार हूं। अब मरजीवा बन गए तो मरजीवा जीवन में अधर कुमार का सम्बन्ध है क्या? मरजीवा जीवन में प्रवृत्ति वा गृहस्थी है क्या? मरजीवा जीवन में बापदादा ने किसको गृहस्थी बनाकर नहीं दी हैं। एक बाप और सभी बच्चे हैं ना, इसमें गृहस्थी पन कहां से आया? तो अपनको ब्रह्माकुमार समझकर चलना है। अगर अधर कुमार की स्मृति भी रहती है तो जैसी स्मृति वैसी स्थिति भी रहती है। इस कारण अभी इस स्मृति को भी खत्म करो कि हम अधरकुमार हैं। नहीं, ब्रहमाकुमार हूं। जो बापदादा ने ड्यूटी दी हैं ड्यूटी पर श्रीमत के आधार पर जा रहा हूं। मेरी प्रवृत्ति है या मेरी युगल है, यह स्मृति भी रांग है। युगल को युगल की वृत्ति से देखना वा घर को अपनी प्रवृत्ति की स्मृति से देखना इसको मरजीवा कहेंगे? जैसे देखो हर चीज को सम्भालने के लिए टृष्टि मुकर्रर किये जाते हैं। यह भी ऐसे समझकर चलो–यह जो हद की रचना बापदादा ने ट्रस्ट बनाकर सम्भालने के लिए दी हैं, वह मेरी रचना नहीं लेकिन बापदादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूं। ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं होता।.....जैसे साकार में बाप को देखा, लौकिक सम्बन्ध की वृत्ति, दृष्टि व स्मृति स्वप्न में भी, संकल्प में थी? तो फालो फादर करना है ना। क्या वही लौकिक सम्बन्धी साथ नहीं रहते थे क्या? तो आप लोगों को भी साथ रहते हुए इस स्मृति और वृत्ति

में चलने की हिम्मत रखनी है। इस भट्टी में क्या परिवर्तन करके जायेंगे? अधर कुमार का नाम निशान समाप्त। —अ.वा. 12.7.72

रोज रोज कितना समझाया जाता है फिर भी साण्डेपने का देह अभिमान बडा मुश्किल टूटता है। यही महारोग है।.....देही अभिमानी बने तब काम पर जीत पा सके। —मुरली 15.11.74 पृ.3

आज बहुत अच्छी रीति याद करते हैं। कल देह के अहंकार में ऐसे आ जाते हैं जैसे साण्डे। साण्डे को अहंकार बहुत होता है। इसमें एक कहावत है सरमण्डल के साज से देहअभिमानी साण्डे क्या जाने।.......ऐसे साण्डे लोग बाप के आगे भी गुर्र गुर्र करते हैं। ऐसे फीलिंग आती है। बहुत देहअभिमानी साण्डे हैं। —मुरली 5.11.74 पृ.1

एक तो काम महाशत्रु है, पुरुषों को सत्यानाश कर देते है। जैसे उंट का मिसाल देते हैं। वह अपने ही मूत में खिसकता है। इनके पैर बहुत लम्बा होते हैं। यह भी मनुष्य ह्यूमन उंट हैं। घडी घडी अपने ही मूत में गिर पडते हैं। इसलिए माताओं ने पुकारा हमें नंगन होने से बचाओ।—मु. 9.7.71 पृ.2

बाप ऐसे नहीं कहते स्त्री को मां कहो, बाप तो कहते हैं—उनको भी आत्मा समझो। आत्माएं तो सब भाई भाई हैं। बाप से प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम कब विकार में नहीं जाएंगे। बाप से तो 21 जन्मों का वर्सा जरुर लेंगे। फिर भी गिर पडते हैं। स्त्री का मुंह देखा और खलास। अक्ल चट हो जाती है। बाप कहते हैं काम विकार पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे।.......एक दो को देखने से काम की आग लग जाती है। बाप कहते हैं काम चिता पर बैठ तुम कितने सांवरे बन गए हो। अब फिर तुमको गोरा बनाते हैं। — मुरली 22.1.74 पृ.1

बाप कहते हैं मेरी खातिर अब तुम पतित मत बनो। भल स्त्री सामने हो, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देखते हुए नहीं देखो। —मुरली 14.7.84 पृ.2

बहुत तूफान आवेंगे। बूढा होगा 80 वर्ष का, उनको भी ऐसे तूफान आवेंगे बात मत पूछो। खबरदार रहना है। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म न करना है। नहीं तो सौगुणा पाप बन जाता है। —मुरली 2.6.71 पृ.4

रावण राज्य में ही यह विकार रुपी सर्प डंसता है। स्त्री को नागिन कहते हैं। खुद भी तो बडे नाग है ना। यह भी बुद्धि में नहीं आता है। नाग बिगर नागिन कैसे कही जावेगी। उन्होंने स्त्री का नाम बिगाडा है। अब फिर बाप नाम बाला करते हैं। —मुरली 9.8.71 पृ.4

एक तो है काम कटारी की मारामारी। दूसरी फिर यह मारामारी काम के लिए स्त्री को भी मार देते हैं। —मुरली 18.12.71 पृ.3

कोई पतित भी होते हैं। चलते चलते गिर पडते हैं। तो छिप कर फिर आकर अमृत पीते हैं। वास्तव में जो अमृत छोड विष खाते हैं उनको कुछ समय आने नहीं देते। परन्तु यह भी गायन है जब अमृत बांटा जाता था तो विकारी असुर छिपकर आए बैठते थे। कहते हैं इन्द्रसभा में ऐसे अपवित्र आकर बैठे। एक परी उस विकारी को ले आई फिर उनका क्या हाल हुआ। विकारी तो जरुर गिरेंगे।......कहते हैं वह पत्थर जाकर बना। अब ऐसे नहीं कि पत्थर वा झाड कोई मनुष्य बनते हैं, नहीं। पत्थर बुद्धि बन गए हैं। —मुरली 6.9.84 पृ.1

ऐसे तो पाण्डव भी किसी हिसाब से नारियां ही हो। आत्मा नारी है और परमात्मा पुरुष है। तो क्या हुआ। आत्मा कहती है। आत्मा कहता है– ऐसे नहीं कहा जाता। कुछ भी बन जाओ लेकिन नारी तो हो। परमात्मा के आगे तो आत्मा नारी है। आशिक नहीं हो, सर्व सम्बन्ध एक बाप से निभानेवाले हो। –अ. वा. 21.3.83 पृ.66

अधर कुमारों का ग्रुप है– कमल पुष्पों का गुलदस्ता। प्रवृत्ति में रहते विघ्न विनाशक की स्टेज पर रहते हो ना? ...जेसे एक घण्टा सफल करते हो तो लाख गुणा जमा होता है ऐसे एक घण्टा वेस्ट जाता है तो लाख गुणा घाटा होता है। इसलिए अब व्यर्थ का खाता बन्द करो। हर सेकण्ड अटेन्शन।–अ. वा. 30.11.79 पृ.69

ईश्वरीय दरबार में कोई असुर रह न सके। मूत पलीती मनुष्य को बैठने का हुक्म नहीं हैं –मुरली 15.3.72 पृ.3

पहले पहले दुर्योधन ही स्त्री को नंगन करते हैं। ऐसे नहीं स्त्री पूरुष को नंगन करती है। स्त्री में शर्म रहता है। पुरुष निर्लज्ज होते हैं। इसलिए दिखाते हैं द्रौपदी की चीर उतारी थी। हर एक मनुष्य मात्र दुर्योधन, स्त्री द्रौपदी। –मुरली 13.4.73 पृ.5

मेल्स भी ऐसे बहुत दवाइयों से ;कर्मेन्द्रियों की चंचलता कोद्ध खत्म कर देते हैं। फिर नंगे रहते हैं। नहीं तो नंगा रहना मासी का घर नहीं है। –मुरली 21.4.74 पृ.3

अधर कुमारी, कुमारी कन्या का मंदिर भी है ना। गृहस्थी से निकल कर फिर बाप के बच्चे बने हैं तो उन्हों को अधर कहा जाता है। –मुरली 24.4.73 पृ.4

तुम विश्व का मालिक बनेंगे। कितनी बडी प्राइज मिलती है तो क्यों न पवित्र रह दिखावेंगे। –मुरली 19.7.74पृ.3

ifo=rk& lU;kfl;k d lUnHk e

भ्रष्टाचारी का मतलब यह नहीं चोरी, ठगी आदि करना। ला कहता है जो भी विकार में जाते हैं वह भ्रष्टाचारी ही हैं। कहेंगे सन्यासी तो विकार में नहीं जाते हैं। परन्तु जन्म तो भ्रष्टाचार से लेते हैं ना।......सन्यासी भी भ्रष्टाचारी हैं क्योंकि विख से पैदा होते हैं। –मुरली 4.2.72 पृ.1

सन्यासी पवित्र बनते है तो अपवित्र उनको माथा टेकते हैं। सन्यासी को गृहस्थी टट्टू को फालो भी करते नहीं हैं। सिर्फ कह देते हैं फलाने सन्यासी का फालोअर हैं। सो तो जब फालो करे। तुम भी फलाने सन्यासी बन जाओ तब कहेंगे फालोअर। सन्यास किया हैं विकारों का?.....न सन्यासी उनको समझाते हैं न वह खुद समझते हैं। हम फालो तो करते नहीं हैं। यहां तो पूरा फालो करना है मातपिता को।.....कल्प कल्प हम कन्ट्रैक्टर को ही बुलाते हैं कि हे पतित पावन आओ।.......साधु सन्त आदि कोई कुछ कह न सके।......सन्यासियों को फिर कान्ट्रैक्ट मिला हुआ है भारत को थमाने का क्योंकि सभी से पवित्र भारत ही था।–मुरली 28.11.71

जितना योगी बनते जावेंगे कर्मेन्द्रियां शान्त होती जावेंगी। देह अभिमान में आने से कर्मेन्द्रियां चंचल होती हैं। आत्मा जानती है हमको प्राप्ति हो रही है। शरीर से अलग होते जावेंगे। कर्मेन्द्रियां

निसती जावेंगी। सन्यासी लोग भी दवाइयां खाकर कर्मेन्द्रियों को शान्त करते हैं। वह तो हठ हो गया ना। तुमको तो योगबल से काम लेना है। योगबल से तुम बस नहीं कर सकते हो? जितना आत्मा अभिमानी होते जावेंगे तो कर्मेन्द्रियां शान्त हो जावेंगी। बडी मेहनत करनी पडती है।–मु. 6.8.71 पृ.4

बाबा के पास बहुत बच्चे हैं जो शादी करके भी पवित्र रहते हैं। सन्यासी तो कहते हैं यह हो नही सकता– जो दोनों इकट्ठा रह सकें। –मुरली 26.12.85 पृ.1

अरविन्द घोष को 50–60 वर्ष हुए, अब तो देखो कितने उनके आश्रम बन गये हैं। वहां कोई निर्विकारी बनने की बात थोडेई है। वह तो समझते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र कोई रह नहीं सकता। सन्यासी खुद भी समझते हैं हम ही नहीं रह सकते तो दूसरे को कैसे कहें। अभी तो सब तमोप्रधान हैं। माताएं, सन्यासियों को फिर अपने गुरु बना बैठती, लज्जा नहीं आती कि उन्होंने तो हमारी हमजिन्स को तलाक दे दिया है। फिर भी उनको गुरु बनाती रहती है। गुरुओं की चेलियां बन जाती। बहुत गन्दे बन जाते। बाप तो ऐसे नहीं कहते हैं। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ यह एक जन्म पवित्र बनो। जन्म जन्मान्तर तो पतित रहे हो। –मुरली 7.9.75 पृ.3

सान्यासी भी ऐसे नहीं कहेंगे पवित्र बनो। क्योंकि खुद ही शादियां कराते हैं। अच्छा मास मास विकार में जाओ, गृहस्थियों को यह कहेंगे। ब्रह्मचारियों को ऐसे नहीं कहेंगे कि शादी नहीं करना है–मुरली 18.7.89 पृ.2

छोटे छोटे मठ पंथ कितने निकलते रहते हैं। अरविन्द आश्रम कितना जल्दी वृद्धि को पाते हैं क्योंकि उनमें विकार के लिए कोई मना नहीं करते हैं।......गीता पाठी कहते भी है–भगवानुवाच काम महाशत्रु है, उनको जीतने से तुम जगतजीत बनेंगे।.....बहुत प्यार से पूछना चाहिए। स्वामीजी आपने सुनाया काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से जगतजीत, विश्व का मालिक बनेंगे फिर आप यह तो बताते नहीं कि पवित्र कैसे बनें –मु.20.4.69 पृ.2

ग्रन्थ पढने पर बैठते हैं तो ऐसे भी नहीं सभी निर्विकारी होते हैं। पैदा तो सभी भ्रष्टाचार से ही होते हैं। फिर उनमें कोई अच्छे बुरे होते हैं। कोई अच्छे, कोई बहुत विकारी भी होते हैं। सन्यासियों में भी ऐसे होते हैं। शेरवाला सन्यासी था। पहले सन्यासी था फिर गृहस्थी बना है। कुमारियां आदि बहुत जाती थी। आखरीन शादी कर ली। फिर बच्चे भी हुए। दूसरे कोई से बच्चे हो जाए तो नाम बदनाम हो जाए। सन्यासी का तो और ही नाम बदनाम हो जाए। –मुरली 14.1.71 पृ.3

उनका हठयोग अच्छा भी है, बुरा भी है। क्योंकि देवताएं जब वाममार्ग में जाते हैं तो भारत को थमाने लिए पवित्रता जरुर चाहिए। तो उसमें भी मदद करते हैं। –मुरली 31.10.84पृ.3

कई वल्लभाचारी भी होते हैं, टच नहीं करने देते। तुम जानते हो उन्हों की आत्मा कोई निर्विकारी पवित्र नहीं होती है।.....यह भी नहीं समझते कि हम विकारी अपवित्र हैं। शरीर तो भ्रष्टाचार से पैदा हुआ है –मु.7.9.84 पृ.2

परन्तु वह सन्यासी अगर पावन होते तो फिर गंगा में स्नान क्यों करते? –मुरली 6.9.75 पृ.3

यह जो भी अल्पकाल की सिद्धिवाले हैं, अल्पकाल की कुछ न कुछ पवित्रता की विधियों से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करते हैं। यह सदा नहीं चल सकती है। यह भी गोल्डन एज्ड आत्माओं को अर्थात लास्ट में उपर से आई हुई आत्माओं को पवित्र मुक्तिधाम से आने के कारण और ड्रामा के

नियम प्रमाण सतोप्रधान स्टेज के प्रमाण पवित्रता के फलस्वरुप अल्पकाल की सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं लेकिन थोडे समय में ही सतो, रजो, तमो– तीनों स्टेजस पास करनेवाली आत्मायें हैं। इसलिए सदाकाल की सिद्धि नहीं रहती। परमात्म विधि से सिद्धि नहीं हैं इसलिए कहां न कहां स्वार्थ व अभिमान सिद्धि को समाप्त कर लेता है। लेकिन आप पवित्र आत्माएं सदा सिद्धि स्वरुप हैं, सदा की प्राप्ति करानेवाली हैं। सिर्फ चमत्कार करानेवाली नहीं हो लेकिन चमकती हुई ज्योतिस्वरुप बनानेवाले हो, अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनानेवाले हो। इसलिए यह सब सहारे अब थोडे समय के लिए हैं और आखिर में आप पवित्र आत्माओं के पास ही अंचली लेने आयेंगे। जैसे हद के सन्यासी अपने घर का, सम्बन्ध का त्याग करके जाते हैं, और अगर फिर वापिस आ जाए तो उसको क्या कहा जाएगा। नियम प्रमाण वापस नहीं आ सकते। ऐसे आप ब्राह्मण बेहद के सन्यासी वा त्यागी हो। आप त्याग मूर्तियों ने अपने उस पुराने घर अर्थात पुराने शरीर, पुराने देह का भान का त्याग किया, संकल्प किया कि बुद्धि द्वारा फिर से कब इस पुराने घर में आकर्षित नहीं होंगे। –अ.वा. 3.4.82 पृ.336

आगे चलकर आजकल की दुनिया में ये सभी जो भी अपने को धर्म आत्मा, महान आत्मा कहलाते हैं, उन्हों की भी पवित्रता के फाउण्डेशन हिलेंगे।......सभी नए, चाहे कुमारियां हैं, चाहे कुमार हैं, चाहे प्रवृत्तिवाले हैं, प्रवृत्ति वालों को तो इन सभी महात्माओं को चरणों में झुकाना है। सब आपके गुण गाएंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ रहे हैं। एक दिन आएगा जो आप सबके आगे ये महान आत्मा झुकेंगे। लेकिन अपना वायदा याद रखना, लगाव मुक्त रहना। –अ.वा. 16.4.95 पृ.29

आंखे बहुत धोखा देनेवाली है। इसलिए सन्यासी लोग आंखे बन्द कर बैठते हैं, स्त्री को पिछाडी में पुरुष को आगे में बिठाते है। कोई ऐसे भी होते हैं स्त्री को बिल्कुल देखते ही नहीं हैं।
–मु.20.5.71 पृ.1

पूछा जाता है आपने सन्यास क्यों किया? घरबार क्यों छोडा? कहते थे विकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, इसलिए घरबार छोडा जाता है। अच्छा जंगल में जाकर रहते हो फिर घरबार की याद आती होगी। बोला हां। बाबा का देखा हुआ है, एक सन्यासी तो फिर वापस घर भी आ गया था।......कुम्भ के मेले में बहुत छोटे छोटे नांगे लोग जाते हैं। दवाई खिलाते हैं जिससे कर्मेन्द्रियां ठण्डी पड जाती है। तुम्हारा तो है योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश में करना। योगबल से वश होते होते आखरीन ठण्डी हो ही जाएंगी। –मुरली 21.8.84 पृ.2

पहले पहले जब भीख मांगने आते थे तो आंखें नीचे कर सिर्फ कहते थे माता भिक्षा। बस। ऐसे के फिर माताएं पैर बैठ छुएं, क्या यह मान है? माताओं से यह काम कराना होता है क्या? इसलिए मम्मा ने इन सबको लिखा था यह श्री श्री 108 जगतगुरु कहलाते हैं। अब वास्तव में जगत अर्थात सारी वर्ल्ड हो गई। –मुरली 1.9.84 पृ.3

स्त्री जिसको सन्यासी विधवा बनाकर चले जाते, जिनके लिए कहते नर्क का द्वार है, उन स्त्रियों के ही गुरु बन बैठते हैं।.....अब तुम तो उन गुरुओं से बच गए। –मुरली 1.9.84 पृ.2

मनुष्य समझते हैं साधु लोग तो पवित्र हैं क्योंकि विकारों का सन्यास किया हुआ है। तब विकारी मनुष्य निर्विकारियों के आगे माथा टेकते है। उनको अपना गुरु बनाते हैं, परन्तु वह अगर पावन होते तो फिर गंगा में स्नान क्यों करते। गंगा को पतित पावनी समझते हैं। तो इससे सिद्ध होता है सन्यासी भी पतित हैं क्योंकि विख से पैदा होते हैं। जन्म गृहस्थियों पास लेते है फिर संस्कारों अनुसार सन्यास घराने में चले जाते हैं। गृहस्थियों का अन्न खाते हैं। उनका उद्धार तो कर नहीं सकते। मुफ्त

का अन्न खाते हैं। इसलिए फिर विष से गृहस्थियों के घर में जन्म लेते हैं। देवताएं कब विकार से नहीं पैदा होते। —मुरली 5.7.75

सन्यासी सन्यास करते हैं, इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया हैं वह भी सभी पुर्नजन्म लेते हैं।....विष से जन्म ले फिर बडे बालिग बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं।......उन्हों को तो गृहस्थी घर में जन्म लेना पडे। उनको कहा भी जाता है हद का सन्यास। महान आत्मा न कि महान परमात्मा। मुरली 19.8.89 पृ.1

यहां के सन्यासी भल पवित्र बनते हैं फिर भी विकार से पैदा होते हैं।......यह है निवृत्ति मार्ग के। स्त्रियां तो धक्के खा न सकें। यह सब अभी कलियुग में खराबियां हो गई हैं। स्त्रियों को भी सन्यासी बनाकर ले जाते हैं। फिर भी उन्हों की पवित्रता पर भारत थमा रहता है। जैसे पुराने मकान को पोची आदि लगाई जाती है तो जैसे नया बन जाता है। यह सन्यासी भी पोची दे कुछ बचाव करते हैं। —मुरली 31.8.89

विवेकानन्द और रामकृष्ण भी दो बडे सन्यासी होकर गए हैं। सन्यास की ताकत रामकृष्ण में थी। बाकि भक्ति का समझाना करना वह विवेकानन्द का था। ......बाप ऐसे नहीं कहते कि स्त्री को मां कहो। बाप तो कहते हैं उनको भी आत्मा समझो। सन्यासियों की बात अलग है। उसने ने स्त्री को मां समझा। मां की बैठ बडाई की है। यह ज्ञान का रास्ता है, वैराग की बात अलग है, वैराग में आकर स्त्री को मां समझा। माता अक्षर में क्रिमिनल आई नहीं होगी। बहन में भी क्रिमिनल दृष्टि जा सकती है। माता में कभी खराब ख्याल नहीं जायेंगे, बहन से आ जाते हैं। शादी भी कर लेते हैं। बाप की बच्चे में क्रिमिनल दृष्टि जा सकती है, मां में कभी नहीं जाएगी। सन्यासी स्त्री को मां समझने लगा, उनके लिए ऐसे नहीं कहते कि दुनिया कैसे चलेगी? पैदाइस कैसे होगी? —मुरली 1.9.89 पृ.2

ऐसे नहीं यहां आकर रहना है, वह तो फिर सन्यास हो गया। घरबार छोड यहां आकर रहें। तुमको तो कहा जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। —मुरली 1.9.89 पृ.2

सन्यासियों की माला होती नहीं। वह है निवृत्तिमार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्गवालों को ज्ञान दे न सकें पवित्र बनने के लिए। —मुरली 19.8.89 पृ.2

सतोप्रधान सन्यासी जो थे वह बहुत निडर रहते थे। जानवर आदि कोई से डरते नहीं थे। उस नशे में रहते थे।......उनमें बडी कशिश होती थी। जंगल में भोजन मिलता था। दिन प्रतिदिन तमोप्रधान होने से ताकत कम होती जाती है। —मुरली 11.10.89 पृ.2

पोप कितना शादियां कराते हैं। बाबा तो यह काम नहीं करते। सन्यासी निवृत्ति मार्गवाले भी शादी सगाई कराते हैं। भल खुद पवित्र हैं फिर भी दूसरों को पवित्र बनाने शादी कराते हैं। लोग इसको पतितपना नहीं समझते हैं। जबकि खुद पवित्र बनते हैं तो फिर औरों को पतित क्यों बनाते हैं। —मुरली 30.10.90

सन्यासी तो है ही निवृत्ति मार्गवाले। वास्तव में उन्हों को मंदिर आदि में जाने का भी हक नहीं। दूसरे धर्म में वा भक्तिमार्ग में इनको घुसना नहीं चाहिए। भक्तिमार्ग तो प्रवृत्तिमार्ग वालों के लिए है।—मुरली 20.9.92

सिर्फ पुरुषों को सन्यास कराये मिशन बढाते है। यह भी समझते है कि पुरुष प्रबल होता है। पुरुष को दूर कर दो तो स़्त्री आपे ही पवित्र बन जायेगी। तो पुरुष को सन्यास कराये सिर्फ मिशन बढाते है। बाप फिर प्रवृत्ति मार्ग की नई मिशन बनाते हैं। क्या बाप पुरुषों को सन्यास नहीं कराते? सिर्फ बाप बेहद का सन्यास कराते हैं स्त्री को भी और पुरुषों को भी। –कैसेट–168

भीष्म पितामह सन्यासी थे। अपने को पवित्र समझते थे। लेकिन वास्तव में सन्यासियों को परमात्मा नहीं मिलता, किसको मिलता है?– जो घर गृहस्थ की कीचड में रहनेवाले निरहंकारी गृहस्थी है उनको परमात्मा मिलता है क्योंकि परमात्मा का एम आबजेक्ट है– पतितों को पावन बनाना। जो घर घाट को छोडने वाले– चाहे लौकिक परिवार हो, चाहे अलौकिक परिवार हो, तो परिवार को छोडने वाले को क्या कहा जाता है?– सन्यासी कहा जाता है। –कैसेट–94

सन्यासी प्रवृत्तिमार्ग वाले घर गृहस्थ में रहते हुए, साथ में सोते हुए भी हर कर्मेन्द्रिय पर विजय प्राप्त करके दिखाए। दूरबाज, खुशबाज–ये तो सन्यासी भी बनते रहे। अगर दूरबाज, खुशबाज होते रहे तो फिर सन्यास धर्म ही स्थापन होगा या प्रवृत्तिमार्ग ? प्रवृत्तिमार्ग स्थापन करनेवाला कोई प्रवृत्तिमार्ग वाला गुरु ही होना चाहिए। –कैसेट 44

जिसका शरीर ही नहीं वह फिर एवर प्यौर काहे का? ऐसे नहीं कि निराकार– शरीर नहीं, इसलिए एवर प्यौर। लेकिन वह शरीर में आता है, वह शरीर से ऐसे पार्ट बजाता है–उससे पता चलता है एवर प्यौर। जैसे सन्यासी – वह तो दूर रहते हैं, तो उनको एवर प्यौर कैसे कहा जाए? ऐसी क्लोज कान्टेक्ट में आते हुए भी क्षरण न हो।–कैसेट–3

ifo=rk& o';kvk d lnHk e

बाप कहते हैं गणिकाओं आदि को उठाओ। सबसे डर्टी है वेश्याएं। एक है कामन, दूसरी खास। स्त्री और पुरुष में स्त्री है खाश। बाकी वह काम दुकान निकाल बैठती। सतयुग में ऐसी बात होती नहीं। वह है ही शिवालय बेहद का। अभी बेहद का वेश्यालय है। बिल्कुल तमोप्रधान हैं। इससे ज्यास्ति मार्जिन नहीं।–मुरली 9.1.74 पृ.3

बाबा को वण्डर लगता है–एक दिन गणिकाएं आदि भी आकर समझ जावेगी। पिछाडी में आनेवाले तीखे हो जावेंगे। –मुरली 29.1.79 पृ.2

बाप ने समझाया है वेश्या है अधम ते अधम। वह अच्छी रीति आकर समझो। उन्हों को रहना तो फिर भी घर में ही है। ऐसे नहीं कि उनको बैठ हम खिलावेंगे, रहावेंगे। वह तो जैसे अपने घर में रहती है वैसे ही रहे। सिर्फ छुट्टी ले आकर पडे। –मुरली 29.4.69 पृ.2

बाबा तो कहते हैं वेश्याओं को भी उठाना है। यह है ही वेश्यालय। भारत का नाम भी इन्होंने गिराया है। इसमें मुख्य चाहिए योगबल। यह बिल्कुल ही पतित हैं। पावन होने लिए याद की यात्रा चाहिए। अभी वह याद का बल बहुत कम है। वेश्याओं को भी आत्मा समझ उठाओं फिर घृणा नहीं आवेगी। आत्माएं तो सब गिरी हुई हैं परन्तु उनके लिए घृणा आती है। यह है नम्बरवन पतित। सो फिर नम्बरवन पावन बनना है। करके यह जन्म अच्छा था परन्तु है तो नम्बरवन पतित न। तो इन गणिकाओं को भी उठाना है तब तुम्हारा नामबाला होगा। अपन को आत्मा निश्चय कर बोलेंगे कि हम भाई को समझाते हैं तो फिर घृणा नहीं आवेगीं परन्तु वह अवस्था नहीं है।.......गणिकाओं का भी उद्धार करना है ना। अच्छी अच्छी माताएं अनुभवी हों जो जाकर समझावे। कन्याओं को तो अनुभव नहीं है।

माताएं समझा सकेंगी। हम भी ऐसे थीं।.....अब बाप कहते हैं पवित्र बनो तो तुम विश्व का मालिक बन जावेंगी, यह दुनिया ही शिवालय बन जावेंगी। ......ऐसे नहीं कि वेश्याएं सुधर नहीं सकती हैं। यह भी आवेंगी। तुम बीडा उठाती हो फिर हिम्मत छोड देती है। वेश्याओं की हेड को निमन्त्रण देना चाहिए कि सबको ले आओ। सतयुगी शिवालय में 21 जन्म उंच पद पा सकती हो। यहां तो कितना दुःख है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। उन्हों की एसोसिएशन तो बहुत हैं। उनमें भी नम्बरवार होती हैं। कोई तो बडी साहुकार, अच्छे अच्छे मकान होते हैं। तुमको गवर्न्मेन्ट से सब पता पड सकता है। उन्हों को भी तुम समझाओ। बाप कहते हैं अब प्रतिज्ञा करो पवित्र बनने की। निकालेंगी परन्तु अब देहअभिमान टूटा नहीं है ऐसे पतितों को पावन बनाने के लिए योगबल की तलवार भी तीखी चाहिए। इसमें शायद अभी देरी है। वेश्याओं के लिए गर्वमेन्ट से बात करनी चाहिए। समझानेवालों में भी नम्बरवार हैं।.....वेश्याएं, गणिकाएं भी आवेंगी जो तुम से भी तीखी जावेंगी। बडी फर्स्ट क्लास गीत गाने, भाषण करने लग पडेंगी। ऐसे फर्स्ट क्लास गीत बनावेंगी जो सुनते ही खुशी का पारा चढ जाए। ऐसे गिरे हुए को तुम समझाकर उठाओ तब तुम्हारा नाम भी बहुत उंचा होगा। कहेंगी यह तो वेश्याओं को भी इतना उंच बनाते हैं। खुद ही कहेंगे हम तो शूद्र थे। अभी ब्राह्मण बने हैं फिर हम सो देवता, क्षत्रिय बनेंगे।......वेश्याएं भी पुरुषार्थ कर माला का दाना बन सकती हैं। क्योंकि बहुत दुःखी हैं ना। बहुत जोर से पुरुषार्थ करने लग पडेंगी। आगे चल यह सब देखते हो। —मुरली 31.1.74 पृ.1

ifo=rk& cPPkksa ds lanHkZ esa

बच्चे तो होते ही शुभ हैं। बाबा भी कहते हैं—बच्चे तो फूल हैं। उनमें विकार की दृष्टि नहीं होती। जब बडे होते हैं तब दृष्टि जाती है। इसलिए बालक और महात्मा को समान कहते हैं। बल्कि महात्मा से भी उंच है। महात्मा को फिर भी मालूम है—हम भ्रष्टाचार से पैदा हुआ हूं , छोटे बच्चे को यह मालूम नहीं रहता है। बच्चों को छोटेपन से ही ज्ञान मिलता जाए तो बहुत बच सकते हैं। छोटे बच्चे अबुझ होते हैं। परन्तु फिर बाहर स्कूल आदि में संग का रंग लग जाता है। संग तारे कुसंग बोरे। —मुरली 6.9.84 पृ.3

मूल बात है काम पर जीत पाने से ही जगत जीत बनेंगे। यह तो बच्चों पर रहा। जवानों को बहुत मेहनत करनी पडती है। बुढियों को कम। वानप्रस्थ अवस्था वालों को और कम। बच्चों को बहुत कम —मु. 6.9.84 पृ.3

ifo=rk& vkfn lks var

वह मात पिता तो देखो विख का वर्सा देते है। देखो गवर्मेन्ट ने भी विख पर केस किया परन्तु वह खुद ही मूंझ जाते है कि क्या करें ? यह तो कहती है हम पवित्र बन भारत को पावन बनाने चाहते है तो हम कैसे कहें कि अपवित्र बनो। हमारे उपर दोष आ जाए। खुद ही मूंझ जाते हैं। कोई भी जज नहीं कहेगा कि तुमको काम कटारी जरुर चलानी है। ऐसी जजमेन्ट कोई दे न सके। अन्दर विवेक खायेगा। ऐसा केस चला था फिर वहां ही छोड़ दिया। बाबा को कलेक्टर आदि ने कहा कि दादा इनको कह दो कि विख देवे। परन्तु बाबा कैसे कहेंगे। परन्तु बाबा कहते थे मोह की रग न रहनी चाहिए। —मुरली 22.6.73

लोक लाज कुल की मर्यादा में भी बहुत फंसे रहते हैं। कहते हैं बाबा क्या करे, सब फट लेहनत डालते हैं कि बच्ची को घर में बिठा दिया है। इनको निकालो। अरे बेहद का बाप कहते हैं—गटर में न

डालो। बाबा ने इनमें प्रवेश कर सब कुछ इनसे कराया ना। कोई की भी परवाह नहीं की। कितनी गालियां आदि खाई। न मन न चित। रास्ते चलते ब्राहमण फंस गया। बाबा ने ब्राह्मण बनाया तो गाली खाने लग पड़े। सारी पंचायत थी एक तरफ, दादा दूसरी तरफ। सारी सिंध की पंचायत कहे कि यह क्या करते हो। अरे गीता में भगवानुवाच है ना–काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से विश्व के मालिक बनोगे। यह तो गीता के अक्षर है।–मु 8.8.75,पृ.3

शुरु में बाबा बहुत कड़ी वाणी चलाते थे। डाग इन दा मेन्जर। ऐसे ऐसे अक्षर कहते थे। ना खुद अमृत पीते हो ना औरों को पीने देते हो। बड़े बड़े आदमी आते थे। बाबा की बड़ी जोर से वाणी चलती थी। विख ना मिलने से बड़ा हंगामा कर दिया। कोर्ट में बाबा को कहने लगे– उनको कहो तुम विख दो। अरे हम तो भगवान के महावाक्य सुनाते हैं– काम महाशत्रु है। पावन बनना है। यह तो गीता के वचन हैं। मैं क्या कहूं, बोले नहीं तुम कहो– अच्छा कह देता हूं। दिल में समझता था बच्चियां भी समझती है। बोलने से थोड़ेई मान जावेगी। राज्य करने लिए युक्ति रचनी पड़े।–मुरली 21.4.69, पृ.4

आगे चल कर जिन्होने गफलत में आकर शादी आदि की है वह भी आते रहेंगे जो अभी मारते हैं उन्हों से ही खुशी से छुट्टी लेकर आवेंगे। इसमें भी बल चाहिए। –मुरली 25.4.69, पृ.3

देखो शुरु शुरु में जब तपस्या के बाद सेवा पर निकले तो आप सबको किस रुप में देखते थे? देवियां समझते थे ना। उन्हों को साधारण स्वरुप दिखाई नहीं देता था, देवी रुप दिखाई देता था। देवियां आई हैं, कुमारियां नहीं। –मुरली 6.4.95

आदि स्थापना से लेकर अब तक पवित्रता पर ही विघ्न पड़ते आये हैं क्योंकि पवित्रता का फाउन्डेशन 21 जन्मों का फाउन्डेशन है।और ऐसे टाइम पर आदि में जब ब्रह्मा बाप निमित्त बने तो गाली किस बात के कारण खाई ? पवित्रता के कारण ना। नहीं तो कोई बडे आयु वाले की भी हिम्मत नहीं थी जो ब्रहमा बाप के पास्ट लाइफ में भी कोई अंगुली उठाए। और इस परमात्मा ज्ञान की नवीनता पवित्रता है।–अ.वा.16.11.95.पृ.24

बिरादरी से निकालने में भी देर नहीं करते। शुरु से लेकर यह झगडा चलता आया है। शुरु में भी उन्हों को कहा गया था कि छुट्टी ले आओ कि हम ज्ञान अमृत पीने जाती हैं। सभी ने फट से चिट्ठी लिखकर दे दी। ....जहां तहां इसी पर झगडा होता आया है। समझते हैं यहां जाने से मूत पीना बन्द हो जाता है–मु.6.4.69 पृ.1

विलायत तक यह आवाज गया था कि इनको 16108 रानियां चाहिए, उनसे 400 मिल गई हैं, क्योंकि उस समय सत्संग में 400 आते थे। फिर वहां पहले पहले जादू लगा मेहतरानी को, हाहाकार मच गया। मेहतरानी को भी जादू लग गया। –मुरली 2.9.89

बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। इसी बात पर ही मुसीबत आती है। कहते थे यह स्त्री पुरुष के बीच में झगडा डालनेवाला ज्ञान है क्योंकि एक पवित्र बने, दूसरा न बने तो मारामारी चल पडे। इन सबने मार खाई हैं। क्योंकि अचानक नई बात हुई ना। सब आश्चर्य खाने लगा, यह क्या हुआ जो इतने सब भागते हैं। मनुष्यों में समझ तो नहीं है। इतना कहते थे, कोई ताकत है।......आगे कोई सत्संग आदि में जाने के लिए रुकावट थोडे ही होती थी। कहां भी चले जाते थे। यहां पवित्रता के कारण विघ्न पडते हैं। –मुरली 20.9.89पृ.3

ifo=rk& dl \

किसी भी प्रकार का दृढ संकल्प रूपी व्रत लेना अर्थात् अपनी वृत्ति को परिवर्तन करना। दृढ व्रत वृत्ति को बदल देता है। इसलिए ही भक्ति में व्रत लेते भी हैं और व्रत रखते भी हैं। व्रत लेना अर्थात मन में संकल्प करना और व्रत रखना अर्थात स्थूलरीति से परहेज करना। चाहे खानपान की, चाहे चालचलन की, लेकिन दोनों का लक्ष्य व्रत द्वारा वृत्ति को बदलने का है। आप सभी ने भी पवित्रता का व्रत लिया और वृत्ति श्रेष्ठ बनाई। सर्व आत्माओं के प्रति क्या वृत्ति बनाई? आत्मा भाई भाई है, ब्रदरहुड– इस वृत्ति से ही ब्राह्मण महान आत्मा बने। यह व्रत तो सभी का पक्का है ना? –अ. वा. 23.12.93

प्यूरिटी की परिभाषा तुम बच्चों के लिए अति साधारण है– क्योंकि स्मृति आई कि वास्तविक आत्म स्वरुप है ही सदा प्योर। अनादि स्वरुप भी पवित्र आत्मा है और आदि स्वरुप भी पवित्र देवता है और अब का अन्तिम जन्म भी पवित्र ब्राहमण जीवन है– इस स्मृति के आधार पर पवित्र जीवन बनाना अति सहज अनुभव करते हो। –अ. वा. 14.1.79 पृ.513

हम सब एक बाप की सन्तान रुहानी भाई है–यह अलौकिक दृष्टि की स्मृति रहने से देहधारी दृष्टि अर्थात लौकिक दृष्टि जिसके आधार से विकारों की उत्पत्ति होती है वह बीज ही सम्पन्न हो जाता है। जब बीज समाप्त हो गया तो फिर अनेक प्रकार के विस्तार रुपी वृक्ष विकारों का स्वतः ही समाप्त हो जाता है। –6.77 पृ.213

तो हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है, शक्ति भी शिव की है। किसी भी शरीरधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो। नजर ही मस्तकमणि पर जानी चाहिए। तो क्या होगा? आत्मा–आत्मा को देखते स्वतः ही आत्म अभिमानी बन जायेंगे।–अ. वा. 27.4.83 पृ.167

दिव्य नेत्र से देखते हो वा इस चमडी के नेत्र से देखते हो? दिव्य नेत्र से सदा स्वतः ही दिव्य स्वरुप ही दिखाई देगा। चमडे की आंखे चमडे को देखती। चमडी को देखना, चमडी को सोचना–यह किसका काम है? –अ. वा. 27.4.83 पृ.166

पावन बनने की विशेषता, विशेष युक्ति क्या बताई, एक के याद से, एक के संसर्ग से, सम्पर्क से क्या होगी? प्यूरिटी आयेगी। और अनेकों के संसर्ग, सम्पर्क में आने से क्या हुआ? आत्मा में इम्प्यूरिटी आ गई।–कैसेट.375

जिन अनेकों के साथ हमने व्यभिचारी योग किया उसने तो हमको नीचे गिरा दिया, तो अब उपर चढने के लिए क्या करें? अव्यभिचारी योग– वो भी किसके साथ? उस सुप्रीम सोल ज्योतिर्बिन्दु जिस साकार तन में आ करके पार्ट बजा रहे है– उसके साथ सर्व सम्बन्ध जोडते हुए सहज याद की स्टेज पर हम पहुंच सकते। –कैसेट 44

ifo=rk vkj cPPk ink djuk

मनुष्य तो यह भी नहीं जानते कि सतयुग में विकार बिगर बच्चे कैसे पैदा होते होंगे। कई लोग कहेंगे वहां विकार होता जरुर है परन्तु इतना नहीं। जैसे यहां भी सन्यासी, गुरु लोग समझाते हैं–वर्षो में एक बार वा मास में एक बार बिकार में जाओ। परन्तु बाप तो फट से कहते हैं–यह काम महाशत्रु

है। उन पर जीत पानी है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। वहां तो रावण ही नहीं होता तो विकार की बात ही नहीं। सिक्ख लोग भी कहते हैं हराम खोर। मूत पलीती है ना। यह भार खाना है।–मु.9.4.72 पृ.1

वह तो जो रसम होगी वैसे होंगे। बच्चे तो जरुर पैदा होते परन्तु वह तो है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। समझो योगबल से पैदा होते हैं। पहले साक्षात्कार होता है। मुख का प्यार होता है। इसलिए कहा जाता है मुख बंशावली। यह बडी गुहय बातें हैं। नए को इन बातों में नहीं लाना है।
–मुरली 28.11.73 पृ.2

इस समय विचार किया जाता है सब भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। तो तुम बच्चों से पूछते हैं वहां जन्म कैसे लेंगे? बोलो वहां 5 विकार होते ही नहीं। वहां है ही योगबल। योगबल से सारे विश्व को पवित्र बना सकते हो, योगबल से तुम विश्व का मालिक बन सकते हो तो बच्चे क्यों नहीं होंगे। वह पहले ही साक्षात्कार होता है कि अब बच्चा आनेवाला है। नंगन होने की बात ही नहीं रहती। नंगन होनेवाले को तो दुशासन, द्रौपदी कहा जाता है। इस समय दोनों पुकारते हैं। वह कहते हैं बाबा दुशासन हमें नंगा करते हैं, वह कहते हैं बाबा यह द्रौपदी नंगन करती हैं। ऐसे भी ढेर केस हैं। दोनों रिपोर्ट लिखते हैं। इस समय ही पुकारते हैं क्योंकि संगमयुग है। सभी तो पवित्र नहीं बनते। –मुरली 14.1.71 पृ.3

इन ल0 ना0 को तो मूत पलीती नहीं कहेंगे ना। इन्हों को कहते ही हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। बच्चे तो पैदा होंगे ना। ऐसे तो नहीं कोई डब से पैदा होंगे। –मुरली 5.7.75

देवताओं की कब विकार की दृष्टि नहीं हो सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि ही बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोडे ही प्यार नहीं करेंगे? डान्स करेंगे, भाकी आदि पहनेंगे। प्यार करेंगे, परन्तु विकार की बांस नहीं। जन्म जन्मान्तर विकार में गए हैं तो वह नशा बहुत मुश्किल उतरता है। –मुरली 27.6. 74सतयुग में कोई नंगन होता नहीं। .....विकार बिल्कुल नहीं। बच्चा तो जहां से पैदा होना होगा वहां से पैदा होगा। आत्मा आकर प्रवेश करती है तो उसी समय गर्भ में बिल्कुल प्योर रहती है। –मुरली 13.4.73 पृ.6

योगबल से जबकि विश्व के मालिक बन सकते हो तो योगबल से बच्चे क्यों नहीं पैदा हो सकते हैं? साक्षात्कार होगा अब बच्चा होनेवाला है। –मुरली 20.8.89 पृ.20

मनुष्य समझते हैं कि देवतायें भी तो बच्चे पैदा करते हैं। वह समझते हैं विष से बच्चा पैदा करते हैं।.....देवतायें होते हैं श्रेष्ठ इन्द्रिय से आचरण करने वाले। तो विष कहां से आयेगा? ..... विकारियों की कोई पूजा होती है क्या? विकारियों के मंदिर बनते है क्या? आज के जो बडे बडे नेताएं है उनके मंदिर बनाए जाते हैं क्या? ऐसे ही सडक पर रख देते है मूर्ति बनाय के, पूजा थोडेई कोई करता है? –कैसेट–168

अगर स्त्री और पुरुष का रज, वीर्य का पतन होना बन्द हो जाए तो उनको पतित कहेंगे? नहीं कहेंगे। क्योंकि उस समय जो शक्ति है वह उपर उठने लग पडेगी मस्तिष्क में। जो कार्य भ्रष्ट इन्द्रिय से होता था प्रजनन का, सन्तान उत्पन्न करने का, वह कार्य श्रेष्ठ इन्द्रिय से, मुख से, दृष्टि से होगा। इस कार्य में परमपिता परमात्मा का पार्ट सब से आगे जा सकता, इसलिए उसको एवर प्यौर कहा जाता है।–कैसेट–3

ifo=rk vkj ikrkey

बाबा किसको कह न सके तुम फालोवर हो। जब गैरन्टी करे पावन बनने की तब बात। इसमें प्रतिज्ञा करनी पडे। खुद ही लिख भेजते हैं बाबा हम गिर गया। ऐसे नहीं लिखते कि बाबा हम गटर में गिरा, काला मुंह कर दिया। यह लिखने में लज्जा आती है। यह तो बडी भारी चोट है। फिर बाप साथ बुद्धियोग लगा न सके। पतित पर तो हम बहुत नफरत करते हैं। पतित माना भिलनी। वह भार उठाते भी हैं, खाते भी हैं। विश्व भार है ना। यह फिर भार खाते हैं। बाप कहते हैं भार खानेवाले बहुत खराब हैं। –मुरली 28.11.71 पृ.2

गैरन्टी की जाती है हम विकारों में नहीं जावेंगे। यह है सभी से पुराना दुश्मन। इन पर ही जीत पानी है। कोई कोई तो लिखते हैं बाबा हमने हार खाई। कोई तो बतलाते भी नहीं। एक तो नाम बदनाम करते हैं, सदगुरु की निन्दा कराते हैं, तो वह अपनी ही नुकसान करते हैं। बिमारी रह जाती है फिर वृद्धि को पाती जावेगी। बाप बच्चों को सम्मुख बैठ सावधान करते हैं। –मुरली 7.6.72 पृ.2

इसमें पवित्रता में फेल होते हैं। तब कहते हैं बाबा आज हमसे यह हो गया। बहुत गिरते हैं। भाकी भी पहन लेते हैं। फिर कोई सच लिखते हैं हमसे यह भूल हुई। कोई सच नहीं बतलाते हैं। –मुरली 29.11.74 पृ.3

इसलिए बाबा कहते अपनी जन्मपत्री बताओ। बाप को सुनावेंगे नहीं तो वह बृद्धि हो जावेगी। बाप को सुनाने से कुछ थम जावेगी। सच बताना चाहिए। नहीं तो बिल्कुल महारोगी बन जावेंगे। –मुरली 16.7.74 पृ.3

शुरु में भी तुम बच्चों की कचहरी होती थी। बच्चे सच सच बताते थे। बाप समझाते रहते हैं अगर सच न बताया तो वो भूलें वृद्धि को पाती रहेगी। –मुरली 24.4.69 पृ.1

अगर अब भी बाप से छुपावेंगे व अपने को सच्चा सिद्ध कर चलाने की कशिश करेंगे तो अभी चलाना अर्थात अन्त में और अब भी अपने मन में चिल्लाते रहेंगे, क्या करुं, खुशी नहीं होती, सफलता नहीं होती – अ.वा. 24.10.75

बापदादा ने सर्व बच्चों के रजिस्टर चैक किये। जिन्होंने अपनी कर्म कहानी लिखी उनकी रिजल्ट भी देखी। तो क्या देखा, कई आत्माओं ने भय और लज्जा के वश लिखा ही नहीं हैं। लेकिन बापदादा के पास निराकारी और साकारी बाप के रुप में हर बच्चे का रजिस्टर आदि से आज तक का स्पष्ट है। .....अब तक मैजारिटी बच्चे पहला पाठ अर्थात पहली बात पवित्र दृष्टि और भाई भाई की वृत्ति में फेल हैं। अब तक हम पहले फरमान पर चलनेवाले फरमान बरदार बहुत थोडे हैं। बार बार इस फरमान का उल्लंघन करने के कारण अपने उपर बोझ उठाते रहते हैं। इसका कारण यह हैं कि पवित्रता की मुख्य सबजेक्ट का महत्व नहीं जानते हैं। उसके नुकसान की नालेज को नहीं जानतें। –अ.वा. 24.10.75

बाबा हमेशा कहते हैं अपनी जीवन कहानी बाबा को लिख भेजो। कोई तो बिल्कुल हैं, कोई छिपाते भी है। लज्जा आती है, यह तो जानते हैं बुरा कर्म करने से उनका फल भी बुरा मिलेगा।–मुरली 16.4.75

कोई बच्चा बाहर में किसके खराब संग में आ जाता हैं। बाप को मालूम पडेगा तो बाबा झट कहेंगे कामी कुत्ता नेहलत है। बेहद का बाप भी लिख देते हैं। कोई विकार में जाते हैं और बाबा को

नहीं बताते हैं तो अपना ही नुकसान करते हैं। न बताने से उस बीमारी की वृद्धि होती रहेगी, गिरता रहेगा। बाबा को समाचार लिखते हैं तो लिखता हूं–तुम तो कुल कलंकित बन गए विकार में जाने कारण, अपने को देवता कह न सकें। अपने को ही चमाट लगाई। –मुरली 19.1.74

अपनी सम्भाल रखनी है। बेहद के बाप को भी सच नहीं बताते हैं। कदम कदम पर भूल होती रहती हैं। थोडा भी उस क्रिमिनल दृष्टि से देखा, भूल हूई, फौरन नोट करो। 10–20 भूलें तो रोज करते ही होंगे। जब तक अभूल बनें। परन्तु सच कोई बताते थोडे ही हैं। –मुरली 23.7.89 पृ.2

इसलिए चार्ट में यह भी लिखना चाहिए, आज सारे दिन में कौन कौनसी कर्मेन्द्रियों ने हमको धोखा दिया। सभी से ज्यास्ती दुश्मन है यह आंखे। तो यह लिखना चाहिए फलानी को देखा, हमारी दृष्टि गईं, दिल हुई हाथ लगाएं। ....जो समझू बच्चे हैं उनको अपने पास डायरी में नोट करना चाहिए, फलानी को देखा तो हमारी दृष्टि गई। फिर अपन को आप ही सजा दो। भक्ति मार्ग में भी पूजा के टाईम बुद्धि और तरफ भागती है तो अपने को चुटकी पहनते हैं। –मुरली 20.5.71 पु.1

तो बाप कहते हैं बच्चे जो भी पाप कर्म किये हो, मैं अविनाशी वैद हूं सर्जन को सुनाने से तुम हल्के हो जावेंगे। –मुरली 14.1.71 पृ.3

फलाने की क्रिमिनल आइज अभी तक गई नहीं है। अभी गुप्त समाचार आते हैं। आगे चल और भी एक्युरेट लिखेंगे। खुद भी फील करेंगे हम तो इतना समय झूठ बोलते, गिरते आये हैं। ज्ञान पूरा बुद्धि में बैठा नहीं था। यही कारण था जो हमारी अवस्था नहीं बनी। बाप से हम छिपाते थे। –मुरली 26.7.89

ऐसा कर्म करे जो विकर्म न बनें। विकर्म करने से दिल खाती जरुर है। बाबा को आकर सुनाते भी हैं उसमें भी मुख्य बात बाबा पूछते हैं विकारी काम किया है? नंगन हुए हो तो वह बताओ क्योंकि काम महाशत्रु है ना। –मुरली 9.12.90

ifo=rk l: lEcf/kr QVdj lokbUV l

बाप आते भी मगध देश में हैं, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है, खानपान भी बहुत गन्दा है। –मुरली 5.9.89 पृ.2

बाप समझाते हैं राधे कृष्ण दोनों गोरे थे। फिर काम चिता पर बैठ सांवरे हुए। एक गोरा एक सांवरा तो हो न सके। कृष्ण को श्यामसुन्दर कहते हैं फिर राधे को श्यामसुन्दरी क्यों नहीं कहते? यह फर्क क्यों रखा है? जोडा तो एक जैसा होना चाहिए। –मुरली 1.5.72 पृ.2

भगवान देते हैं स्वर्ग की बादशाही परन्तु पवित्र बनना पडे। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी पवित्र रह दिखावे। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम अपवित्र बने हो, अब एक जन्म तो पवित्र बनना है। गाया जाता है कोटों में कोउ। बाप की भल सुनते हैं फिर कहां संगदोष में फंस पडते हैं। भारत निर्विकारी था तो हीरे जैसा बहुत सुखी था। यह है ही बिच्छुटिण्डन, सर्पसर्पिनी की दुनिया। –मुरली 24.5.72

कोई चोरी करता है, झूठ बोलता है वा कोई भी विकार वश होता है जिसको अपवित्रता के स्वरुप वा कर्म कहा जाता है वह अकेलेपन में ही होता है। अगर सदा अपने को बाप के साथ साथ अनुभव करो तो फिर यह कर्म होंगे ही नहीं। –अ. वा.

कृष्ण गोरा था फिर काला कैसे हुआ यह कोई जानते नहीं, कहते हैं सर्प ने डसा। वास्तव में है यह पांच विकारों की बात। काम चिता पर बैठने से काले बन जाते हैं। —मुरली 4.6.72 पृ.1

पवित्र बनना तो अच्छा है ना। बच्चे भी नहीं पैदा होंगे। मैं आकर पवित्रता का कांट्रेक्ट उठाता हूं। 5 वर्ष के अन्दर हम पवित्र दुनिया बनाकर दिखाएंगे। कल्प कल्प हम कन्ट्रेक्टर को ही बुलाते हैं कि हे पतित पावन आओ। दूसरा कोई ऐसा कांट्रेक्टर होता नहीं। साधु संत आदि कोई कुछ कह न सके। यह एक ही कंट्रेक्टर मिला हुआ है। मैं ही पावन दुनिया बनाउंगा। कल्प कल्प आकर मैं अपना भी कांट्रेक्ट पूरा करता हूं। ....सन्यासियों को फिर कांट्रेक्ट मिला हुआ है भारत को थमाने का। —मुरली 28.11.71 पृ.2

मनुष्य तीर्थों पर जाते हैं पाप काटने, समझते हैं गंगा पतित पावनी है। अच्छा फिर अमरनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम आदि में क्यों जाते हो? —मुरली 22.6.73 पृ.1

बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर न चलकर पतित बनते हो तो सौगुना दण्ड पड जाता है। मेरी निन्दा कराते हैं ना। बगुलो की तरफ गए,वह तो खुश होंगे। तो ऐसे पर फिर दण्ड बहुत पड जाता। चण्डाल का जन्म, वह भी चाहिए ना। —मुरली 30.4.74 पृ.2

बाबा से पूछ सकते हो। कई पूछते भी हैं बाबा हमारे बच्चे की दिल लग गई है अब क्या करें। चाहते हैं लव मैरेज करने। बाप कहते हैं ऐसा है तो तुमको खर्चा करने की दरकार नहीं है। उनका लव मैरेज है तुम क्यों खर्चा करते हो। एक साडी में भी दे देते हैं। वह जाने आपस में। इस हालत में उनकी दवादर्मल कुछ नहीं है। उनसे छूटना मुश्किल है। फिर झगडे भी घर में बहुत हो पडते हैं। हर हालत में झगडा। विकार के लिए झगडा। —मुरली 30.4.74 पृ.3

साहूकारों का आवाज अच्छा होता है। समझेंगे पवित्रता तो अच्छी है। यह समझना है पवित्रता से कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं। और फिर मनुष्य सृष्टि भी बढेगी नहीं। मुठ्ठी भर हो जावेगी। अखवार वाले भी डालेंगे कि यहां यह समझाया गया। यह विनाश ही पीस का निमित्त कारण है।—मुरली 29.11.74 पृ. 2

अब कहते महात्मा गांधी, वास्तव में उनको महात्मा तो कहना न चाहिए। जो खुद ही पुकारते हैं पतित पावन आकर पावन बनाओ फिर उनको महात्मा कैसे कहेंगे? पतित को फिर माथा थोडई टेका जाता। माथा पावन के आगे झुकाया जाता है। —मुरली 14.07.74 पृ.3

यह पढाई तो 21 जन्मों के लिए हैं—परन्तु गटर में गिरने से घाटा बहुत बहुत पड जाता है। वह फिर कल्प कल्पान्तर का घाटा पडता जावेगा। बाप कहते हैं काला मुंह न करो। फिर भी तुम काला मुंह कर देते हो। ऐसे बहुत हैं जो काला मुंह कर फिर छुप छुप कर बैठ जाते हैं। उनको कब भी हजम नहीं होगा। बदहाजमा हो जाता है। जो सुनेंगे वह बदहाजमा हो जावेगा। मुख से किसको कह न सकें। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। उन पर जीत पानी है। खुद ही जीत नहीं पाते तो ओरों को कैसे कहेंगे, अन्दर खावेंगे ना। उनको कहा जाता है आसुरी सम्प्रदाय। अमृत पीते फिर विख खा लेते। तो सौगुना काले हो जाते हैं। हडमुड ही टूट जाती है। तुम माताओं का संगठन बहुत अच्छा होना चाहिए। —मुरली 7.9.75 पृ.1

पुरी में चित्र दिखाए हैं ड्रेस देवताओं की और फिर चित्र बहुत गन्दे लगे पडे हैं। नीचे पवित्र फिर उपर में दिखाते हैं देवताएं कैसे वाममार्ग में गिरे। कब गिरे यह नहीं जानते।–मुरली 17.4.69 पृ.3

अभी यह राज भी किसको बताना चाहिए जो फैमिली प्लैनिंग मिनिस्टर्स होते हैं उन्हों को समझाना चाहिए। बोलो फैमिली प्लानिंग की डयूटी तो गीता के कैनन अनुसार बापकी ही है। गीता को सब मानते ही हैं। गीता है फैमिली प्लैनिंग का शास्त्र। गीता से ही बाप बैठ नई दुनिया स्थापन करते हैं–मुरली 21.4.69 पृ.1

जैसे वह पादरी लोग क्राइस्ट को याद करते हैं, तुम भी पादरी हो। पवित्र हो ना। सफेद पोश भी हो। –मुरली 30.4.89 पृ.3

शास्त्रों में दिखाया है सबके विकार ले लेकर शंकर का गला ही काला हो गया।–मु.4.9.84 पृ.3

कृष्ण को ही श्यामसुन्दर कहते हैं। ऐसे नहीं कि कोई तक्षक सर्प ने डसा तब काला हुआ। यह तो काम चिता पर मनुष्य काला होता है। राम को भी काला दिखाते हैं। उनको भला किसने डसा? –मुरली 14.8.91

भारत स्वर्गवासी था। कृष्णपुरी में था। अभी नर्कवासी है। तो तुम बच्चों को तो बडी खुशी से विकारों को छोडना चाहिए। मूत पीना फट से छोडना है। मूत पीते पीते तुम वैकुण्ठ में थोडेई जा सकते हो। –मुरली 9.11.74 पृ.2

यह भी पतित था। सारी आयु 60 वर्ष पूरा पतित रहा। –मुरली14.1.71 पृ.3

खुद पवित्र रहते नहीं। दूसरे को कहते तो वह पण्डित हो गया। –मुरली 2.9.84 पृ.1

देवताओं का कैरेक्टर्स कैसे बिगडता है? जब वाममार्ग में जाते हैं अर्थात् विकारी बनते हैं। जगन्नाथ के मंदिर में ऐसे चित्र दिखाये हैं वाममार्ग के।.....काम चिता पर चढते हैं फिर रंग बदलते बदलते बिल्कुल काले हो जाते हैं। फट से काले नहीं होते हैं। –मुरली 5.8.84 पृ.1

मुझे तुम निमन्त्रण देते हो कि इस पतित रावण की दुनिया में आओ।......आएंगी भी जरुर गृहस्थ मार्ग में। –मुरली–3.8.84

तो दूसरी आत्मायें, भले पवित्र आत्माएं उपर से आते हैं लेकिन उनमें इतनी प्युरिटी नहीं है कि वो सारी दुनिया का पाप का ध्वंस कर सके, पापियों का ध्वंस कर सके, अधर्म का विनाश कर सके। एक एवर प्यूर परमात्मा सुप्रीम सोल ज्योतिर्बिन्दु ही है जो साकार तन में आ करके प्रेक्टिकल ऐसी एक्ट करके दिखाते है– जो प्रेक्टिकल एक्ट की यादगार मंदिरों में बनी हुई है। – कैसेट 44

सबसे बडा पाप है एक दो को विष पिलाना, पतित बनाना। विष किसको कहा जाता है? पराई स्त्री को या परपुरुष का सेवन करना – दुनिया में उसको विष कहते हैं। इसके अलावा भी जो भ्रष्ठ इन्द्रिय से कर्म होता है और निस्तेज स्थिति बन जाती है, शक्ति क्षीण हो जाती है। लेकिन यदि अमोघ वीर्य है तो उस स्टेज को विष पिलाना कहेंगे? मूत पीना और पिलाना कहेंगे? शंकर को किस रुप में याद किया जाता है?–अमोघ वीर्य के रुप में याद किया जाता है। तो जो अमोघ वीर्य रुप में याद जिसको किया जाता है उसको विष पिलाने के लिए यूज कर सकते है? स्थिति उंची बनी हुई है, वह

सामान्य स्थिति औरों के नहीं हो सकती। इसलिए उस पार्टधारी के रुप में उसको कहा है–एवर प्योर। –कैसेट 361

शिव का जो यादगार मंदिरों में दिखाया जाता है जलाधारी के साथ, माता के रुप के साथ, वह अगर पतित रुप में होता तो उसकी पूजा कभी हो नहीं सकती। उसको अश्लील समझ करके मंदिरों में से निकाल करके बाहर कर दिया जाता। कोनार्क मंदिर, सूर्य मंदिर और जगन्नाथ के मंदिर में जो अश्लील चित्र दिखाए हैं, अगर वह पतित होते तो उनको निकाल करके बाहर कर दिया जाता। कोई की ताकत है जो उन चित्रों को बाहर निकाल करके फेंक सके। वह सिर्फ पतित मनुष्यों को वह पतित रुप देखने में आता है लेकिन वास्तव में वह भ्रश्ठ रुप में हैं नहीं। हां यह जरुर है कि जब तक वह सम्पन्न स्थिति नहीं हुई है तब तक वह रुप मंदिर के बाहर दिखाया गया है। कहां दिखाया गया ? मंदिर के बाहर। माना स्वर्ग रुपी मंदिर जब स्थापन हो जायेगा। तो वह सम्पन्न रुप है और पुरुषार्थी रुप जब तक है तब तक वह बाहर के रुप में दिखाया गया है। –कैसेट–362

पूजा का आधार ही है प्यूरिटी। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला कि जिन जिन कर्मेन्द्रिय से कार्य करते हुए याद में रहकर कर्म किया है वह इन्द्रियां पूजी जाती है। तो शिव का और कोई स्वरुप नहीं पूजा जाता। उसका कौनसा रुप पूजा जाता? उसका सिर्फ गायन है–शिवलिंग।........विकारी कहा जाता है पतित को। पतित अर्थात जिसकी मन बुद्धि और शरीर की शक्ति नीचे गिरे। स्त्री और पुरुष की रज और वीर्य की शक्ति है। वह शक्ति अगर नीचे जाती है तो पतित कहेंगे।–कैसेट–102

वह तो एक ही पार्वती निकलेगी जिसकी बुद्धि उस दुनिया के किसी मनुष्य के अंदर न टिके, जिसकी बुद्धि किसी भी मनुष्य के पीछे डोलायमान न हो। उस पार्वती का गायन तो सम्पूर्ण है (100%) बाकी सब परसेंटेज में चली जाती है, माना जो 21 जन्मों की साथी होगी प्रजापिता के साथ उसकी बुद्धि तो संग के रंग में आते हुए भी, कर्मेन्द्रियों के साथ संग करते हुए भी बुद्धि डोलायमान नहीं होगी और बाकी सब की कुछ न कुछ डोलायमान जरुर होगी। क्यों? क्योंकि सतयुग में जो अवस्थाएं होनी है वह क्या होगी, हर आत्मा को 21 जन्मों की साथी मिलेगी। मैं 21 जन्म का पूरा साथ देता हूं। –कैसेट–47

शास्त्र में भी दिखा दिया कि शंकरजी ने कामदेव को भस्म कर दिया फिर रती की प्रार्थना पर काम देव की पत्नी की प्रार्थना पर उसको जीवित भी कर दिया। और कह दिया कि वो अनंग हो करके रहेगा। या अंग के बिना हो करके रहेगा। ऐसे नहीं कि काम नहीं होगा सतयुग में। काम तो होगा लेकिन काम विकार का जो अंग है मार करने वाला, वह अंग, उसकी अनुभूति नहीं होगी, जैसे कि अंग होगा ही नहीं। .... कहने का मतलब क्या हुआ? ऐसे नहीं कि सतयुग में वह काम विकार होता ही नहीं या काम विकार को धारण करने वाले वह मनुष्य होते ही नहीं। होते तो है लेकिन वह अपनी कामी कुत्ते की वृत्ति को छोड करके अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को गला करके, देह अभिमान गला करके फिर रहते, यानि वासना उनकी मर्ज हो जाती है। –कैसेट–33

याद में रह करके जो कर्म किया जाता है वह इन्द्रियां पूजी जाती हैं देवताओं की । और शिवबाबा का कौनसा स्वरुप पूजा जाता है?–लिंग रुप।......इससे साबित हुआ कि संग का रंग परमात्मा बाप ने इस सृष्टि पर साकार में आकर लगाया है। –कैसेट–153

जगन्नाथ के मंदिरों में जो गन्दे चित्र लोग समझते हैं वह चित्र पूजे क्यों जाते है? जरुर देखने वालों की आंखे पवित्र नहीं है। इसलिए समझते हैं कि यह अपवित्र है। इनको भी भ्रष्ट इन्द्रिय से शक्ति क्षीण होती है। लेकिन ऐसी बात नहीं। वह देवताए तो दिखाई गए है ऐसी स्टेज में कि भले

सम्पर्क सम्बन्ध में है लेकिन मन बुद्धि की स्टेज स्थिर बनी हुई है कि इन्द्रिय अपना वार ऐसा नहीं करते है जिससे निस्तेज हो जाए, शक्ति का पात हो जाए, पतित हो जाए। वह उर्धरेता होता है। इसलिए उनकी पूजा होती है। आज की भारत की भ्रष्टाचारी गवर्मेन्ट में यह ताकत है कि अश्लील चित्र को निकाल करके बाहर करे?ताकत नहीं है। जब ताकत ही नहीं है तो फिर अंगुली उठाना क्यों? –कैसेट– 168

बाप से सर्व सम्बन्ध है लेकिन हरेक सम्बन्ध को अनुभूति व प्राप्ति में मगन रहो तो पुरानी दुनिया के वातावरण में सहज ही उपराम रह सकते हो। हर कार्य के समय भिन्न भिन्न सम्बन्ध का अनुभव कर सकते हो और उसी सम्बन्ध के सहयोग से निरन्तर योग का अनुभव कर सकते हो।–अ. 5.12.79 पृ.65

आत्मा नारी है, अब परमात्मा पुरुष है। आत्मा कहती है। आत्मा कहता है–ऐसे नहीं कहा जाता। कुछ भी बन जाओ लेकिन नारी तो हो। परमात्मा के आगे आत्मा नारी है। आशिक नहीं हो, सर्व सम्बन्ध एक बाप से निभानेवाले हो? यह तो वायदा है ना। –अ. 21.3.83 पृ.96

सर्व समर्पण किसको कहा जाता है। सर्व में देह देह के भान भी आता है। देह ले लेंगे तो देनी भी पडेगी। लेकिन देह का भान तोडकर समर्पण बनना है।–अ. 25.1.69

&% vke 'kkfUr %&